संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो प्राय: ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुट से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्राय: कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबिला किये और ठीक रीति से शोधे नही छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दो के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है। और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृतान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देखकर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है; जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षायें दी गई हैं। उनका नाम और दाम सूची में छपा है। कुल पुस्तकों की सूची नीचे लिखे पते से मँगाइये।

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

कबीर साहब का
अनुराग सागर

कबीर साहब की मधुर बानी में
वेदान्त मत का वर्णन।

मुद्रक तथा प्रकाशक

बेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद

१९५१

दूसरी बार]

[मूल्य १)

" सूचना "

कबीर साहब का असली अनुरागसागर यही है जिसमें वेदान्त मत का वर्णन है ।

विषय-सूची

सत्यनाम

कबीर साहब का

अनुराग सागर

॥ छंद ॥

प्रथम वन्दौं गुरुचरन जिन्ह अगम गम्य लखाइया।
ज्ञानदीप परकास करि पट खोलि दरस देखाइया॥
जेहि कारने सिध्या पचे सो गुरु किरपा ते पाइया।
अकह मूरति अमिय मूरति ताहि जाय समाइया॥ १॥
सोरठा—कृपासिंधु गुरु देव दीनदयाल किरपायतन।
विरले पायो भेव जिन्ह चीन्हो परगट तहाँ॥ १॥

॥ छंद ॥

कोई बूझिहैं जन जौहरी जो सब्द को पारख करै।
चितलाय सुनइ सिखावनो हितलाय हिरदय गिरिधरै॥
तम मोह मोमन ज्ञान रवि जहँ प्रगट ह्वै तब सूझई।
कहतहौं अब सब्द सांचा संत कोई बूझई॥ २॥
सोरठा—कोइ यक संत सुजान सोभम सब्द विचारिहैं।
पावै पद निर्बान बसत जासु अनुराग उर॥ २॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई॥

हे सतगुरु विनवों कर जोरी। इक संसय मेटहु प्रभु मोरी॥
जाके चित अनुराग समाना। ताको कहो कवन सहिदाना॥
अनुरागी कैसे लखि परई। विनु अनुराग जीव नहिं तरई॥

॥ कबीर वचन॥

धर्मदास परखहु चित लाई। अनुरागी लच्छन सुखदाई॥
जैसे मृगा नाद सुनि धावै। मगन होए व्याधा ढिग आवै॥
चित कछु संक न आवै ताही। देत सीस सो नाहिं डराही॥
सुनि सुनि नाद सीस तिन्ह दीन्हा। ऐसो अनुरागी को चीन्हा॥
औ पतंग को जैसो भाऊ। ऐसो अनुरागी उर आऊ॥
ऐसा लच्छन सुन धर्मदासा। ज्ञानी ज्ञान करै परकासा॥

जरति नारि ज्यों मृत पति संगा। तनिको जरत न मोरई अंगा ॥
तजै सुगृह धनधाम सहेली। पिय विरहिनि उठि चलै अकेली ॥
सुतले लोगन्ह आगे कीन्हा। बहुतक मोह ताहि कहँ दीन्हा ॥
बहुतक मोह ताहि सब करई। बालक दुर्बल तेहि बिनु मरई ॥
बालक दुरबल तेहि बिनु मरिहैं। घर भौ सून काहि बिधि करिहैं ॥
बहु सम्पति तोहरे गृह अहई। पलटि चलो गृह सबअस कहई ॥
ताके चित कछु ब्यापै नाहीं। पिय अनुराग बसै हिय माहीं ॥

॥ छंद ॥

बहुत कहि समुझावते नर नाहिं समुझति सोधनी।
नहि काम है धन धाम से कछु मोहिं तौ ऐसी बनी ॥
जग जीवना दिन चार है कोइ नाहिं साथी अंत को।
यह समुझि देखो सखी ताते गहो पद तुम कंत को ॥ ३ ॥
सोरठा—लिये पिया कर माँह जाय सरा ऊपर चढ़ी।
गोद लिये निज नांह राम राम कहते जरी ॥३॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु संत अनुराग की बानी। तुलततु देखि कहे हित जानी ॥
ऐसे जो नामहि लौ लावे। कुल परिवार सबै बिसरावे ॥
सुत नारी का मोह न आनै। जीवन जन्म स्वप्न करि जानै ॥
जग महँ जीवन थोर है भाई। अंत समय कोउ नाहिं सहाई ॥
बहुत पियारि नारि जग माँही। मातु पिताहु जाहि सरि नाहीं ॥
तेहि कारन नर सीस जो देही। अंत काल सो नाहिं सनेही ॥
स्वारथ कहँ वह रोदन करहीं। तुरतहि नैहर को चित धरहीं ॥
सुत परिजन धन स्वप्न सनेही। सत्यनाम गहु निज मति येही ॥
निज तनु सम प्रिय और न आना। सो तनु सग न चलिहि निदाना ॥
अस नहिं कोई देखे भाई। अन्तहु यम सो लेहि छोड़ाई ॥
अहै एक सो कहौं बखानी। जिन अनुराग लिन्ह सो मानी ॥
सतगुरु अहैं छुड़ावन हारा। निस्चय मानहु कहा हमारा ॥
कालहि जीत हंस लै जाहीं। अबि चल देस पुरुष जहँ आहीं ॥
तहाँ जाय सुख होय अपारा। बहुरि न आवै यहि ससारा ॥

॥ छन्द ॥

बिस्वास करु मन वचन को चढु आप संत की राह हो ॥
ज्यों सूर रन में धसै फिर पाछे न चितवै काह हो ॥
संत सुराभाव निरखहु सत सो मगु धारिए ॥
मृतक दसा बिचारि गुरु गामि काल कस्ट बिडारिए ॥ ४ ॥

सोरठा—कोई सूरा जीव सो ऐसी करनी करै ॥
ताहि मिलैगो पीव कहहिं कबीर विचारि कै ॥ ४ ॥

॥ धर्मदास बचन । चौपाई ॥

मृतक जीव प्रभु कहो बुझाई । जाते तनकी तपनि नसाई ॥
किहि विधि होय मृतक जीवन तन । कहहु विलोय नाथ अमृत घन ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास यह कठिन कहानी । गुरु गमिते केहु विरलै जानी ॥
मृतक होए कै खोजहु संता । सब्द विचारि गहो मगु अंता ॥
जैसे भृंगी कीट के पासा । कीटहि गहि गुरु गमि परकासा ॥
अग्र सुसब्द कीट ने माना । वर्न फेरि आपन कै जाना ॥
विरला कीट होय सुखदाई । प्रथम अवाज गहै चित लाई ॥
कोइ दुजे कोइ तीजे जानै । तनमंन रहित सब्द हित मानै ॥
पंखघात तजि महितनु डारै । भृंगी सब्द प्रीति चित धारै ॥
तब लैगो भृंगी निज गेहा । स्वास देइ कीन्हेउ निज देहा ॥
भृंगी सब्द जो कीट न गहई । तौ पुनि कीट असारो रहई ॥
सुन धर्मनि जस कीट को भेवा । यहि मत सिष्य गहैं गुरु देवा ॥

॥ छन्द ॥

भृंगमत दृढ़कै गहै तौ करौं निज सम तोहि हो ।
द्वितिय भाव न चित समाये तौ लहै जन मोहिं हो ॥
गुरु सब्द नियस्च सत्य मानै भृंग गति ते पावई ।
तजि सकल आसा सब्द बासा काल कष्ट निवारई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु संत अब मृतक सुभाऊ । विरला जीव पीव पगुपाऊ ॥
धर्मनि सुनु तुम मृतक सुभावा । मृतक होय सतगुरु पद पावा ॥
मृतक छोह निभाव उर धारो । छोह निभाव गहि जीव उबारो ॥
जस पृथ्वी कै गञ्जनि होई । चित अनुमानि गहो गुन सोई ॥
कोइ चंदन कोइ विष्टा डारै । कोई कोड़ि कृशी अनुसारै ॥
गुन अवगुन तिन्ह सम कै जाना । महा विरोध अधिक सुख माना ॥
अवरो मृतक भाव सुनि लेहू । निरखि परखि दृढ़ मगु पग देहू ॥
जैसे ऊख किसान बनावे । रती रती कै देह कटावे ॥
कोल्हू महँ निज तनुहि पेरावे । रस निसरै पुनि ताहि तपावे ॥
निज तनु दाहै गुड़ पुनि होई । बहुरि ताव दै खाँड़ बिलोई ॥
ताहु माँह ताव पुनि दीन्हा । चीनी तबहि कहावै लीन्हा ॥

चीनी होय बहुरि तनु जारा। तामें मिस्री हुए अनुसारा ॥
मिस्री ताय पुनि कन्द कहावा। कह कबीर सबके मन भावा ॥

॥ छन्द ॥

मृतक जीवन कठिन धर्मनि लहे विरला सूरहो।
कादर सुनत तन मन दहै पुनि फिरि न चितवै फूर हो ॥
ऐसही आपुहि सवाँरै तबै सहि गुरु ज्ञानसो।
लहै भेंदी भेद निस्चल जाय दीप अमानसो ॥ ६ ॥

सोरठा—मृतक होयसो साधु, सो सतगुरु को भावई।
मेटै सकल उपाधि, तासुदेव आसा करै ॥५॥

॥ चौपाई ॥

साधू मार्ग कठिन धर्म दासू। रहनि गहै सो साधू सुनासू ॥
पांचो इन्द्री समकै राखै। नाम अमी रस निसि दिन चाखै ॥
प्रथमहिं चछु इंद्रिन कहँ साधै। गुरुगमि पथ नाम अवराधै ॥
सुंदर रूप चछुको पूजा। रूप असार न भावै दूजा ॥
रूप कुरूप दोऊ सम ठानै। दरस विदेह सदा सुख मानै ॥
इन्द्रिय स्रवन वचन सुभ चाहै। उतकठ सब्द सुनत चित दाहै ॥
बोल कुबोल दोउ सम लेखै। हृदय सुद्ध गुरु ज्ञान विसेखै ॥
नासिक इंद्रि सुवास अधीना। यहि सम राखहिं संत प्रवीना ॥
जिह्वा इंद्रि चहै नितस्वादू। खट्टा मीठा मधुरस स्वादू ॥
सहज भाव महँ जो कछु आवै। रूखा फीका नहिं बिलगावै ॥
जो कोइ पचामृत लै आवै। ताहि देखि नहिं हर्ष बढ़ावै ॥
तजै न रूखा साग लेनविन। अधिक प्रेम सों पावै प्रति दिन ॥
इंद्री दुष्ट महा अपराधी। कुटिल कामके विरले साधी ॥
कामिनि रूप कालकी खानी। त्यागहु तासु संग गुरु ज्ञानी ॥
जबहीं काम उमगि तनु आवै। ताहि समय जो आपु जोगावै ॥
सब्द विदेह सुरति लै राखै। गहि मन पवन नाम रस चाखै ॥
जबनिः तत्व में जाय समाई। तब पुनि काम रहै मुरझाई ॥

॥ छन्द ॥

अतिकाम पर्वल अति भयंकर महा दारुन काल हो।
सुरदेव मुनि गन्धर्व यछन सबहिं कीन विहाल हो ॥
सबहि लूटै विरल छूटै ज्ञान गुन जिन्ह दृढ़ गहे।
गुनज्ञान दीप समीप सतगुरु भक्ति मारग तिन्ह लहे ॥ ७ ॥

सोरठा—दीपक ज्ञान प्रकास भवन अंजोरा करि रहै।
दीपक ज्ञान प्रकास भवन अंजोरा करि रहै।

सतगुरु सब्द बिलास भाजै चोर अंजोर जब ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु किरपा ते साधु कहावै। अलल पछि ह्वै लोक सिधावै ॥
धर्मदास परिखहु यह बानी। अलपछी गति कहौं बखानी ॥
अलल पछि वोह रहै अकासा। निसि दिन रहै पवन नभ आसा ॥
दृष्टि भाव तिन्ह रतिविधि ठानी। यहि विधि गर्भ रहै तेहि जानी ॥
अंड प्रकास कीन पुनि तहँवां। निराधार अंडा रहु जँहवां ॥
मारग माँह पुष्ट भो अंडा। मारग माँह बिहरिभा खंडा ॥
मारग माँह चछुतिन्ह पावा। मारग भयो पंख पर भावा ॥
महि ढिग आवत सुधि भा ताही। इहाँ मोर नहि आस्रम आही ॥
सुरति सम्हार चले पुन तहँवा। मात पिताको आस्रम जहँवा ॥
अनल पछि तेहि लैन न आवै। उलट चीन्ह निज घरहि सिधावै ॥
बहु पछी जग माहिँ रहावै। अनल पछि सम नाहिँ कहावै ॥
अनल पछि जस पछि न माहीं। अस बिरले जिव नाम समाहीं ॥

॥ छंद ॥

निरालम्ब अलम्ब सतगुरु इक आसा नामकी ॥
गुरु चरन लीन अधीन निस दिन चाह नहिं धन धामकी ॥
सुत नारि सकल बिसार बिखिया चरन गुरु दृढ़ कै गहे ॥
सतगुरु कृपा दुख दुसह नासें धाम अविचल सो लहे ॥
सोरठा—मन बच क्रम गुरु ध्यान, गुरू आज्ञा निरखत चलै ॥
देहिं मुक्त गुरुदान, नाम विदेह लखाय कै ॥

॥ म महातम। चौपाई ॥

जब लग ध्यान विदेह न आवै। तब लग जिव भव भटका खावै ॥
ध्यान विदेह सो नाम विदेही। दोइ लख पावे मिटे संदेही ॥
छन इक ध्यान विदेह समाई। ताकी महिमा बरनि न जाई ॥
काया नाम सबै गोहरावे। नाम विदेह बिरले कोइ पावे ॥
जो जुग चार रहे कोई कासी। सार सब्द बिन यमपुर वासी ॥
नीमखार बद्री परधाना। गया द्वारिका प्राग अस्नाना ॥
अड़सठ तीरथ पृथ्वी परकरमा। सार सब्द बिन मिटै न भरमा ॥
कहँ लग कहौं नाम परभाऊ। जा सुमिरे जम त्रास नसाऊ ॥
सार नाम सतगुरु सों पावे। नाम डोर गहिलोक सिधावे ॥
धर्मराय ताकों सिरनावे। जी हंसा निःतत्व समावे ॥

सार सब्द सुविदेह सरूपा। निह अक्षर वह रूप अनूपा ॥
तत्व प्रकृति प्रभाव सब देहा। सार सब्द निःतत्व बिदेहा ॥
कहन सुनन को सब्द चौधारा। सार सब्द सों जीव उबारा ॥
पुरुस सु नाम सार परवाना। सुमिरन पुरुस सार सहिदाना ॥
बिन रसना के जाप समाई। तासों काल रहे मुरझाई ॥

॥ छंद ॥

जाप अजपा हो सहज धुन परखि गुरुगम धारिये ॥
मन पवन थिर कर सब्द निरखे कर्म मन मथ त्यागिये ॥
होत धुन रसना बिना कर माल बिन निरवारिये ॥
सब्द सार विदेह निरखत अमर लोक सिधारिये ॥ ६ ॥

सोरठा—सोभा अगम अपार, कोटि भानु ससि रोम इक ॥
खोड़स रवि छिटकार, एक हंस उजियार तनु ॥ ९ ॥

॥ चौपाई ॥

सूछम सहज पंथ है पूरा। तापर चढ़ी रहे जनसूरा ॥
नहि वहँ सब्द न सुमिरन जापा। पूरन वस्तु काल दिख दापा ॥
हंसभार तुम्हरे सिर दीना। तुमको कहो सब्द को चीन्हा ॥
पदम अनंत पाखुरी जाने। अजपा जाप डोर सो ताने ॥
सुछम् द्वार तहां जो दरसे। अगम् अगोचर सतपथ परसे ॥
अंतर सून्य होय परकासा। तहवां आदि पुरुस को वासा ॥
ताहि चीन्ह हंस तहँ जाई। आदि सुरत तहुँ लै पहुँचाई ॥
आदि सुरत पुरुस से आई। जीव सोहं बोलिए सो ताई ॥
धर्मदास तुम सत सुजाना। परखो सार सब्द निर्वाना ॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई ॥

हे प्रभु तव चरनन बलिहारी। किए सुखी सब कस्ट निवारी ॥
चच्छुहीन जिमि पावै नैना। तिमि मोहिं हरख सुनत तव बैना ॥
लोकदीप मोहिं बरनि सुनावहु। तृसावन्त को अमी पियावहु ॥
कौने दीप हंस को वासा। कौने दीप पुरुस रहिवासा ॥
भोजन कौन हंस तहँ करई। औ बानी कहँ पुनि तहँ उच्चरई ॥
कैसे पुरुष लोक रचि राखा। दीपहि कर कैसे अभिलाखा ॥
तीन लोक की उतपति भाखो। वर्नहु सकल गोय जनि राखो ॥
काल निरंजन केहि विधि भयऊ। कैसे खोड़स सुत निर्मयउ ॥
कैसे चार खानि विस्तारी। कैसे जीव काल बस डारी ॥
कैसे कूर्म सेस उपराजा। कैसे मीन वराहहि साजा ॥

श्री देव कौन विधि भयऊ। कैसे मोह अकास निर्मयऊ ॥
चंद्र सूर्य कहु कैसे भयऊ। कैसे तारागन सब ठयऊ ॥
किहि विधि भइ सरीर की रचना। भाखो साहिब उत्पति वचना ॥

॥ छन्द ॥

आदि उत्पति कहो सत गुरु कृपा करि निज दास को ॥
वचन सुधासु प्रकास कीजे नास हो यम त्रास को ॥
एक एक बिलोय वरनहु दास मोहि निज जानि कै ॥
सत्य वक्ता सद्गुरु तुम लेव निस्चय मानिकै ॥ १० ॥
सोरठा—निस्चय वचन तुम्हार मोहि अधिक प्रिय ताहिते ॥
लीला अगम अपार धन्य भाग दर्सन दिये ॥ १० ॥

॥ कबीर वचन। चौपाई ॥

धर्म दास तुम अंस अकूरी। मोंहि मिलेउ कीन्हें दुख दूरी ॥
जस तुम कीन्हें मोसन नेहा। तजि धन धाम रुसुत पितु गेहा ॥
आगे सिस्य जो अस विधि करिहैं। गुरु चरनन मन निस्चल धरिहैं ॥
गुरु के चरन प्रीति चित धारैं। तन मन धन सतगुरु पर वारैं ॥
सो जिव मोंहि अधिक प्रिय होई। ताकहँ रोकि सके नहिं कोई ॥
सिस्य होय सरवस नहिँ वारे। हृदय कपट मुख प्रीति उचारे ॥
सो जिव कैसे लोक सिधाई। बिन गुरु मिले मोंहिं नहिं पाई ॥
अब तुम सुनहु आदि की बानी। भाखा उत्पति प्रलय निसानी ॥
तब की बात सुनहु धर्म दासा। जब नहिं महि पाताल अकासा ॥
जब नहिं कूर्म बराह औ सेसा। जब नहिं सादर गौरि गनेसा ॥
जब नहिं हते निरंजन राया। जिन जीवन कह बांधि झुलाया ॥
तेतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊँ काहीं ॥
ब्रह्मा विष्णु महेस्वर तहिंया। सास्तर वेद पुरान न कहिया ॥

॥ छन्द ॥

आदि उत्पति सुनहु धर्मनि कोई न जानत ताहि हो ॥
सबहि भो विस्तार पाछे साखि देउ मैं काहि हो ॥
वेद चारों नाहिं जानत सत्य पुरुस कहानियां ॥
वेद को तब मूल नाहीं अकथ कथा बखानियां ॥ ११ ॥
सोरठा—निराकार तें वेद, आदि भेद जाने नहीं ॥
पंडित करत उछेद, मते वेद के जग चले ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

सत्य पुरुष जब गुप्त रहाये। कारन कारन नहिं निरमाये ॥
सम्पुट कमल रह गुप्त सनेहा। पुस्प मोंहि रहे पुरुस विदेहा ॥

इच्छा कीन्ह अंस उपजाये। हंसन देखि हरख बहु पाये॥
प्रथमहि पुरुस सब्द परकासा। दीप लोक रचि कीन्ह निवासा॥
चारि करि सिंहासन कीन्हा। तापर पुहुप दीप करु चीन्हा॥
पुरुस कलाधरि बैठे जहिये। प्रगटी अगर बासना तहिये॥
सहस अठासी दीप रचि राखा। पुरुस इच्छा तै सब अविलाखा॥
सबै दीप रहु अगर समायी। अगर वासना बहुत सुहायी॥
दूजे सब्द जो पुरुस परकासा। निकसे कूर्म चरन गहि आसा॥
तीजे सब्द पुरुस उच्चारा। ज्ञानी नाम सुत उपजे सारा॥
टेकि चरन सम्मुख ह्वै रहेऊ। आज्ञा पुरुस दीप तिन्ह दयेऊ॥
चौथे सब्द भयी पुनि जबहीं। विवेक नाम सुत उपजे तबहीं॥
आप पुरुस किय दीप निवासा। पचम सब्द तजे परकासा॥
पचवें सब्द पुरुस उच्चारा। काल निरंजन भो औतारा॥
तेज अंग काल ह्वै आवा। ताते जीवन कहँ सतावा॥
जीव अमर पुरुस को आहीं। आदि अंत कोइ जानत नाहीं॥
छठये सब्द पुरुस मुख भाखा। प्रगटे सहज नाम अभिलाखा॥
सतयें सब्द भयो संतोसा। दीन्हो दीप पुरुस परितोसा॥
अठयें सब्द पुरुस उच्चारा। सुरति सुभाव दीप बैठारा॥
नवमें सब्द अनन्द अपारा। दसमें सब्द छमा अनुसारा॥
ग्यरहें सब्द नाम निरकामा। बरहें सब्द जल रंगी नामा॥
तेरहें सब्द अचिंत सुत जानो। चौदहें सब्द सुत प्रेम बखानो॥
पन्द्रहें सब्द सुत दीन दयाला। सोलहें सब्द भै धीर्य रसाला॥
सत्रहवें सब्द सुत योग संतायन। एक नाल खोससुत पायन॥
सब्दहिते भयौ सुनत अकारा। सब्द तें लोक दीप विस्तारा॥
अग्र अभी दिय अंस हमारा। दीप दीप अंसन बैठारा॥
अंसन सोभा कला अनंता। होत तहां सुख सदा बसंता॥
सब सुत कर पुरुस को ध्याना। अमी अहार सदा सुख माना॥

॥ छन्द ॥

दिप करि सो अनंत सोभा नहिं बरनत सो बनै॥
अमित कला अपार अद्भुत सुतन सोभा को गनै॥
पुरुस के उजियार से सुन सबै दीप उजियार हो॥
सतपुरुस रोम परकास एकहिँ चंद्र सूर्य करोर हो॥१२॥

सोरठा—सतगुरु आनद धाम, सोक मोह दुख तहँ नहीं॥
हंसन को बिस्राम, पुरुस दरस अँचवन सुधा॥

॥ चौपाई ॥

यहि विधि बहुत दिवस गये बीती । तेहि पीछे भयी ऐसी रीती ॥
धरमराय अस कीन्ह तमासा । सो चरित्र भासो धर्मदासा ॥
युग सत्तर सेवा तिन लायी । इक पग ठाढ़ पुरुस चित लायी ॥
सेवा कठिन भांति तिन कीन्हा । आदि पुरुस हर्षित होय चीन्हा ॥
पुरुस अवाज उठी तव वानी । कहा जानि तुम सेवा ठानी ॥
धरम राय तव सीस नवाई । देहु ठौर जहॉ वैठों जाई ॥
आज्ञा किये जाहु सुत तहवॉ । मान सरोवर दीप है जहवॉ ॥
चल्यो धरम तव मानसरोवर । वहुत हरख चित करत कतोहर ॥
मान सरोवर आए जहिया । भये गानद धर्म पनि तहिया ॥
वहुरि ध्यान पुरुस को कीन्हा । सत्त जुगन सेवा चित दीन्हा ॥
यक पग ठाढ़े सेवा लायी । पुरुस दयाल दया उर आयी ॥
विगस्यो पुहुप उठ्यो जव वानी । वोलत वचन उठ्यो अयरानी ॥
जाहु सहज तुम धरम के पासा । अव कस ध्यान कीन्ह परकासा ॥
सेवा वहु कीन्हा धरमराऊ । दियां ठौर वहि जहाँ रहाऊ ॥
तीन लोक तव पल में दीन्हा । देखि सेवकाइ दया अस कीन्हा ॥
तीन लोक कर पायो राजू । भयो आनन्द धरम मन गाजू ॥
अव का चाहे पूछो जायी । जो कछु कहै सो देउ सुनायी ॥
चले सहज तव सीस नवायी । धरम राय तहँ पहुँचे जायी ॥
कहे सहज सुनु भ्राता मोरा । सेवा पुरुस मान लयी तोरा ॥
अव का मांगहु सो कहु मोही । पुरुस अवाज दीन्ह यह तोही ॥
अहो सहज तुम जेठे भाई । करो पुरुष सो विनती जाई ॥
इतना ठॉव न मोहि सुहाई । अव मोहिं वकसि देहु ठकुराई ॥
मोरे चित अस भौ अनुरागा । देउ देस मोहिं करहु सभागा ॥
कै मोहि देहु लोक अधिकारा । क मोहि देहु देस यक न्यारा ॥
चले सहज सुनि धर्म की वाता । जाय पुरुस सो कहे विख्याता ॥
जो कछु धर्मराय अभिलासी । तैसे सहज सुनाये भाखी ॥
सुन्यो सहज के वचन जवही पुरुस वैन उचारेऊ ॥
लोक तीनो ताहि दीन्हों सून्य देस विचारेऊ ॥
मानसरोवर ठौर दीन्हों सून्य देस वसावहू ॥
करहु रचना जाय तहँवा सहज वचन सुनावहू ॥
सोरठा—जाहु सहज तुम वेग अस कहि आवो धर्म से ॥
दियो सून्य कर थेग रचना रचहु वनाइकै ॥१५॥

॥ चौपाई ॥

आय सहज तब बचन सुनावा। सत्य पुरुस जस कहि समुझावा॥
सुनतहि वचन धर्म हरखाना। कछुक हरख कछु विसमय आना॥
कहे धर्म सुनु सहज पियारा। कैसे रचौं करौं विस्तारा॥
पुरुस दयाल दीन्ह मोहि राजू। जानु न भेद करौं किमि काजू॥
गम्य अगम मोहे नहिं आई। करो दया सो युक्ति वताई॥
विनती करो पुरुस सों मोरी। अहो भ्राता वलिहारी तोरी॥
किहि विधि रचूँ नौखंड वनायी। हे भ्राता सो आज्ञा पायी॥
तवही सहज लोक पग धारा। कीन्ह दंडवत वारम्वारा॥
अहो सहज कस इहवाँ आई। सो हम सो तुम सद सुनाई॥
कहे सहज तब धर्म की वाता। जो कछु धर्म कही विख्याता॥
धर्म राय जस विनती लायी। तैसे सहज सुनायउ जायी॥
आज्ञा पुरुस दीन्ह तेहि वारा। सुनो सहज तुम वचन हमारा॥
कूर्म के उदर आदि सव साजा। सो ले धर्म करे निज काजा॥
विनती कर कूर्म सो जायी। मांगि लेहि तेहि माथ नवायी॥
गये सहज पुनि धर्म के पासा। आज्ञा पुरुस कीन्ह परकासा॥
वारह पालँग कूर्म सरीरा। छः पालँग धरम वल वीरा॥
कीन्हों रोस कोपि धर्म धीरा। जाय कूर्म से सन्मुख भीरा॥
धावे चहुँ दिस रहे रिसाई। किहि विधि लीजे उत्पति भाई॥
कीन्हों काल सीस नख घाता। उदरते निकसे पवन अघाता॥
तीन सीस के तीनहु अंसा। ब्रह्मा विष्णु महेसर वंसा॥
पांच तत्व धरती आकासा। चद्र सूर्य उडगन रहिवासा॥
छीना सीस कूर्म को जवही। चले पसेव ठांव पुनि तवही॥
जवही पसेव बुंद जल दीन्हा। उचास कोट पृथ्वी को चीन्हा॥
छीर ताय जस परत मलाई। अस जल पर पृथ्वी ठहराई॥
वराह दंत रह महिकर मूला। पवन प्रचंड महाँ अस्थूला॥
अड स्वरूप अकास को जानो। ताके वीच पृथ्वी अनुमानो॥
कूर्म उदर सुत कूर्म उत्पानो। तापर सेस वराह को थानो॥
सेस सीस या पृथ्वी जानो। ताके हठे कूर्म वरियानो॥
किरतम कूर्म अडके मांही। कूर्म अंस सो भिन्न रहाही॥
आदि कूर्म रह लोक मँझारा। तिन पुनि पुरुस ध्यान अनुसारा॥
निरकार कीन्हो वरियाया। काल कला धरि मों पहँ आया॥
उदर विदार दीन्हे उन मोरा। आज्ञा जानि कीन्ह कछु थोरा॥

पुरुस अवाज कीन्ह तेहि वारा। छोट बन्धु वह आहि तुम्हारा॥
आही यही बड़न की रीती। औगुन ठाँव करहिं वह मीती॥
पुरुस वचन सुनि कूर्म अनन्दा। अमी सरुप सो आनन्द कन्दा॥
पुरुस ध्यान पुनि कीन्ह निरञ्जन। जुग अनेक किय सेवा संजम॥
स्वार्थ जानि सेवा तिन लावा। करि रचना बैठे पछतावा॥
धर्म राय तब कीन्ह विचारा। कहवाँ लो त्रयपुर विस्तारा॥
स्वर्ग मृत्यु कीन्हों पाताला। बिना बीज किमि कीजे ख्याला॥
कर सेवा मांग वर सोई। तिहुँपुर जाते मेरो होई॥
एक पांव तब सेवा कियेऊ। चौसठ युग लों ठाढ़े रहेऊ॥

॥ छंद ॥

दयानिधि सतपुरुस साहिब वस सु सेवा के भये॥
बहुरि कह्यो सहज सेति कहा अब सेवा ठये॥
जाहु सहज निरंजना पहँ देउ जो कछु मांगई॥
करहु रचना पुरुस वचना छल मता सब त्यागई॥
सोरठा—सहज चले सिर नाय, जबहिं पुरुस आज्ञा कियो॥
तहँवाँ पहुँचे जाय, जहाँ निरंजन ठाढ़ रहे॥

॥ चौपाई ॥

देखत सहज धर्म हरखाना। सेवा बस पुरुस तब जाना॥
कहै सहज सुनू धर्म राया। केहि कारन अब सेवा लाया॥
धरम कहे तब सीस नवायी। देहु ठौर जहँ बैठों जायी॥
तब सहज अस भाखे लीन्हा। सुनहु धर्म तोहि पुरुस सब दीन्हा॥
कूर्म उदर सो जो कछु आवा। सो तोहि देन पुरुस फरमावा॥
तीनो लोक राज तोहि दीन्हा। रचना रचहु होहु जनि भीना॥
तबै निरजन विनती लायी। कैसे रचना रचूँ बनायी॥
पुरुस सो कहो जोरि युगपानी। मैं सेवक हौं दुतिया नहिं जानी॥
पुरुस सो विनती करो हमारा। दीजे खेत बीज निज सारा॥
मैं सेवक दुतिया नहिं आजू। ध्यान पुरुस को निस दिन आजू॥
दीन्हो बीज जीव पुनि सोई। नाम सुहंग जीव कर होई॥
जीव सोहंगम दूसर नाहीं। जीव सो अंस पुरुस को आहीं॥
सकती तीन पुरुस उतपाना। चेतनि उलबनि अभया जाना॥

॥ छन्द ॥

पुरुस सेवा बस भये तब अष्ट अंगहि दीन्ह हो॥
मान सरोवर जाहि कहिये देहु धर्महि ठौरहो॥

अष्टंगी कन्या हति जेहि रूप सोभा अति वनी ॥
जाहु कन्या मानसरोवर करहु रचना अति घनी ॥१५॥
सोरठा—चौरासी लख जीव, मूल बीज तेहि संग दे।
रचना रचहु सजीव, कन्या चलि सिर नाय के॥ १५ ॥

॥ चौपाई ॥

यह लव दीन्हों आदि कुमारी। मानसरोवर चलि भयी नारी॥
चले सहज तहँवा तब आये। धर्म धीर जहँ ठाढ़ रहाये॥
कहेउ सुवचन पुरुस को जबही। धर्मराय सिर नायो तबही॥
पुरुस वचन सुनत वही गाजा। मानसरोवर आन विराजा॥
आवत कामिनि देख्यो जबही। धर्म राम मन हरखे तबही॥
कला देखि अष्टंगी केरी। धर्मराय इतरान्यो हेरी॥
कला उदोत अंत कछु नाहीं। काल मगन है निरखत ताहीं॥
निरखत धर्म सु भयो अधीरा। अंग अंग सब निरख सरीरा॥
धर्मराय कन्या कहँ ग्रासा। काल स्वभाव सुनो धर्मदासा॥
कीन्ही ग्रास काल अन्याई। तब कन्या चित विस्मय लाई॥
तत छन कन्या कीन्ह पुकारा। काल निरंजन कीन्ह अहारा॥
तबही धर्म सहज लग आई। सहज सून्य तब लीन्ह छुड़ाई॥
पुरुस ध्यान कूर्म अनुसारा। मोसन काल कीन्ह अधिकारा॥
तीन सीस मम भक्षन कीन्हों। डोसत पुरुस दया भल चीन्हों॥
यही चरित्र पुरुस भल जानी। दीन्ह साप सो कहौं बखानी॥
लछ जीव नित ग्रासन करहू। सवा लछ नित प्रति विस्तरहू॥

॥ छन्द ॥

पुनि कीन्ह पुरुस तिवान तिहि छन मेटि डारो काल हो॥
कठिन काल कराल जीवन बहुत करहि विहाल हो॥
यहि मेटत अब ना बने मुहिँ नाल इक सुत खोड़सा॥
एक मेटत सबै मिटि हैं वचन डोल अडोल सा॥ १६ ॥
सोरठा—डोलै वचन हमार, जो अब मेंटो धर्म को।
वचन करौं प्रतिपाल, दरस मोर अब [illegible]ई॥१६॥

धर्म के उदर माहिं है नारी। सो कहिये निज सब्द सम्हारी॥
उदर फारि के बाहर आवे। कूर्म उदर बिदारि फल पावे॥
धर्म राय सों कहो बिलोई। वहै नारि अब तुम्हरी होई॥
जोग जीत चल भे सिर नाई। मान सरोवर पहुँचे जाई॥
जोग जीत कह देखा जबही। अति भो काल भयंकर तबही॥
पूछे काल कौन तुम आई। कौन काज तुम यहाँ सिधाई॥
जोग जीत अस कहैं पुकारी। अहो धर्म तुम ग्रसेहु नारी॥
आज्ञा पुरुस दीन्ह यह मोही। इहिं ते वेगि निकारों तोही॥
जोग जीत कन्या सो कहिया। नारी काहे उदर मह रहिया॥
उदर फारि अब आवहु बाहर। पुरुस तेजि सुमिरों तेहि ठाहर॥
यहि कहि जोग करे सो ध्याना। पुरुस प्रभाव तेज उर आना॥
सुनि के धर्म क्रोध उर जरेऊ। जोग जीत सो सन्मुख भिरेऊ॥

॥ छंद ॥

गहि भुजा फटकार दीन्हीं परेउ लोक तें न्यार सो॥
भयो त्रसित परुस डरते बहुरि उठेउ सम्हार सो॥
पुरुस आज्ञा तब भयी तेहि मारो माझ लिलार हो॥
पुनि निकसि कन्या उदर ते अति डरत देखे धरम हो॥

सोरठा—कामिनी रही सकाय, त्रसित काल के डर अधिक॥
रही सो सीस नवाय, आसपास चितवत खड़ी॥

॥ चौपाई ॥

कहें धरम सुनु आदि कुमारी। अब जनि डरपो त्रास हमारी॥
पुरुस रचा तोहि हमरे काजा। इक मति होय करहु उपराजा॥
हम हैं पुरुस तुमहि हो नारी। अब जनि डरपो त्रास हमारी॥
कन्या कहै सुनो हो ताता। ऐसी विधि जनि बोलहु बाता॥
अब मैं पुत्री भई तुम्हारी। जब से उदर मांझ लियो डारी॥
तुम तो अहो हमारे ताता। जेठ बंधु प्रथमहिं के नाता॥
मंद दृष्टि जनि चितवहु मोही। नातो पाप होय अब तोही॥
कहे निरंजन सुनो भवानी। यह मैं तोहि कहौं सहिदानी॥
पाप पुन्य डर हम नहिं डरता। पाप पुन्य के हमहीं करता॥
पाप पुन्य हमही सं होई। लेखा मोर न लैहैं कोई॥
पाप पुन्य हम करब पसारा। जो बाझे सो होय हमारा॥
तातें तोहि कहों समुझाई। सिख हमार लो सीस चढ़ाई॥
पुरुस दीन्ह तोहि हम कहँ जानी। मानहु कहा हमार भवानी॥

विहँसी कन्या सुन अस बाता। इक मति होय दोइ रँगराता॥
रहस वचन बोली मृदु बानी। नारि नीच बुधि रति विधि ठानी॥

॥ छन्द ॥

भग नहिं कन्या के हती अस चरित कीन्ह निरंजना॥
नख घात किये भग द्वारा ततक्षण घाट उत्पति गंजना॥
त्रिय वार कीन्ही, रति तबै भये ब्रह्मा बिस्नु महेस हो॥
जेठे विधि विस्नु लघु तिहिं तजी सम्भू सेख हो॥

सोरठा—उत्पति आदि प्रकास, यहि विधि तेहि प्रसग भो॥
कीन्हों भाेग बिलास; इक मति कन्या काल ह्वै॥

॥ चौपाई ॥

तेहि पीछे ऐसो भो लेखा। धरमदास तुम करो विवेका॥
करो धरम कामिनी सुनबानी। जो मैं कहूँ लेहु सो मानी॥
जीव बीज आहै तुव पासा। सो ले रचना करहु प्रकासा॥
अग्नि पवन जल महि आकासा। कूर्म उदह ते भयो प्रकासा॥
पांचो अस ताहि सन लीन्हा। गुन तीनों जो सब सो लीन्हा॥
यहि विधि भये तत्वगुन तीनीं। धरमराय तब रचना कीनीं॥
गुनतत सम करि देविहि दीन्हा। आपन अंस उत्पन कीन्हा॥
बुन्द तीन कन्या भग डारा। ता सँग तीनों अंस सुधारा॥
प्रथम बुन्द ते ब्रह्मा भयऊ। रज गुन पच तत्व तेहि दयऊ॥
दूजो बुन्द बिस्नु जो भयऊ। सत गुन पंच तत्व तिन पयेऊ॥
तीजे बुन्द रुद्र उत्पाने। तम गुन पच तत्व तेहि साने॥
पच तत्व गुन तीन खमीरा। तीनों जन को रच्यो सरीरा॥
ताते फिर २ परलय होई। आदि-भेद जाने नहिं कोई॥
कहे निरजन पुनि सुनि रानी। अब अस करहु आदि भवानी॥
त्रय सुत सौंप तोहि कहँ दीन्हा। अब हम पुरुस सेव चित लीन्हा॥
राज करहु तुम लै तिहु बारा। भेद न कहियो काहु हमारा॥
मोर दरस त्रय सुत नहिं पैहैं। जो मुहि खोजत जन्म सरैहैं॥
ऐसो मता दृढ़ है ठानी। पुरुस भेद नहिं पावै प्रानी॥
त्रयसुत जबहिं होहिं बुधि वाना। सिंधु मथन दे पठहु निदाना॥
पाँच तत्व तीनों गुन दीन्हाँ। यहि विधि जग की रचना कीन्हाँ॥

॥ छन्द ॥

यह कहेउ बहुत बुझाय देविहि गुप्त भयो तब आप हो॥
सून्य गुफहि निवास कीन्हो भेद लह को ताहि हो॥

वह गुप्त भा पुनि संग सब के मन निरंजन जानिये ॥
जीव पुरुस भेद न चीन्हा पावें ताते परगट आनिये ॥ ९ ॥
सोरठा—जीव भये मति हीन, परसि अगम सो काल को ॥
जनमे जनम भये खीन, मुरुछा कर्म अकर्म को ॥
जीव सतावे काल, नाना कर्म लगाय के ॥
आप चलावे ख्याल, कस्ट देय पुनि जीव को ॥

॥ चौपाई ॥

त्रय बालक जब भये सयाने । पठये जननी सिंध मथाने ॥
बालक माते खेल खिलारा । सिंधु मथम कह गये तीनो बारा ॥
तेहि अन्तर इक भयो तमासा । सो चरित्र बूझो धर्मदासा ॥
धान्यो योग निरंजन राई । पवन अरंभ कीन्ह बहुताई ॥
त्यागो पवन रहित पुनि जबही । निकसेउ वेद स्वास सँग जबही ॥
स्वांस संग आयेउ सो वेदा । विरला जन कोइ जाने भेदा ॥
अस्तुति कीन्ह वेद पुनि ताहाँ । आज्ञा का मोहि निर्गुन नाहाँ ॥
कह्यो जाय करु सिंधु निवासा । जेहि भेंटे जैहौ तिहि पासा ॥
उठी अवाज रूप नहिं देखा । जोति अंग दिखलावे भेखा ॥
चले वेद तहवाँ कहँ जाई । जहँवा सिंधु रचा धर्मराई ॥
पहुँचे वेद तब सिंधु मँझारा । धर्मराय तब युक्ति विचारा ॥
गुप्त ध्यान देविहि समुझावा । सिन्धु मथन कहँ कस बिलमावा ॥
पठवहु वेगि सिंधु त्रय बारा । द्रढ़ के साचहु बचन हमारा ॥
बहुरि आप पुनि सिन्धु समाना । देवी कीन्ह मथन को ठाना ॥
तिहुँ बालक कहँ कह समुझायी । आसिस दे पुनि तहाँ पठायी ॥
पैहो वस्तु सिंधु के माहीं । जाहु वेगि तीनों सुन ताहीं ॥
ब्रह्मा बिस्नु चले तहं जाई । तीजे सम्भु पीछे धाई ॥

॥ छंद ॥

त्रय सुत बाल खेलत चले ज्यों सुभग बाल मराल को ॥
पुनि एक छोड़त एक कर गहि चलत लटपट चाल को ॥
छनहि धावत छन अस्थिर खड़े छन भुजहि ग्रीव लगावहीं ॥
तहि समय की सोभा भली तिहि वेद बहु विधि गावहीं ॥
सोरठा—गये सिंधु के पास, भये ठाढ़ तीनों जबै ॥
युक्ति मथन परकास, एक एक को निरखहीं ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

तीनों कीन्ह मथन तब जाई। तीन वस्तु तीनों जन पाई॥
भेंटि वस्तु त्रय तीनों भाई। चलि भये हर्ष करत जहँ माई॥
चलि माता पहँ आये त्रय वारा। निज २ वस्तु प्रगट अनुसारा॥
माता अज्ञा कीन्ह प्रकासा। राखु वस्तु तुम निज निज पासा॥
पुनि तुम मथहु सिंधु कहँ जाई। जो जिहि मिले लेहु सो भाई॥
कीन्ह चरित अस आदि भवानी। कन्या तीन कीन्ह उत्पानी॥
पठयो सिंधु माहिं पुनि ताहीं। त्रयसुत मर्म सो जानत नाहीं॥
पुनि तिन मथन सिंधु को कीन्हा। भेंट्यो कन्या हर्षित व्है लीन्हा॥
कन्या तीनहु लीन्हे साथा। आय जननी कहँ नायउ माथा॥
माता कहे सुनहु सुत मोरा। यह तो काज भये सब तोरा॥
सावित्री ब्रह्मा तुम लेऊ। है लक्ष्मी बिस्नु कहँ देऊ॥
पारवती संकर कहँ दीन्ही। ऐसी माता आज्ञा कीन्ही॥
पाई कामिनी भये अनंदा। जस चकोर पाये निसि चंदा॥
धर्म दास परखो यह बाता। नारी भयी हती सो माता॥
देव दैत्य दोनों उपजायी। माता कहेउ पुत्र समझायी॥
पुनि तुम मथहु सिंधु कहँ आयी। जो जेहि मिले लेहु सो जाई॥
त्रय सुत चलतब माथ निवायी। जो कछु कहेउ करब हम जायी॥
मथ्यो सिन्धु कछु विलम्ब न कीन्हा। तीनहु वस्तु पाये सो लीन्हा॥
चौदह रतन की निकसी खानी। माता बांटि तिनहुँ कह आनी॥
तीनहु बन्धु हरखित ह्वै लीन्हा। बिस्नु सुधा पाय उहर बिस दीन्हा॥
पुनि माता अस वचन उचारा। रचहु सृष्टि तुम तीनों वारा॥
अंडज उत्पति कीन्हीं माता। पिंडज ब्रह्मा कर उत्पाता॥
ऊस्मज खानि विस्नु व्यवहारा। सिव अस्थावर कीन्ह पसारा॥
चौरासी लख योनिन कीन्हा। आधा जल आधा थल दीन्हा॥
एक तत्व अस्थावर जाना। दोय तत्व ऊस्मज परवाना॥
तीन तत्व अंडज निर्मायी। चार तत्व पिंडज उपजायी॥
पाँच तत्व मानुस विस्तारा। तीनों गुन तुहि मांहि सवाँरा॥
ब्रह्मा वेद पढ़न सब लागा। पढ़त वेद तब भा अनुरागा॥
कहे वेद पुरुस इक आही। निराकार रूप नहिं ताही॥
सून्य माहि वह जोत दिखावे। चितवत देह दृष्टि नहिं आवे॥
स्वर्ग सीस पगआहि पताला। यह सब देखो ताकर ख्याला॥

समझाई। तुमहु सिव सुनियो चितलाई ॥
ब्रह्मा कहे विस्नु बतावा। वेद कहे हम भेद न पावा ॥
अहै पुरुस इक वेद आवा। करि प्रनाम तब टेके पावा ॥
तब ब्रह्मा माता पहँ लखावा। सिरजन हार और बतलावा ॥
हे माता मोहि वेद

॥ छंद ॥

सुनो कहु कौन पिता हमार है ॥
ब्रह्मा कहे जननी दुराओ कहां पंथ तुम्हार है।
कीजे कृपा जनि मोहि कहौं तोसो सत्तही ॥
कहे जननी सुनो ब्रह्मा चरन सप्त पतालही ॥ २१ ॥
सात स्वर्ग है माथता को जननी तैं चित्तदै ॥
सोरठा–ब्रह्मा कह्यो पुकार सुनु एक गुप्त है ॥
कहो भेद निरवार पुरुस कौन दरस की ॥
लेहु पुस्प तुम हाथ जो इच्छा तुहिं नाइकै ॥
जाय नवाओ माथ ब्रह्मा चले सिर

॥ चौपाई ॥

माहीं। मोरि कही यह मानति नाहीं ॥
जननी गुन्यो वचन चित उपदेसा। पै दरस तै नहि पावे भेसा ॥
या कहँ वेद दीन्ह वारा। अलख निरंजन पिता तुम्हारा ॥
कह अष्टंगी सुनो रे पूना। यह मैं वचन कहौं निज गूता ॥
तासु दरस नहिं पैहौ धावा। परसन सीस ध्यान हिय लावा ॥
ब्रह्मा सुनि व्याकुल ह्वै रिंगायी। उत्तर दिसा वेगि चलि जायी ॥
तवही ब्रह्मा दीन्ह जाई। नहिं तहँ रवि ससि सून्य रहाई ॥
तेहि स्थान पहुँचि गे बनायी। ज्योति प्रभाव ध्यान तहँ लाई ॥
बहु विधि अस्तुति करे वितायी। नहिं पायो ब्रह्मा दरस पितायी ॥
ऐसे बहु दिन गये पावा। सून्य ध्यान युगचार गमावा ॥
ब्रह्मा तात दरस नहिं माहीं। जेठ पुत्र ब्रह्मा रहु काहीं ॥
माता चिंता करत मन बनाई। ब्रह्मा आवे कौन उपाई ॥
किहि विधि रचना रचहुँ काढ़ी। पुत्री रूप कीन्ह रचि ठाढ़ी ॥
उबटि सरीर मैल गहि मिलावा। नाम गायत्री ताहि धरावा ॥
सक्ति अंस निज ताहि नावा। चरन टेकि के सीस चढ़ावा ॥
गायत्री मातहि सिर जोरी। सुनु जननी इक विनती मोरी ॥
गायत्री विनवै कर निर्माई। कहौ वचन लेउँ सीस चढ़ाई ॥
कौन काज मो कहँ बाना। ब्रह्मा है जेठो तुव भ्राता ॥
कहे माया पुत्री सुनु

पिता दरस कहँ गयो अकासा। आनौ ताहि वसन परकासा॥
दरस तात कर वह नहिं पावे। खोजत खोजत जन्म गमावे॥
जौने विधि ते इहवा आई। करो जाय तुम तौन उपाई॥
चलि गायत्री मारग आई। जननी वचन प्रीति चितलाई॥

॥ छन्द ॥

जाय देख्यो चतुरमुख कह नहिं पलक उघारई॥
कछुक दिन सो रही तहँवा बहुरि युक्ति विचारई॥
कौन विधि यह जागि है अब करों कौन उपाय हो॥
मन गुनत सोचे बहुत विधि ध्यान जननी लाय हो॥ २२॥
सोरठा—आद्या आयसु पाय गायत्री तब ध्यान महँ॥
निजकर परसहु जाय ब्रह्मा तबही जागिहैं॥ २३॥

॥ चौपाई ॥

गायत्री पुनि कीन्ही तैसी। माता युक्ति बतायी जैसी॥
गायत्री तब चित्त लगायी। चरन कमल कहँ परसेउ जायी॥
ब्रह्मा जाग ध्यान मन डोला। व्याकुल भयौ वचन तब बोला॥
कवन अहै पापिन अपराधी। कहा छुड़ायहु मोरि समाधी॥
साप देहुं तो कहं मैं जानी। पिता ध्यान मोहि खंड्यो आनी॥
कहि गायत्री मोहि न पापा। बूझि लेहु तव देहू सापा॥
कहौं तोहि सों साँची बाता। तोहि लेन पठयी तुम माता॥
चलहु वेगि जनि लावहु वारे। तुम बिन रचना को विस्तारे॥
ब्रह्मा कहे कौन विधि जाऊं। पिता दरस आजहुँ नहिं पाऊं॥
गायत्री कह दरसन पैहो। वेगि चलहु नहिं तो पछतैहो॥
ब्रह्मा कहे देहु तुम साखी। परस्यो सीस देख मैं आँखी॥
ऐसे कहे देहु मातु समझायी। तो तुम्हरे संग हम चलि जायी॥
कह गायत्री सुन श्रुति धारी। हम नहिं मिथ्या वचन उचारी॥
जो मम स्वारथ पुरवहु भाई। तो हम मिथ्या कहव बनाई॥
कह ब्रह्मा नहिं लखो कहानी। कहा बुझाय प्रगट की बानी॥
कह गायत्री दहु रति मोही। तो कह झूठ जिताऊँ तोही॥
सुनि ब्रह्मा चित करै विचारा। अब का यत्न करहुँ इहि वारा॥

॥ छन्द ॥

जो वीमुख याकहँ करों अब तो नहीं बन आवई॥
साखि तो यह देय नाहीं जननि मोहि लजावई॥

यहां नाहिं पिता पायो भयो न एको काज हो ॥
पाप सोचत नहिं बने अब करौं रति विधि साज हो ॥
सोरठा—क्रिया भोग रति रंग बिसरयो सो मन दरस को ॥
दोउ कहँ बढ्यो उमंग छलमति बुद्धि प्रकास किये ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

कह ब्रह्मा चल जननी पासा। तब गायत्री वचन प्रकासा ॥
औरो करो युक्ति इक ठानी। दूसरि साखि लेहु उत्पानी ॥
ब्रह्मा कहे भली है बाता। करहु सोइ जेहि मानै माता ॥
तब गायत्री यतन विचारा। देह मैल गहि कीन्ह नियारा ॥
कन्या रचि निजअंस मिलावा। नाम सावित्री तासु धरावा ॥
गायत्री तिहि कह समुझावा। कहियो दरस ब्रह्मा पितु पावा ॥
कह सावित्री हम नहिं जानी। झूठ साखि दै आपनि हानी ॥
यस सुनि दोउ कहँ चिंता व्यापा। यह तो भयो कठिन संतापा ॥
गायत्री बहु विधि समझायी। सावित्री के मन नहिं आयी ॥
पुनि गायत्री कहा बुझाई। तब सावित्री वचन सुनाई ॥
ब्रह्मा कर मोसों रति साजा। तो मैं झूठ कहौं यहि काजा ॥
गायत्री ब्रह्महि समुझावा। दै रतिया कह काज बनावा ॥
ब्रह्मा रति सावित्रीहिं दीन्हा। पाप मेटि आपन सिर लीन्हा ॥
सावित्री कर दूसर नाऊँ। कहि पुहु पावति वचन सुनाऊँ ॥
तीनों मिलि के चलि भै तहँवा। कन्या आदि कुमारी जहँवा ॥

करि प्रणाम सन्मुख रहे जाई। माता सब पूछी कुसलाई ॥
कहु ब्रह्मा पितु दर्सन पाये। दूसरि नारि कहाँ से लाये ॥
कह ब्रह्मा दोऊ हैं साखी। परस्यो सीस देख इन आंखी ॥
तब माता बूझे अनुसारी। कह गायत्री वचन विचारी ॥
तुम देखा इन दर्सन पावा। कहो सत्य दर्सन परभावा ॥
तब गायत्री वचन सुनावा। ब्रह्मा दर्स सीस पितु पावा ॥
मैं देखा इन परसेउ सीसा। ब्रह्महि मिले देव जगदीसा ॥

॥ छंद ॥

लेइ पुहुप परसेउ सीस पितु इन दृष्टि मैं देखत रही ॥
जल ढार पुहुप चढ़ाय दीन्हे हे जननि यह है सही ॥

पुहुप ते पुहपावती भयी प्रगट ताही ठाम ते ॥
इनहु दर्सन लह्यो पितु को पूछहू इहि वाम ते ॥

हो जननी यह है सही पूछि देखो पुहुपावती ॥
सवहि साँच मैं तोसो कहूँ नहीं भूठ एको रती ॥
माता कहै पुहुपावती सो कहो सत्यही मोसना ॥
जो चढे सीसहि पिताके तुम वचन बोलहु ततखना ॥
सोरठा—कहु पुहुपावति मोहि, दरस कथा निरवार के ॥
यह मैं पूछों तोहि, किमि ब्रह्मा दरसन किये ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

पुहु पावती वचन तब बोली । माता सत्य वचन नहिं डोली ॥
दर्सन सीस लह्यो चतुरानन । चढ़े सीस यह धर निश्चय मन ॥
साख सुनत आद्या अकुलानी । भा अचरज यह मर्म न जानी ॥
अलख निरंजन असमन भाखी । मो कँह कोउ न देखै आंखी ॥
ये तीनहुँ कस कहहिं लबारी । अलख निरंजन कहहु सम्हारी ॥
ध्यान कीन्ह अष्टंगि तिहि छन । ध्यान मांहि अस कह्यो निरंजन ॥
ब्रह्मा मोर दरस नहिं पाया । भूठि साखि इन आन दिवाया ॥
तीनों मिथ्या कहा बनाई । जनि मानहु यह है लवराई ॥
यह सुनि माता कीन्हे दापा । ब्रह्मा कहँ तब दीन्हों सापा ॥
पूजा तोरि करै कोइ नाहीं । जो मिथ्या बोलेउ मम पाहीं ॥
इक मिथ्या अरु अकरम कीन्हा । नरक मोट अपने सिर लीन्हा ॥
आगे ह्वै जो साख तुम्हारी । मिथ्या पाप करहिं बहु भारी ॥
प्रगट करहिं बहु नेम अचारा । अंतर मैल पाप विस्तारा ॥
विस्नु भक्त सो कर हंकारा । ताते परिहैं नरक मभारा ॥
कथा पुरान औरहिं समभैं हैं । चाल विहुन आपन दुख पैहैं ॥
उनसे और सुनैं जो ज्ञाना । करि हँसि भक्त कहों परवाना ॥
और देव को अस लखैं हैं । औरन निंदि काल मुख जैहैं ॥
देवन पूजा बहु विधि लावें । दछिना कारन गला कटावें ॥
जा कहँ सिस्य करे पुनि जायी । परमारथ तिहि नाहिं लखायी ॥
आप स्वारथी ज्ञान सुनैं हैं । आपनि पूजा जगत दृढ़ैहैं ॥
आपन पूजा जगहि दृढ़ायी । परमारथ के निकट न जायी ॥
आप ऊँच औरहि कहे छोटा । ब्रह्मा तोर सखा होइ खोटा ॥
परमारथ के निकट न जैहैं । स्वारथ अर्थ सबै समुझैहैं ॥

अब माता अस कीन्ह प्रहारा। ब्रह्मा मूर्छि मही कर धारा ॥
गायत्री साप्यो तिहि वारा। हुइ हैं तोर पंच भरतारा ॥
गायत्री तोर होइ वृसभ भरतारा। सात पाँच और वहुत पसारा ॥
धर औतार अखज तुम खाई। वहुत झूठ तुम वचन सुनाई ॥
निज स्वारथ तुम मिथ्या भाखी। कहा जानि यह दीन्ही साखी ॥
मानि साप गायत्री लीन्ही। सावित्रिहि तव चितवन कीन्ही ॥
पुहपावति निज नाम धरायेहु। मिथ्या कह निज जन्म नसायेहु ॥
सुनहु पुहपावति तुम्हरा विस्वासा। नहिं पुजिहैं तुम्हसे कछु आसा ॥
होय कुगंध ठौर तव वासा। भुगतहु नरक काम गहि आसा ॥
जो तोहि सींच लगावे जानी। ताकर होय वंस की हानी ॥
अव तुम जाय धरौ औतारा। क्योड़ा केतकी नाम तुम्हारा ॥

॥ छन्द ॥

भये साप वस तीनों विकल मति हीन छीन कुकर्मते ॥
यह काल कला प्रचंड कामिनि डस्यो सव कहँ चर्मते ॥
ब्रह्मादि सिव सनकादि नारद कोउ न वाचे भक्त हो ॥
सुनु धरमनि विरल वाचे सब्द सत जोई गहो ॥ २५ ॥
सोरठा—सत्य सब्द परताप, काल कला व्यापे नहीं ॥
निकट न आवै पाप, मन वच क्रम जोपद गहे ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

साप तीनौ को दैलियो मन माहिं तव पछतावई ॥
कस करहि मोहि निरंजन पल क्षमा मोहि न आवई ॥
अकास वानी तवै भयी यहु कहा कीन भवानिया ॥
उत्पति कारन तोहि पठायी कहा चरित्र यह ठानिया ॥२६॥
सोरठा—नीचहिं ऊंच सिताय, वदल मोहि सो पावई ॥
द्वापर युग जव आय, तुमहि पंच भरतार होय ॥२६॥

॥ चौपाई ॥

साप ओयल जव सुनेउ भवानी। मनसुन गुने कहा नहिं वानी ॥
ओपल प्रभाव साप हम पाया। अव कहा करव निरंजन राया ॥
तोरे वस परी हम आई। जस चाहो तस करो उपाई ॥
आयी माता विस्नु दुलारा। सुनहु पुत्र इक वचन हमारा ॥
अब तुम वेगि पताले जाऊ। जाय पिता के परसहु पाऊ ॥
आज्ञा पाय विस्नु तत्काला। पितु पद परसन चले पताला ॥
अक्षत पुरुष लीन्ह करमाहीं। चेल पताल पंथ मंग जाहीं ॥

पहुँचे सेस नाग पहँ जाई। विस के तेज विस्नु अलसाई ॥
भयो स्याम विस तेज समावा। निराकार अस वचन सुनावा ॥
अहो विस्नु माता पहँ जाई। वचन सत्य कहियो समझाई ॥
सतयुग त्रेता जैहै जवहीं। द्वापर है चौथा पद तवहीं ॥
तंव तुम होहु क्रस्न अवतारा। लैहो ओएल सो कहौ विचारा ॥
नाथहु नाग कलिंद्री जाई। अव तुम जाहु विलम्बन लाई ॥
ऊँच होइके नीच सतावे। ताकर ओएल मोहि सो पावे ॥
जो जिव देइ पीरपुनि काहू। हम पुनि ओयल दिवा वैताहू ॥
पहुँचे विस्नू जननी पासा। कीन्हेउ सत्य वचन परकासा ॥
भेटेऊ नाहिं मोहिं पद ताता। विस ज्वाला सॉवल भो गाता ॥
व्याकुल भयो तवै फिरि आयो। पितु पद दर्सन मैं नहिं पायो ॥
सुनि के हरखी आदि कुमारी। लीन्ह विस्नु कहँ निकट दुलारी ॥
चूम्यो बदन सीस दियो हाथा। सत्य सत्य बोलेउ तुम ताता ॥
देख पुत्र तेहि पिता मिटावों। तो रे मन कर धोख मिटावों ॥
प्रथमहिं ज्ञान दृष्टि सो देखो। मोर वचन निज हृदय परेखो ॥
मन स्वरूप करता कहँ जानो। मन ते दूजा और न मानो ॥
स्वर्ग पताल दौर मन केरा। मन अस्थिर मन अहै अनेरा ॥
छन महँ कला अनंत दिखावे। मन कह देख कोइ नहिं पावे ॥
निराकार मनही को कहिये। मनकी आस दिवस दिन रहिये ॥
देखहु पलटि सुन्य मह जोती। जहना झिलमिल झालर होती ॥
फेरहु स्वास गगन कह धाओ। मार्ग अकासहि ध्यान लगाओ ॥
जैसे माता कहि समुझावा। तैसे विस्नु ध्यान मन लावा ॥

॥ छंद ॥

पैठि गोफा ध्यान कीन्हो स्वास संयम लाय के ॥
पवन धूका दियो जवते गगन गरज्यो आय के ॥
बाजा सुनत तव मगन भा पुनि कीन्हमन कस ख्याल हो ॥
सून्य सीव पीत सञ्ज लाल दिखाय रग जंगाल हो ॥२७॥

सोरठा—तेहि पीछे धर्मदास, मन पुनि आप दिखायेऊ ॥
कीन्ह ज्योति परकास, देखि विस्नु हर्खित भये ॥२७॥
माताहि नाया सीस, वहु अधीन पुनि विस्नु भा ॥
मैं देखा जगदीश हे जननी परसाद तुव ॥२८॥

॥ चौपाइ ॥

.! विस्नु तुम लेहु असीसा। सव देवन में तुमही ईसा ॥
इच्छा तुम चित में धरिहो। सो सव तोर काज मैं करिहौं ॥

यम पुत्र ब्रह्मा दुरि गयऊ। अकरम झूठ ताहि प्रिय भयऊ॥
वन श्रेष्ठ तुम तुमहि कहं जानहिं। तुम्हरी प्रजा सबहिं कोइ मानहिं॥
ष्णा वचन अस माते भाखा। सबते श्रेष्ठ विस्तु कहँ राखा॥
माता गयी रुद्र के पासा। देख रुद्र अति भयी हुलासा॥
दोइ पुत्रन कहँ मता दृढावा। भाग महेस जोइ मन भावा॥
हे जननी यह कीजे दाया। कबहुँ न विनसै मेरी काया॥
कह जननी ऐसा नहिं होई। दूसर अमर भयो नहिं कोई॥
करहु योग तप पवन सनेहा। रहे चार युग तुम्हरी देहा॥
जौलों पृथ्वी अकास सनेही। कबहुँ न विनसे तुम्हरी देही॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धर्मदास गहि टेके पायी। हे साहिब इक संसय आयी॥
कन्या मन को ध्यान बतावा। सो यह सकल जीव भरमावा॥

॥ सतगुरु वचन ॥

दास यह काल सुभाऊ। पुरुस भेद विस्तु नहिं पाऊ॥
मिन की यह देखहु बानी। अमृत गोय दियो विस सानी॥
त् कला दूजा जनि जानहु। निरख धर्म सत्यहिडर आनहु॥
गट सु तोहिं कहों समुझाई। धर्मदास परखेहु चितलाई॥
स परगट तस गुप्त सुभाऊ। जा रह हृदय सोबाहर आऊ॥
जब दीपक बारै नर लोई। देखहु ज्योति सुभाव बिलोई॥
देखत ज्योति पतंग हुलासा। प्रीति जान आवै तिहि पासा॥
परसत होवे भस्म पतंगा। अनजाने जरि मरहि तरंगा॥
ज्योति स्वरूप काल अस आही। कठिन काल वह छाड़त नाहीं॥
कोटि बिस्नु औतारह खाया। ब्रह्मा रुद्रहि खाय नचाया॥
कौन विपति जीवन को कहऊं। परखि वचन निसहंकहि रहऊं॥
लाख जीव वह नित्यहि खाई। असवि कराल सो काल कसाई॥

॥ धर्मदास ॥

धर्मदास कह सुनहु गुसाईं। मोरे चित संसय अस आई॥
अस्टंगीहि पुरुस उत्पानी। जिहि विधि उपजी सो मैं जानी॥
पुनि वहि ग्रास लीन्ह धर्मराई। पुरुस प्रताप सु बाहर आई॥
सो अस्टंगा अस छल कीन्हा। गोइसि पुरुस प्रगट यम कीन्हा॥
पुरुस भेद नहिं सुनत बतावा। काल निरंजन ध्यान करावा॥
तह कस चरित कीन्ह अस्टंगी। तजा पुरुस भई काल किसंगी॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्म सुनहु नन नारि सुभाऊ। अब तुहि प्रगट बरनि समझाऊ॥
होय पुत्री जेहि घर माहीं। अनेक जतन परितोसे ताहीं॥
वस्त्र भछ सुख सेज निवासा। घर बाहर सब तिहि विसवासा॥
यज्ञ कराय देय पितु माता। विदा कीन्ह हित प्रीति सों ताता॥
गयी सुता जब स्वामी गेहा। रात्यो तासु संग गुन नेहा॥
माता पिता सबै बिसरावा। धर्मदास अस नारि स्वभावा॥
आते आद्या भई निगानी। काल अंग ह्वै रही भवानी॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास बिनती चितलायी। ज्ञानी मोह कहो समझायी॥
यह तो सकल भेद हम पायी। अब ब्रह्मा को कहो उपायी॥
आद्या साप ताहि कहँ दीन्हा। तेहि पीछे ब्रह्मा कस कीन्हा॥

॥ कबीर बचन ॥

धर्मदास मैं सब कछु जानों। भिन्न भिन्न कर प्रगट बखानों॥
ब्रम्हा मन में भया उदासा। तब चलि गयो बिस्तु के पासा॥
जाय बिस्तु से विनती ठाना। तुम हो बंधु देव परधाना॥
तुम पर माता भई दयाला। हम सेवा बस भये बिहाला॥
निज करनी फल पायेउ भाई। किहि विधिदोस लगाऊं भाई॥
अब अस यत्न करोहो भ्राता। चले परिवार वचन रहे माता
कहे विस्तु छोड़ो मन भगा। मैं करिहौं सेवकाई संगा
तुम जेठे हम लहुरे भाई। चित संसय सब देहु वहाई
जो कोइ होवे भक्त हमारा। सो सेवे तुम्हरो परिवारा

॥ छद ॥

जग माहिं मैं ऐस दिढ़ाइ हौं फल पुन्य आसा जोय हो ॥
यज्ञ धर्मरु करे पुजा द्विज विना नहिं होय हो ॥
जो करे सेवा द्विज की तेहि महा पुन्य प्रभाव हो ।
सो जीव मो कहँ अधिक प्यारे राखि हौं निज ठांवहो ॥२८
सोरठा—ब्रह्मा भये आनन्द, जबहि विस्तु असभाखेऊ
मेंटउ चित कर दंद, साख मोर सब सुखी भौ ॥३८

॥ चौपाई ॥

बहु धर्मनि काल पसारा। इन ठग ठग्यो सकल संसा
ासा दै जीवन बिलमावै। जन्म जन्म पुनि ताहि सत
लि हरिचंद और वइरोचन। कुंती सुन औरो महि सो

ये सब त्यागी दानि नरेसा। इन कहँ लै राखे केहि देसा ॥
जस गंजन इन सबकी कीन्हा। सो जग जाने काल अधीना ॥
जानत है जग होय न शुद्धी। काल प्रबलहर सबकी बुद्धी ॥
मन तरंग में जीव भुलाना। निज घर उलटि न चीन्ह अजाना ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धर्मदास कह सुनो गुसाईं। तह की कथा मोहिं समझाई ॥
तुम प्रसाद जम को छल चीन्हा। निस्चय तुम्हरे पद चित दीन्हा ॥
भव बूड़त तुमही गहि राखा। सब्द सुधारस गोसन भाखा ॥
अब वह कथा कहो समझाई। साप अन्त किय कौन उपाई ॥
धर्मनि तुम सन कहो बखानी। भाखों ज्ञान अगम की बानी ॥
मातु साप गायत्री लीन्हा। उलटि साप पुनिमातहिं दीन्हा ॥
हम जो पाँच पुरुस की जोई। पाँचों की तुम माता होई ॥
बिना पुरुस तुहि जानि है बारा। सो जानही सकल संसारा ॥
दुहुन साप फल पायो भाई। उग्रहि भयो देह धरि आई ॥
यह सब द्वंद वाद ह्वै गयऊ। तब पुनि जगको रचना भयऊ ॥
चौरासी लख, योनिन भाऊ। चार खानि चारिहु निर्माऊ ॥

॥ छंद ॥

प्रथम अंडज रच्यो जननी चतुरमुख पिंडज कियो ॥
विस्नु ऊरमज रच्यो तबही रुद्र अस्थावर कियो ॥
कीन्ह रचि जेहि खानि चारो जीव बंधन दीन्ह हो ॥
होन लागी कृसी कारन करन कर्ता चीन्ह हो ॥२९॥

सोरठा--यहि विधि चारो खानि, चारहु रचि विस्तार किये ॥
धर्मदास चित जानि, बानी चारिउ चारको ॥२९॥

चार खानि की गिनती

॥ धर्मदास वचन चौपाई ॥

धर्मनि कहें जोरि युग पानी। तुम सतगुरु यह कहो बखानी ॥
चार खानि की उत्पति पाऊ। भिन्न भिन्न मुहि बरन सुनाऊ ॥
चौरासी लख योनिन धारा। कौन योनि केतिन विस्तारा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

कहँ कबीर सुन धर्मनि बानी। तुमसे योनिन भाव
भिन्न भिन्न सब कहु समुझायी। तुमसे संत न कछू
तुम जिन संका मानहु भाई। बचन हमार गहो

नौ लख जल के जीव बखानी। चतुर लक्ष पंछी परवानी॥
किरम कीट सत्ताइस लाखा। तीस लाख अस्थावर भाखा।
चतुर लक्ष मानुस परवाना। मानुस देह परम पद जाना।
और योनि परिचय यहिं पावे। कर्म बंध भव भटका खावे॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास नायो पद सीसा। यह समुझाय कहो जगदीसा॥
सकल योनि जिव एक समाना। किमि कारन नहिं इक सम ज्ञाना॥
सो चरित्र मुहि कहौ बुझाई। जाते चित संसय मिट जाई॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सुनु धर्मनि निज अंस अभूसन। तोहिं बुझाय कहौं यह दूसन॥
चार खानि जिव एकै आहीं। तत्व बिसेस अहैं सुन ताहीं॥
सो अब तुम सों कहौं बखानी। एक तत्व अस्थावर जानी॥
ऊस्मज दोय तत्व परवाना। अन्डज तीन तत्व गुन जाना॥
पिंडज चार तत्व गुन कहिये। पाँच तत्त्व मानुस तन लहिये॥
तासों होय ज्ञान अधिकारी। नर की देह भक्ति अनुसारी॥

॥ धमदास बचन ॥

हे साहिब मुहि कहु समझाई। कौन कौन तत्व इन सब पाई॥
अंडज अरु पिडज के संगा। उस्मज और अस्थावर अंगा॥
सो साहिब मोहि बरनि सुनाओ। करो दया जनि मोहि दुराओ॥

सतगुरु बचन

॥ छंद ॥

सतगुरु कहँ सुन दास धर्मनि तत्व खानि निर्वेरनों॥
जानि खानि जो तत्व दीन्हों कहौं तुमसो टेरनों॥
खानि अन्डज तीन तत्व हैं अप वायु अरु तेज हो॥
अचल खानी एक तत्वहि तत्व जल का थेग हो॥ ३०॥

सोरठा—उस्मज तत हैं दोय, वायु तेज सम जानिये॥
पिडज चारहिं सोय, पृथ्वि तेज अप वायु सम॥३०॥

॥ चौपाई ॥

पिडज नर की देह सँवारा। तामें पाँच तत्व विस्तारा॥
ताते ज्ञान होय अधिकाई। गहे नाम सत लोकहि जाई॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास कह सुन बन्दी छोरा। इक संसय मेंटो प्रभु मोरा॥
नर नारि तत्व सम आहीं। इक सम ज्ञान सबन को नाहीं।

दया सील सन्तोस क्षमा गुन। कोइ सून्य कोइ होय संपुरन॥
कोइ मनुस्य होय अपराधी। कोइ सीतल कोइ काल उपाधी॥
कोइ मारि तन करे अहारा। कोई जीव दया उर धारा॥
कोई ज्ञान सुनत सुख माने। कोई काल गुनवाद बखाने॥
नाना गुन किहि कारन होई। साहिब बरन सुनाओ सोई॥

चार खानि की परख

॥ सद्गुरु बचन ॥

धर्म दास परखहु चित लायी। नर नारी गुन कहुँ समझायी॥
चारों खानि जीव भरमाया। तब ले नर को देह धराया॥
देह धरे छोड़े जस खाना। तैसे ता कहँ ज्ञान बखाना॥
लक्षन और अप लक्षन भेदा। सो सब तुम सो कहौं निसेदा॥

॥ अन्डज ॥

प्रथम कहौं अन्डज की बानी। एकहि एक कहौं बिलछानी॥
आलस निद्रा सा कहँ होई। काम क्रोध दारिद्री सोई॥
चोरी चंचल अधिक सुहाई। तृस्ना माया अधिक बढ़ाई॥
चोरी चुगली निंदा भावे। घर बन झारी अग्नि लगावे॥
रोवे कूदे मंगल गावे। दूत भूत सेवा मन लावे॥
देखत देत और पुनि काहू। मन मन झंख बहू पछताहू॥
बाद विवाद सबै सों ठाने। ज्ञान ध्यान कछु मनहिं न आने॥
गुरु सतगुरु चीन्हें नहिं भाई। वेद सास्त्र सब देह उठाई॥
आपन नीच ऊँच मन होई। हम समसरि दूसर ना कोई॥
मैले बस्तर नहीं नहाई। आँख कीच मुख लार बहाई॥
पाँसा जुवा चित्त मन आने। गुरु चरनन निसि दिन नहिं जाने॥
कुबरा मूढ़ ताहि का होई। लम्बा होय पाव पुनि सोई॥

॥ छंद ॥

यहि भाँति लक्षन मैं कहा तुम सुनहु धर्मनि नागरू॥
अन्डज खानि न गोय राखौं कहो भेद उजागरू॥
यह खानि वर्नन कहौं तोसों कछू नाहिं छिपायऊ॥
सो समुझ बानी जीव थिरकै धोख सकल मिटायऊ॥३९॥

॥ उष्मज ॥

सोरठा—दूजी खानि बताय, ताहि लक्षन तोसो कहौं॥
उस्मज ते जिय आय, नर देही जिन पाइया॥ ३१॥

॥ चौपाई ॥

कहैं कबीर सुनो धर्म दासा। उस्मज भेद कहौं परकासा॥
जोहि सिकार जीव बहु मारे। बहुते अनंद होय तिमि बारे॥

मारि जीव जब घर कहँ आयी । बहु विधि राध ताहि कहँ खायी ॥
निंदे नाम ज्ञान कहँ भाई । गुरु कहँ मेटि करे अधिकाई ॥
निंदे सब्द और गुरु देवा । निंदे चौका नरियर मेवा ॥
बहुत बात बहुते नरिआई । कथे ज्ञान बहुतै समुझाई ॥
झूठे वचन सभा में कहई । टेढ़ी पाग छोर उरमई ॥
दया धर्म मनहीं नहिं आवे । करें पुन्य तेहि हाँसी लावे ॥
भाल तिलक अरु चंदन करई । हाट बजार चिकन पट फिरई ॥
अन्तर पापी ऊपर दाया । सो जिव यम के हाथ बिकाया ॥
लंबे दाँतरु वदन भयावन । पीरे नेत्र ऊँच अति पावन ॥

॥ छंद ॥

कहे सतगुरु सुनहु धर्मनि भेद भल तुम पाइया ॥
सतगुरु बिना ना पावई तुम भली बिधि दरसाइया ॥
भेटिया तुम मोहिं को कुछ नाहिं तोहि दुराइहों ॥
जो बूझि हो तुम मोहिं सोई सकल भेद बताइहों ॥ ३२ ॥

॥ स्थावर ॥

सोरठा—तीजे खानि सुभाव, अचल खानि की युक्ति यह ।
नर देही तिन पाव, ताकर लछन अब कहों ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥

अचल खानि को कहों सँदेसा । देह धरे होवे जस भेसा ॥
छनक बुद्धि होवे जिव केरी । पलटत बुद्धि न लागे बेरी ॥
झगा फेंटा सिर पर पागी । राज द्वार सेवा भल लागी ॥
घोड़ा पर होवे असवारा । तीर खरग औ कमर कटारा ॥
इत उत चितवत सैन जुमारहि । पर नारी कहँ सैन बुलावहि ॥
रस सों बात कहें मुख जानी । काम बान लागे उर आनी ॥
पर घर ताकहिं चोरों जायी । पकर बाँधि राजा पहँ लायी ॥
हाँसी करें सकल पुनि नाई । लाज सर्म उपजे नहिं भाई ॥
छन इक मन महँ पूजा करई । छन इक मन सेवा चित धरई ॥
छन इक मन महँ बिसरे देवा । छन इक मन महँ कीजे सेवा ॥
छन इक ज्ञानी पोथी बाँचा । छन इक माहिं सब्बन घरनाचा ॥
छन इक मन में सुरी कहोई । छन इक में कादर हो सोई ॥
छन इक मन में कीजे धर्मा । छन इक मन में करे अकर्म्मा ॥
न करत माथ खजुआई । बाँह जाँघ पुनि भींजत भाई ॥

भोजन कर सोय पुनि जाई। जो जगाय तिहि मारन धाई॥
आंखें लाल होहि पुनि जाकी। कहँलग भेद कहों मैं ताकी॥

॥ छंद ॥

अचल खानी भेद धर्मनि छनक बुद्धि होय हो॥
छन माहिं करके मेट डारे कहों तुम सों सोय हो॥
मिलै सतगुरु सत्य जा कहँ खान बुद्धि सब मेटही॥
गुरु चरन लीन अधीन होवै लोक हंसा पैठही॥ ३३॥

॥ पिंडज ॥

सोरठा-सुनहु हो धर्मदास, पिंडज लछन गुणहि जो॥
सो कहों तुम्हरे पास, चौथिखानि की युक्ति ही॥ ३२॥

॥ चौपाई ॥

पिंडज खानिक लेख सुनाऊँ। गुन औगुन को भेद बताऊँ॥
वैरागी उनमुनि मति धारी। करे धर्म पुनि वेद विचारी॥
तीरथ औ पुनि योग समाधा। गुरु के चरन चित्त भल बांधा॥
वेद पुरान कथे बहु ज्ञाना। सभा बैठि बाते भल ठाना॥
राज योग कामिनि सुख माने। मन संका कबहूँ नहिं आने॥
धन संपति सुख बहुत सुहायी। सहज सुपेद पलंग बिछायी॥
उत्तम भोजन बहुत सुहाई। लौंग सुपारी बीरा खायी॥
खरचे दाम पुन्य महँ सोई। हिरदे सुचिताकर पुनि होई॥
चछु तेज जाकर पुनि जानी। पराक्रम देही बल ठानी॥
देखो स्वर्ग सदा तेहि हाथा। देख प्रतीमा नावे माथा॥

॥ छंद ॥

बहुत लीन अधीन धर्मनि ताहि जिव कहँ जानि हो॥
सतगुरु चरन निसिदिन गहे सत सब्द निस्चय मानि हो॥
एक एक विलोय धर्मनि कह्यो सत मैं तोहि सों॥
चार खानी लछ भाखउँ सुनो आगे मोहि सों॥ ३४॥

॥ मनुष्य ॥

सोरठा—छूटे नर की देह, जन्म धरे फिर आय के॥
ताको कहौं संदेह, धर्मदास सुन कानदे॥ ३५॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई॥

हे स्वामी इक संसय आई। सो पुनि मोहिं कहो समझाई॥
चौरासी योनिन भरमावे। देव मनुस की देही पावे॥
यहविधि मोसन कहो बुझायी। अब कैसे यह संधि लखायी॥

सो चरित्र गुरु मोहिं लखाऊ। धर्मदास गहि टेक पाऊ॥
मानुस जन्म धरे पुनि आयी। लछन तासु कहो समुझायी॥

॥ कबीर वचन ॥

धर्मदास तुम भलि विधि जानो। होय चरित्र सो भते बखानो॥
आइ अछन जो नरभर जाई। जन्म धरे मानुस को आई॥
जो पुनि मूरख ना पतियायो। दीपक बाती देख जरायी॥
वहु विधि तेल भरे पुनि ताही। लागत वायु तबै बुझ जाही॥
अग्नि लाय केनाहि लिसावे। यहि विधि जीवहिं देह धरावै॥
ताको लछन सुनहु सुजाना। तुमसों गोय न राखूं ज्ञाना॥
सूरा होवे नर के माँहीं। भय डर ताके निकट न जाहीं॥
माया मोह ममता नहिं व्यापे। दुस्मन ताहि देख डर कापे॥
सत्य सब्द प्रतीत कर माने। निंदा रूप न कबहीं जाने॥
सतगुरु चरन सदाचित राखे। प्रेम प्रीति सो दीनन भाखे॥
ज्ञान अज्ञान दोइ कहँ बूझे। सत्य नाम परिचय नित सूझे॥
जो मानुस अस लछन होई। धर्मदास लखि राखो सोई॥

॥ छन्द ॥

जन्म जन्म को मैल छूटे पुरुस सब्द जो पावई॥
नाम भाव सुमिरन गहे सो जीव लोक सिधावही॥
गुरु सब्द निस्चय दृढ़ गहे सो जीव अमिय अमोल हो॥
सतनाम बलनिज घरचले मिलि हंसकरे कलोल हो॥३५॥

सोरठा—सत्य नाम परताप, काल न रोके जीव कहँ॥
देखि वंस को छाप, काल रहे सिर नाय के॥३५॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई॥

चार खानि के बूझेउ भाऊ। जो बूझों सो मोहि बताऊ॥
चौरासी योनिन की धारा। किहि कारन यह कीन्ह पसारा॥
नर कारन यह सृष्टि बनाई। कै कोइ और जीव भुगताई॥
हे साहिब जिनि मोहि डराओ। कीजे कृपा विलंब जिनि लाओ॥

॥ सतगुरु वचन॥

धर्मनि नर देही सुखदायी। नर देही गुरु ज्ञान समायी॥
सो तनु पाय आप जहँ जावे। सतगुरु भक्ति बिना दुख पावे॥
नर तनु काज कीन्ह चौरासी। शब्द न गहे मूढ़ मति नासी॥
चौरासी की चाल न छाँड़े। सत्य नाम सो नेह न माड़े॥
लै डारे चौरासी माही। ताहू तें जिव चेतन नाहीं॥

बहुत भाँति ते कहि समुझावा। जीवन विपति जान गुहरावा॥
तह तनु पाय गहे सतनामा। नाम प्रताप लहे निज धामा॥

॥ छंद ॥

आदि नाम विदेह अस्थिर परिख जो जियरा गहे॥
पाय बीरा बंस को सुमिरन गुरु कृपा मारग लहे॥
तजि काग चाल मराल पथ गहि नीर छीर निवारि के॥
ज्ञान दृष्टि अदृष्टि देखे छर अछर सु विचारि के॥३६॥
सोरठा—निह अछर है सार अछर ते लखि पावई॥
धर्मनि करो विचार, निह अछर निह तत्व है॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई ॥

धर्मदास कहे सुभ दिन मोरा। हे प्रभु दर्सन पायउ तोरा॥
मुहि किंकर पर दाया कीजे। दास जानि मुहिं यह वर दीजे॥
निस दिन रहों चरन लौलीना। पल इक चित्त न होवे भीना॥
तुव पद पंकज रुचिर सुहावन। पद पराग बहु पतितन पावन॥
कृपा सिंधु करुनामय स्वामी। दया कीन्ह मोहि अंतर्यामी॥
हे साहिब मैं तव बलिहारी। आगल कथा कहो निरवारी॥
चारखानि रचि पुनि कस कीन्हा। सो सब मोहि बतावो चीन्हा॥

सद्गुरु वचन

सुनु, धर्मनि यह है यम बाजी। जेहि नहिं चीन्हें पंडित काजी॥
जो यम ताहि गोसइयाँ भाखे। तजे सुधा नर विख कहँ चाखे॥
चारिहु मिलि यह रचना कीन्हा। कचा रंग सु जीवहि दीन्हा॥
पाँच तत्व तीनों गुन जानो। चौदह यम तेहि सँग पहिचानो॥
यहि विधि कीन्ही नरकी काया। मार खाय बहुरि उपजाया॥
ओंकार है वेद को मूला। ओंकार में सब जग भूला॥
है ओंकार निरंजन जानो। पुरुस नाम सो गुप्त अमानो॥
सहस अठासी ब्रह्मा जाया। भा विस्तार काल की छाया॥
ब्रह्मातें जिव उपजे बारा। तिनु पुनि कथं बहुत विस्तारा॥
स्मृति सास्त्र पुरान बखाना। तामें सकल जीव उरझाना॥
जीवन को ब्रह्मा भटकावा। अलख निरंजन ध्यान दृढ़ावा॥
वेद मते सब शिव भरमाने। सत्य पुरुस को मर्म न जाने॥
निरंकार कस कीन्ह तमासा। सो चरित्र बूझो धर्मदासा॥

॥ छन्द ॥

असुर है जीवन सतावै देव ऋसि मुनि झारकं॥
पुनि धरि औतार रक्षत असुर करें संहारकं॥

जीव को दिखलाय लीला आपनी महिमाघनी ॥
यहि जान जीवन बाँधि आसा यही है रक्षक धनी ॥
सोरठा—रक्षक कला दिखाय, अंत काल भक्षन करै ॥
पीछे जिव पछताय जबहि काल के मुख परे ॥३७॥

यम का फन्दा रच कर जीवों को बन्धन और कष्ट में डालना

॥ चौपाई ॥

अड़सठ तीरथ ब्रह्मा थापा । अकरम कर्म पुन्य औ पापा ।
बारह रासि नखत सत्ताइस । सात वार पंद्रह तिथि बाइस ॥
चारों युग तब बान्धै तानी । घड़ी दंड स्वासा मनुमानी ॥
कार्तिक माघ पुन्न कहि दीन्हा । यम बाजी कोइ विरले चीन्हा ॥
तीरथ धामकी बाँधि महातम । तजे न भर्म न चीन्हें आतम ॥
पाप पुन्य महँ सबै फँदावा । यहि विधि जीव सबै उरझावा ॥
सत्य सब्द बिनु बाँचै नाहीं । सार सब्द बिन यम मुख जाहीं ॥
त्रास जानि जिव पुन्य कमावे । किचिंत फल तेहि छुधा न जावे ॥
जब लग पुरुस डोर नहिं गहई । तब लग योनिन फिर फिर लहई ॥
अमित कला जम जीवन गावे । पुरुस भेद जीव नहिं पावे ॥
लाभ लोभ जिव लागे धायी । आसा बंध काल धर खायी ॥
यम बाजी कोइ चीन्ह न पावे । आसा दे यम जीव नचावे ॥
प्रथम सतयुग को व्यवहारा । जीवहि यम लै करे अहारा ॥
लछ जीव यम नित प्रति खाई । महा अपरबल काल कसाई ॥
तप्त सिला निसदिन तहँ जरई । तापर लै जीवन कहँ धरई ॥
जीव हिजारे कष्ट दिखावे । तब फिर लै चौरासी नावे ॥
ता पीछे योनिन भरमावे । यहि विधि नाना कष्ट दिखावे ॥
बहुविधि जीवन कीन्ह पुकारा । काल देत है कष्ट अपारा ॥
यम कर कष्ट सही नहिं जाई । हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई ॥

तप्तसिला को कस्ट पाकर जीवों का गुहार करना और कबीर साहब का उन्हें छुड़ाना ।

॥ छन्द ॥

जब देख जीवन को विकल अति दया पुरुस जनाइया ॥
दयानिधि सत पुरुस साहिब तबै मोहि बुलाइया ॥
कहे मुहिं समझाय बहु विधि जीव जाय चितावहू ॥
तुव दर्सते हो जीव सीतल जाय तपन बुझावहू ॥ २८ ॥

सोरठा—आज्ञा लीन्ही मान, पुरुस सिखावन सीस धर ॥
ततछन कीन्ह पयान, सीस नाय सतपुरुस कहँ ॥ ३८ ॥

॥ चौपाई ॥

आये जहँ यम जीव सतावे । काल निरंजन जीव नचावे ॥
चट पटक्कर जीव तहँ भाई । ठाड़े भये तहां पुनि जाई ॥
मोहि देख जिव कीन्ह पुकारा । हे साहिब मुहि लेहु उबारा ॥
तब हम सत्य सब्द गुहरावा । पुरुस सब्द ते जीव जुड़ावा ॥
सकल जीव तब अस्तुति लाये । धन्य पुरुस भलि तपन बुझाये ॥
यम ते छोर लेव तुम स्वामी । दया करो प्रभु अन्तर्यामी ॥
तब मैं कहो जीव समुझायो । जोर करो तो वचन नसायो ॥
जब तुम जाय धरो जग देहा । तब तुम करिहो सब्द सनेहा ॥
पुरुस नाम सुमिरन सहिदाना । बीरा सार कहों परवाना ॥
देह धरो सत सब्द समाई । तब हम सत्य लोक लै जाई ॥
जहँ आसा तहँ बासा होई । मन बच कर्म सुमिर जो कोई ॥
देह धरे कीन्हेउ जिमि आसा । अन्त आय लीन्हेउ तहँ बासा ॥
जब तुम देह धरो जग जायी । बिसरो पुरुस काल घर खायी ॥
कहें जीव सुन पुरुस पुराना । देह धरी बिसरों नहिं ज्ञाना ॥
पुरुस जान सुमरेउ यमराई । बेद पुरान कहे समुझाई ॥
: पुरान कहें मति येहा । निराकार ते कीजे नेहा ॥
र नर मुनि तेतीस करोरी । बाँधे सबै निरंजन डोरी ॥
के मते कीन्ह मैं आसा । अब मोंहि चीन्ह परे यम फांसा ॥
नो जीव यह छल यम केरा । यह यम फन्दा कीन्ह घनेरा ॥

॥ छन्द ॥

काल कला अनेक कीन्हों जीव कारन ठाट हो ॥
वेद सास्त्र पुरान स्मृति अत रोके बाट हो ॥
आप तन धरि प्रगट ह्वै के सिफत आप कीन्हेऊ ॥
नाना गुन मन कर्म कीन्हे जीव बंधन दीन्हेऊ ॥३९॥

सोरठा—काल कराल प्रचण्ड, जीव परे बस काल के ॥
जन्म जन्म भरदण्ड, सत्य नाम चीन्हे बिना ॥३९॥

॥ चौपाई ॥

छनइक जीवन कहँ सुख दयऊ । जीव प्रबोध पुरुस पहँ गयऊ ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धर्मदास अस बिनती लायी । ज्ञानी मोहि कहो समझायी ॥
तुम तो गये पुरुस दरबारा । किहि बिधि आये यहि संसारा ॥

जो कछु पुरुस सब्दमुख भाखी। सो साहिब मोहिं गोप नराखी ॥
कौन सब्द ते जीव उबारा। सो साहिब सब कहो विचारा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

पुरुस मोहिं जैसी फुरमायी। सो सब तुम सों संधि लखायी ॥
कहउ मोहि बहुविधि समुझायी। जीवहि आनो सब्द चितायी ॥
गुप्त वस्तु प्रभु मो कहँ दीन्हा। नाम विदेह मुक्ति कर चीन्हा ॥
दीन्ह पान परवाना हाथा। संधि छाप मोहिं सौंप्यो नाथा ॥
विनु रसना ते सो धुनि होई। गुरुगम ते लखि पावे कोई ॥
पंथ अमीय मुक्ति का मूला। जातें मिटे गर्भ अस्थूला ॥
यहि विधिनाम गहे जो हंसा। तारौं तासु इकोतर वंसा ॥
नाम डोरिगहि लोकहि जायी। धर्म राय तिहि देखि डरायी ॥
ज्ञानी करो सिष्य जेहि जाई। तिनका तोरो जल अँचवाई ॥
जिहि विधि दीन्ह तुमहि मैं पाना। तेहि विधिदेहु सिष्य सहिदाना ॥

॥ गुरु महिमा ॥

गुरुमुख सब्द सदा उर राखे। निसि दिन नाम सुधारस चाखे ॥
पिया नेह जिमि कामिनि लागे। तिमि गुरु रूप सिष्य अनुरागे ॥
पलक पलक निरख गुरु कान्ती। सिष्य चकोर गुरु ससि सान्ती ॥
पतिव्रता जिमि पतिव्रता ठाने। द्वितिय पुरुस सपने नहिं जाने ॥
पतिव्रता दोउ कुलहिं उजागर। यह गुन गहे सत मति आगर ॥
ज्यों पतिव्रता पिया मन लावे। गुरु आज्ञा अस सिस्य जुगावे ॥
गुरु ते अधिक और कोइ नाहीं। धर्मदास परखहु हिय माहीं ॥
गुरु दयाल अस है सुखदाई। देहिं मुक्ति को पथ लखाई ॥
गुरु ते अधिक कोई नहि दूजा। भर्म तजो करु सुतगुरु पूजा ॥
तीर्थ धाम देवल अरु देवा। सीस अर्पिते लावें सेवा ॥
तौ नहिं वचन कहें हितकारी। भूले भरमें यह संसारी ॥

॥ छन्द ॥

गुरु भक्ति अटल अमान धर्मनि यहि सरस दूजा नहीं ॥
जपयोग तप व्रत दान पूजा तृन सदृश यह जग कही ॥
सतगुरु दया जिमि संत पर तिहि हृदय इही विधि अवाई ॥
ममगिरा परखे हरसि के हिय तिमिर मोह नसावई ॥ ४० ॥
सोरठा—दीपक सतगुरु ज्ञान, निरखहि संत अंजोर तेहि ॥
पावे मुक्ति अमान, सत्य गुरु जेहि दया करे ॥

॥ चौपाई ॥

सुकदेव भय गर्भयोगेस्वर। सो निज राम नहिं भाखेउ दूसर ॥
तप के तेज गये हरि धामा। गुरु बिन नाहिं लहे विश्रामा ॥
विस्णु कहे असि कहँवा आये। गुरु विहीन तप तेज भुलाये ॥
गुरु विहीन नर मोहिन भावे। फिर २ योनी संकट आवे ॥
जांहु पलटि गुरुकरहु सयाना। तब पैहो इहवाँ विश्रामा ॥
सुनि सुकदेव मुनि वेगि सिधाये। गुरु विहीन तहँ रहन न पाये ॥
जनक विदेह कीन्ह गुरु जानी। हरसि मिलै तब सारंग पानी ॥
नारद ब्रह्मा सुत वड़ ज्ञानी। यह सब कथा जगत में जानी ॥
और देव असिमुनि वर जेते। निज गुरु कीन्ह उतर से तेते ॥
जो गुरु तो पंथ बतावे। सार असार परख दिखलावे ॥
गुरु सोई सत्य बतावे। और गुरु कोई काम न आवे ॥
सत्य पुरुस का कहे संदेसा। जन्म जन्म का मिटे अंदेसा ॥
पाप पुन्य की आसा नाहीं। बैठे अक्षय वृक्ष की छाहीं ॥
भृंगी मत होवे जिमि पासा। सोई गुरु सत्य सुनो धर्मदासा ॥

॥ छंद ॥

जो रहित घर बतलावई सो गुरु सांचा मानिये ॥
तीन तजि मिल आव चौथे तासु वचन प्रमानिये ॥
पाँच तीन अधीन काया न्यार सब्द विदेह है ॥
देह मोहिं विदेह दरसै गुरु मता निज एह है ॥४१॥
सोरठा--असगुरु कर बयान, बहुरि न जग देही धरे ॥

॥ कबीर साहिब का प्राकट्य ॥

॥ धर्मदास वचन। चौपाई ॥

हे प्रभु मोहि कृतारथ कीन्हा। पूरन भाग्य दर्सन मुहि दीन्हा ॥
तव गुन मोसन बरनि न जाई। मोहि अचेतहि लीन्ह जगाई ॥
सुधा वचन तुव मोहि प्रिय लागे। सुनतहिं वचन मोह मद भागे ॥
अब वह कथा कहो समझायी। जिहि विधि जग में आयी ॥

॥ सत्ययुग की कथा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास जो पूछ्यो मोहीं। युगयुग कथा कहौं मैं तोहीं ॥
प्रथम चलेउ जीव के काजू। पुरुस प्रताप जाव पर छाजू ॥

सतयुग सतकृत मम नाऊँ। आज्ञा पुरुस जीववर आऊँ॥
करि प्रनाम तबहीं पग धारा। पहुंचे आय धर्म दरबारा॥
मो कहँ देखि धर्मढिग आवा। महाक्रोध बोला अतुरावा॥
योगजीत इहंवा कस आवो। सो तुम हम सो बचन सुनावो॥
कै तुम हम को मारन आये। पुरुस वचन सो मोहि सुनाये॥

॥ योग जीत बचन॥

तोसों कहौं सुनो धर्म राई। जीव काज संसार सिधाई॥
तुम तो कस्ट जीव कहँ दीन्हा। तबहि पुरुस मोहि आज्ञा कीन्हा॥
जीव चिताय लोक लै आऊ। काल कस्ट तें जीव बचाऊ॥
ताते मैं संसारहि जाऊं। दे परवाना लोक पठाऊं॥

॥ धर्मराय बचन॥

यह सुनि काल भयङ्कर भयऊ। हमकहं त्रास दिखावन लयऊ।
सत्तर युग हम सेवा कीन्ही। राज बड़ाई पुरुस मुहिं दीन्ही॥
फिर चौंसठ युग सेवा ठयऊ। अस्ट खंड पुरुष मुहिं दयऊ॥
तब तुम मारि निकारे मोही। योग जात नहिं छांड़ों तोही॥
अब हम जान भली विधि पावा। मागें तोहीं लेऊं अब दावा॥

॥ योगजीत बचन॥

तब हम कहा सुनो धर्मराया। हम तुम्हरे डर नाहिं डराया॥
हम कहँ तेज पुरुस बल आहीं। अरे काल तुव डर मोहि नाहीं॥
पुरुस प्रताप सुमिरि तिहिवारा। सब्द अंग ले कालहि मारा॥
ततछन दृष्टि ताहि पर हेरा। स्याम ललाट भयो तिहि बेरा॥
पख घात जस होय पखेरू। ऐसे काल मोहि पहँ हेरू॥
करे क्रोध कछु नाहिं बसाई। तब पुनि परेउ चरन तर आई॥

"धर्मराय बचन"

॥ छंद॥

कह निरजन सुनो ज्ञानी करो विनती तोहि सों॥
जान बधु विरोध कीन्हों घाट भयी अब मोहि सों॥
पुरुस सम अब तोहि 'जानो नाहिं' दूजी भावना॥
तुम बड़े सर्वज्ञ साहिब क्षमा छत्र तनावना॥ ४२॥
सोरठा—तुमहुँ करो बखसीस, पुरुस दीन्ह जस राजमुहि॥
सोड़स महँ तुम ईस, ज्ञानी पुरुस सु एक सम॥ ४२॥

॥ ज्ञानी वचन । चौपाई ॥

कहँ ज्ञानी सुनु राय निरंजन । तुम तो भये वंस में अंजन ॥
जीवन कहँ में आनब जाई । सत्य सब्द सत नाम दृढ़ाई ॥
पुरुस आज्ञा ते हम चलि आये । भौसागर ते जीव मुक्ताये ॥
पुरुस आवाज टारु यहि बारा । छनमहँ तो कहँ देउँ निकारा ॥

॥ धर्मराय वचन ॥

धर्मराय अस विनती ठानी । मैं सेवक द्वितिया नहिं जानी ॥
ज्ञानी विनती एक हमारा । सो न करहु जिहि मोर बिगारा ॥
पुरुस दीन्ह जस मो कहँ राजू । तुमहूँ देहु तो होवे काजू ॥
अब हम वचन तुम्हारा मानी । लीजो हंसा हम सो ज्ञानी ॥
विनती एक करों तुहि ताता । दृढ़ कर मानो हमरी बाता ॥
कहा तुम्हारे जीव नहिं मानही । हमरी दिस ह्वैवाद वखानही ॥
मैं दृढ़ फन्दा रची बनाई । जा में जीव रहैं उरझाई ॥
तिनहू बहु बाजी रचि राखा । हमरी डोरि ज्ञान मुखि भाखा ॥
केवल देव पखान पुजाई । तीरथ ब्रत जप तप मन लाई ॥
पूजा विश्व वाल देव अराधी । यह मति जीवन राख्यो बाँधी ॥
यज्ञ होम अरु नेम अचारा । और अनेक फन्द में डारा ॥
जो ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न माने कहा तुम्हारा ॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई । काटों फन्द जीव ले जाई ॥
जेतिक फन्द तुम रचे विचारी । सत्य सब्द ते सबै बिडारी ॥
जौन जीव हम सब्द दृढ़ावे । फन्द तुम्हार सकल मुक्तावे ॥
चौका करि परवाना पाई । पुरुस नाम तिहि देऊँ चिन्हाई ॥
ताके निकट काल नहिं आवे । संधि देख ताकहं सिर नावे ॥

॥ धर्मराय वचन ॥

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनहु युग जिव थोरे जाहीं ॥
चौथा युग जब कलियुग आवे । तब तुव सरन जीव बहु जावे ॥
ऐसा वचन हार मुहिं दीजे । तब संसार गवन तुम कीजे ॥
अरे का परपंच पसारा । तीनों युग जीवन दुख डारा ॥
विनती तोरि ,लीन्ह मैं जानी । मोकहँ ठगे काल अभिमानी ॥
जस विनती तू मो सन कीन्ही । सो अब बकसि तोहि कहँ दीन्ही ॥
चौथा युग जब कलियुग आया । तब हम आपन अंस पठाया ॥

॥ छन्द ॥

सुरति आठों बन्स सुकृत प्रगटि है जग जासके ॥
तो पीछे पुनि सुरत नौतम जाय ग्रह धर्मदास के ॥
अस ब्यालिस पुरूस के वे जीव कारन आवई ॥
कलि पंथ प्रकट पसारि के वह जीव लोक पठावई ॥
सोरठा–सत्य सब्द दे हाथ, जिहि-परवाना देइहैं ॥
सदा ताहि हम साथ, सो जिव यम नहिं पाय हैं ॥

॥ धर्मराय बचन । चौपाई ॥

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ । जीव उबार लोक लै जाऊ ॥
बंस छाप देखों जेहि हाथा । ताहि हंस हम नाउब माथा ॥
पुरुस अवाज लीन्ह मैं मानी । बिनती एक करौ तुहि ज्ञानी ॥
पंथ एक तुम आप चलाऊ । जीवन लै सत 'लोक पठाऊ ॥
द्वादस पंथ करो मैं साजा । नाम तुम्हार लै करों अवाजा ॥
द्वादस यम संसार पठैहों । नाम तुम्हार पंथ चलैहों ॥
मृतु अन्धा इक दूत हमारा । सुकृत ग्रह लैहै अवतारा ॥
प्रथम दूत मम प्रगटे जायी । पीछे अंस तुम्हारा आयी ॥
यहि विधि जीवन को भरमाऊँ । पुरुस नाम जीवन समझाऊँ ॥
द्वादस पंथ जीव जो ऐहैं । सो हमरे मुख आन समैं हैं ॥
एतिक विनती करों बनाई । कीजे कृपा देउ बगसाई ॥
दयावंत तुम साहिब दाता । एतिक कृपा करों हो ताता ॥
पुरुस साप मोकहँ अस दीन्हा । लख जीव नित ग्रासन कीन्हा ॥
जो जिव सकल लोक तुम आवे । कैसे छुधा लो मोरि बुझावे ॥
कलियुग प्रथम चरन जब आयी । तब हम बौद्ध सरीर बनायी ॥
राजा इन्द्र देवन पहँ जायब । जगन्नाथ मैं नाम धरायब ॥
राजा मण्डप मोर बनैहैं । सागर नीर खसावत जैहैं ॥
पुत्र हमार विस्नु तहँ आही । सागर ओइल सात तेहि पाही ॥
ताते मंडप बचन न पाई । उमँगे सागर लेइ डुबाई ॥
ज्ञानी एक माता निर्माऊ । प्रथमं सागर तीर सिधाऊ ॥
तुम कहँ सागर नाधि न जाई । तबही उदधि रहे मुरझाई ॥
यहि विधि मो कहँ थापिहु जाही । पीछे आपन अंस पठायी ॥
भव सागर तुम पंथ चलाओ । पुरुस नाम ते जीव बचाओ ॥

सन्धि छाप मोहि देहु बतायी। पुरुस नाम मोहि देहु समुझायी॥
बिना सन्धि जो उतरे घाटा। सो हंसा नहिं पावे बाटा॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

॥ छन्द ॥

धर्म जस तुम माँगहू सो चरित हम भल चीन्हिया॥
पंथ द्वादस तुम कहेऊँ सो अमी घोर बिस दीन्हिया॥
जो मेटि डारों तोहि को अब पलटि कला दिखावऊँ॥
लै जीव बंद छुड़ायो यम सों अमर लोक सिधावऊँ॥ ४४॥
सोरठा—पुरुस वचन अस नाहिं, यहै सोच चित्त कीन्हऊ॥
लै पहुँचाऊँ ताहि, सत्य सब्द दृढ जो गहे॥ ४४॥

॥ चौपाई ॥

द्वादस पंथ कहेउ अन्याई। सो हम तोहि दीन्ह बगसाई॥
पहिले प्रगटे दूत तुम्हारा। पीछे लेहि अंस औतारा॥
उदधि तीर कहँ मैं चलि आयब। जगन्नाथ को माड़ मड़ायब॥
ता पीछे हम पंथ चलायब। जीवन कहँ सतलोक पठायब॥

॥ धर्मराय वचन ॥

संधि छाप मोहि दीजे ज्ञानी। जस देहों हंसहि सहिदानी॥
जो जीव मो कहँ संध बतावे। ताके निकट काल नहिं आवे॥
नाम निसानी मो कहँ दीजे। हे साहिब यह दाया कीजे॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

जो तोहिं देहुँ संधि लखायी। जीवन काज होइहो दुखदायी॥
तुम परपंच जान हम पावा। काल चले नहिं तुम्हरो दावा॥
धर्मराय तोहि परगट भाखा। गुप्त अंक बीरा हम राखा॥
जो कोइ लैहै नाम हमारा। ताहि छोड़ि तुम होहु नियारा॥
जो तुम हंसहि रोको जाई। तो तुम काल रहन नहिं पाई॥

॥ धर्मराय वचन ॥

कह धर्म जाओ संसारा। आनहु जीव नाम आधारा॥
जो हंसा तुम्हरो गुन गायी। ताहि निकट तो हम नहिं जायी॥
जो कोइ जैहै सरन तुम्हारा। हम सिर पग दै होवे पारा॥
हम तो तुम सन कीन्ह ढिठाई। पिता जान किन्ही लरिकाई॥
कोटिन औगुन बालक करई। पिता एक हिरदय नहिं धरई॥
जो पितु बालक देइ निकारी। तब को रक्षा करे हमारी॥
धर्मराय उठ सीस नवायो। तब ज्ञानी संसार [illegible]

॥ ज्ञानी वचन ॥

जब हम देखा धर्म सकाना । तब तहवाँ ते कीन्ह पयाना ॥
कह कबीर सुनु धर्मनि नागर । तब मैं चलि आयउँ भौसागर ॥
आया चतुरानन के पासा । तासों कीन्ह सब्द परकासा ॥
ब्रह्मा चित दै सुनवे लीन्हा । पूछेयो बहुत पुरुस का चीन्हा ॥
तबहि निरंजन कीन्ह उपाई । जेष्ठ पुत्र ब्रह्मा मोरजाई ॥
निरजन मन घंट बिराजै । ब्रह्मा बुद्धी फेरि उपराजै ॥
निरंकार निर्गुन अविनासी । ज्योति स्वरूप सून्य के वासी ॥
ताहि पुरुस कहँ वेद बखाने । आज्ञा वेद ताहि हम जाने ॥
जब देखा तेहि काल दृढ़ायो । तहँ ते उठे बिस्नु पहुँ आयो ॥
बिस्नुहिं कह्यो पुरुस उपदेसा । काल बसि नहिं गहे संदेसा ॥
कहे बिस्नु मो सम को आही । चार पदारथ हमरे पाही ॥
काम मोछ धर्मारथ माही । चाहे जौन देहु मैं ताही ॥
सुनहुसो बिस्नु मोछ कस तोही । मोछ अछर परले तर होही ॥
तुम नाहीं थिर थिर कस करहू । मिथ्या साखि कवन गुन भरहू ॥
रहे सकुच सुन निर्भय बानी । निजहिय बिस्नु आपडर मानी ॥
तब पुनि नाग लोक चलि गयऊ । तासे कछु कछु कहिबे लयऊ ॥
पुरुस भेद कोउ जानत नाहीं । लागे सभे काल की छाहीं ॥
राखनिहार और चिन्हों भाई । यम सो को तुहिं लेत छुड़ाई ॥
ब्रह्मा बिस्नु रुद्र जिहि ध्यावें । वेद जासु गुन निसि दिन गावें ॥
सोइ पुरुष मोहि राखन हारा । सोइ तुमहि लै करि हैं गारा ॥
राखनिहार और कोउ आही । करु बिश्वास मिलाऊँ ताही ॥
सेस खानि बिस तेज सुभाऊ । बचन प्रतीत हृदय नहिं आऊ ॥
सुनहु सुलछन धर्मनिनागर । तब मैं आयउ या भवसागर ॥
आगे तब मृत मंडल माहीं । पुरुस जीव कोउ देख्या नाहीं ॥
का कहँ कहिये पुरुस उपदेसा । सो तो अधिकौ यम का भेसा ॥
जो घाती ताको विश्वासा । जो रछक तेहि बोल उदासा ॥
जाहि जपै सोइ जिव घर खाई । तब मम सब्द चेत चित आई ॥
जीव मोह बस चीन्हें नाहीं । तब अस भाव उपजी हिय माहीं ॥

॥ छन्द ॥

मोट डारो काल साखा प्रगट काल दिखावऊँ ॥
लेउँ जीवन छोरि यम सो अमर लोक पठावऊँ ॥

अति अधीन देखउ नर नारी। तासों हम अस वचन उचारी॥
जो कोइ मनिहै सब्द हमारा। ताकहं कोइ न रोकन हारा॥
जो जिय माने मम उपदेसा। मेटों ताकर काल कलेसा॥
पुरुस नाम परवाना पावे। यमराजा तिहि निकट न आवे॥
आनहु साज आरती केरा। काल कस्ट मेटों जिय केरा॥
कह खेमसरि प्रभु कहो बिलोई। कवन वस्तु लै आरति होई॥

॥ छन्द ॥

भाव आरति खेमसरि सुन तोहि कहुं समुझाय के॥
मिस्ठान्न पान कपूर केरा अस्ट मेवा लाय के॥
पाँच बामन स्वेत वस्तर कदलि पत्र अछेदना॥
नारियर अरु पुहुप स्वेतहि स्वेत चौका चंदना॥ ४७॥

सोरठा—यह आरति अनुमान, आनु खेमसरि साज सब॥
पुंगी फल सरमान, सब्द अंग चौका करे॥४७॥

॥ चौपाई ॥

और वस्तु आनहु सुठि पावन। गो घृत उत्तम स्वेत सुहावन॥
खेमसरि सुनेउ सिखावन आना। ततछन सब विस्तार सो आना॥
सेत चंदेवा दीन्हों तानी। आरति करी युक्ति विधि ठानी॥
हम चौका पर बैठक लयऊ। भजन अखंड सब्द धुन भयऊ॥
सत्य समय लै चौका साजा। ज्योति प्रकास अखंड विराजा॥
सब्द अंग चौका अनुमाना। मोरत नरियर काल बराना॥
पांच सब्द कहि तब दल फेरा। पुरुस नाम लीन्हों तिहि बेरा॥
जब भयो नरियर सिला संयोगा। करल सीस पुनि चम्पै रोगा॥
नरियर मोरत बास उड़ाई। सत्य पुरुस कह जानि जनाई॥
छन एक बैठे पुरुस तहँ माई। सकल सभा उठि आरति लाई॥
तब पुनि आरत दीन्ह मंड़ाई। तिनका तोर जल अंचवाई॥
प्रथम खेमसरि लीन्हों पाना। ताके पीछे सब जीव जाना॥
दीन्हेउ सब्द अंग समुझाई। जोननाम ते हंस बचाई॥
रहनि गहनि सब दीन दृढ़ाई। सुमिरत नाम हंस घर जाई॥

॥ छन्द ॥

हंस [illegible] [illegible] [illegible] भयेउ मुक सागर करी॥
सत पुरुस [illegible] [illegible] [illegible] के अंकम भरी॥

॥ चौपाई ॥

कहैं खेमसरि पुरुस पुराना । कहँवा ते तुम कीन्ह पयाना ॥
तासों कहेउ सब्द उपदेसा । पुरुस भाव अरुयम को भेसा ॥
सुना खेमसरि उपजा भाऊ । जब चीन्हा सवयम को दाऊ ॥
पै धोखा इक ताहि रहायी । देखे लोक तब मन पतियायी ॥
राखेउ देह हंस लै धावा । पल इक माहिं लोक पहुँचावा ॥
लोक दिखाय हंस लै आयो । देह पाय खेमसरि पछतायो ॥
हे साहब लै चलु बहिदेसा । यहाँ बहुत है काल कलेसा ॥
तासों कहेउ सुनो यह बानी । जो मैं कहुँ लेहु सो मानी ॥
जब लौं टीका पूर न भाई । तब लगे रहो नाम लौ लाई ॥
तुम तो देखो लोक हमारा । जीवन को उपदेसहु सारा ॥
एकहु जीव सरनागत आवे । सो जिव सत्य पुरुस को भावे ॥
जैसे गऊ बाघ मुख जायी । सो कपिलहि कोइ आय छुड़ायी ॥
ता नर को सबसुयस बखाने । गऊ छुड़ाय बात ते आने ॥
जस कपिला कहँ केहँरि त्रासा । ऐसे काल जीव कहँ ग्रासा ॥
एक जीव जो भक्ति दृढ़ावे । कोटिके गऊ पुन्य सो पावे ॥
खेमसरि पर चरन पर आई । हे साहिब मोहि लेहु बचाई ॥
मो पर दाया करहु प्रकासा । अब नहिं परों कालके फांसा ॥
सुन खेमसरि यह यम को देसा । बिना नाम नहिं मिटै अंदेसा ॥
पान प्रवान पुरुस की डोरी । लेहि जीव यम तिनका तोरी ॥
पुरुस नाम बीरा जब पावै । फिरके भवसागर नहिँ आवै ॥
कह खेमसरि परवाना दीजै । यम सो छोरि अपन करि लीजै ॥
और जीव हमर ग्रह आही । साहिब नाम पान देउ ताही ॥
मोरे ग्रह अब धारिये पाऊँ । मुक्ति संदेस जीवन समझाऊँ ॥
गयेऊ तासु ग्रह भाव समागम । परऊ चरनतर नारि सुधा सम ॥
खेमसरि सब कहि समझाई । जन्म सुफल करूरे सब भाई ॥
जीव मुक्ति चाहो जो भाई । सतगुरु सब्द गहो सो भाई ॥
यम सो यही छुड़ावन हारा । निस्चय मानो कहा हमारा ॥
सब जीवन परतीत दृढ़ावा । खेमसरी संग सब जीव आवा ॥
आय गहे सब चरन हमारा । साहिब मोर करो निस्तारा ॥
जाते यम नहिं मोहि सताये । जन्म जन्म दुख दुसह नसाये ॥

सत्य पुरुस की आयसु पाऊँ। कालहि मेट छोर जिव लाऊँ॥
जोर करों तो वचन नसायी। सहजहिं जीवन लेऊँ चितायी॥
जो ग्रासे जिव सेवैं ताही। अनचीन्हे यम के मुखजाही॥
चहु दिस फिर आयेउँ गढ़ लंका। भाट विचित्र मिल्यो निःसंका॥
तिहि पुनि पूछेउ मुक्ति संदेसा। तासों कह्यो ज्ञान उपदेसा॥
सुना विचित्र तवहिं भ्रम भागा। अतिअधीन ह्वै चरनन लागा॥
कहे सरन मुहि दीजै स्वामी। तुम सत पुरुस आहु सुख धामी॥
कीजे मोहिं कृतारथ आजू। मोरे जिवकर कीजे काजू॥
कह्यो ताहि आरति को लेखा। खेमसरिरहि जस भासेउ रेखा॥
अनेहु भाव सहित सब साजा। आरति कीन्ह सब्द धुनिगाजा॥
तृन तोर वीरा तिहि दीन्हा। ताके ग्रह में काहु न चीन्हा॥
सुमिरन ध्यान ताहि सों भाखा। पुरुस डोरि गोय नहिं राखा॥

॥ छन्द ॥

विचित्र वनिता गयी नृप ढिग जाय रानी सो कही॥
इक योगि सुन्दर है महामुनि तासु महिमा को कही॥
स्वेत कला अपार उत्तम और नहिं अस देखेऊँ॥
पनि हमारे सरन गहि तिहि जन्म सुभ निज करि लेखेऊँ॥५०॥

सोरठा—सुनत मन्दोदरि जाय दरस लेन अकुलानऊ॥
वृसली संग लिवाय, कनक रतन लै पगु धर्यो॥५०॥

॥ चौपाई ॥

चरन टेकि के नायो सीसा। तव मुनीन्द्र पुनि दीन्ह असीसा॥
कहे मन्दोदरि धनि सुभ दिन मोरी। विनती करों दोइ कर जोरी॥
ऐसा तपसी कबहूँ न देखा। स्वेत अंग सब स्वेतहि भेखा॥
जिव कारज मम हो जिहि भाँती। सो मोहि कहो तजों कुल जाती॥
अब अति प्रिय मोहीं तुम लागे। तुम दयालसकलहु भ्रम भागे॥
सुनहुँ वधू प्रिय रावन केरी। नाम प्रताप कटे यम वेरी॥
ज्ञान दृस्टि सों परखहु भाई। खरो खोट तेहि देउँ चिन्हाई॥
पुरुस अमान अजर मनिसारा। सो तो तीन लोक तें न्यारा॥
तेहि साहिव कहँ सुमिरै कोई। आवागमन रहित सो होई॥
सुनतहि सब्द तासु भ्रम भागा। गह्यो सब्द सुचिमन अनुरागा॥
हे साहिव मोहि लीजे सरना। मेटहु मोर जन्म अरु मरना॥

बूझि कुसल प्रसन्न बहु विधि मूल जीवन के धनी ॥
बंधु हर्सित देख सोभा सकल अति सुन्दर धनी ॥ ४८ ॥
सोरठा-सोभा वरनि न जाय, धर्मनि हंसन कान्ति कर ॥
रवि खोड्स ससि काय, एक हंस उजियार जौ ॥४८ ॥

॥ चौपाई ॥

कछु दिन कीन्हों लोक निवासा । देखेउ आय बहुरि निज दासा ॥
निसिदिन रहा गुप्त जगमाहीं । मोकहं कोइ जिव चीन्हत नाहीं ॥
जो जीवन पर बोध्योजाई । तिन कहँ दीन्हों लोक पठाई ॥
सत्यलोक हंसन सुख बासा । सदा बसन्त पुरुस के पासा ॥

त्रेतायुग की कथा

सतयुग गयो त्रेत युग आवा । नाम मुनिन्द्र जीव समुझावा ॥
जब आयेउ जीवन उपदेसा । धर्मराय चित भयेउ अँदेसा ॥
इन भवसागर मोर उजारा । जिव लै आहि पुरुस दरबारा ॥
केतो छल बल करे उपाई । ज्ञानीडर तिहि नाहिं डराई ॥
पुरुस प्रताप ज्ञानि कर पासा । ताते मोर न लागे फाँसा ॥
इनते काल कछु पावै नाहीं । नाम प्रताप हंस घर जाहीं ॥

॥ छन्द ॥

सत्यनाम प्रताप धर्मनि हंस घर निज के चले ॥
जिमि देख के हरि त्रास गज हिय कंप कर धरनी रले ॥
पुरुस नाम प्रताप केहरि काल गज सम जानिये ॥
नाम गहि सतलोक पहुँचे गिरा मम फुर मानिये ॥ ४९ ॥
सोरठा--सतगुरु सब्द समाय, गुरु आज्ञा निरखत रहे ॥
रहे नाम लौलाय, कर्म भर्म मनमति तजे ॥ ४९ ॥

॥ चौपाई ॥

त्रेतायुग जबही पगु धारा । मृत्यु लोक कीन्हों पैसारा ॥
जीव अनेकन पूँछा जाई । यम से को तुहिं लेहि छुड़ाई ॥
कहे भर्म बस जीव अजाना । हम कर्तार पुरुस करें ध्याना ॥
बिस्नु सदा हमरे रखवारा । यम ते मोहि छुड़ावन हारा ॥
कोइ महेस को आस लगावे । कोइ चण्डी देवी कहँ गावें ॥
कहा कहीं जिव भयो बिगाना । तजेउ खसमकहजार बिकाना ॥
भर्म कोठरी सब ही डारा । फंदा दें सब जीवन मारा ॥

सोरठा—सेवा करौं सिवजाय, जिन मोहिं राज अटल दियो ॥
ताके टेकों पांय, पल दंडवत छन ताहि को ॥५१॥

॥ चौपाई ॥

सुन अस वचन मुनींद्र पुकारी। तुम हो रावन गर्व अहारी ॥
भेद हमारा तुव नहिं जाना। वचन एक तोहि कहो निसाना ॥
रामचन्द्र मारैं तुहि आई। मॉस तुम्हार स्वान नहिँ खाई ॥
रावन को कीन्हों अपमाना। अवध नगर पुनि कीन्ह पयाना ॥

॥ मधुकर की कथा ॥

॥ छन्द ॥

रावन को अपमान करि तब अवध नगरहिं आयऊ ॥
विप्र मधुकर मिलेउ मारग दर्स तिन मम पायऊ ॥
मिलेउ मोकहँ चरन गहि तब सीस नाय अधीनता ॥
करि विनय बहुले गयो मंदिर कीन्ह बहु विधि दीनता ॥५२॥

सोरठा—रंक विप्र थिर ज्ञान, बहुत प्रेम मोसों कियो ॥
सब्द ज्ञान सहिदान, सुधा सरित विहँसत वदन ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

देख्यों ताहि बहुत लव लीन्हा। तासों कह्यो ज्ञान को चीन्हा ॥
पुरुस सँदेस कहेउ तिहि पासा। सुनत वचन जिय बभयो हुलासा ॥
जिमि अंकुर तपै बिन वारी। पूर्न उदक जो मिले खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकुर सुखमाना। तैसहि मधुकर सब्दहिं जाना ॥
पुरुस भाव सुनतहिं हरसंता। मो कहँ लोक दिखावहु संता ॥
चलहु तोहि लै लोक दिखावों। लोक दिखाय बहुरि लै आवों ॥
राख्यो देह हंस लै धाये। अमर लोक लै तिहिं पहुँचाये ॥
सोभा लोक देख हरसाना। तब मधुकर को मन पतियाना ॥
पर्यो चरन मधुकर अकुलाई। हे साहिब अब तृसा बुझाई ॥
अब मोहि लेइ चलो जग माहीं। और जीव उपदेसों ताहीं ॥
और जीव गृह माहि जो आई। तिन कहँ हम उपदेसब जाई ॥
हंसहि लै आये संसारा। पैठ देह जाग्यो द्विज वारा ॥
मधुकर घर खोड़स जिव रहई। पुरुस संदेस सबन सौं कहई ॥
गहहु चरन समरथ के जाई। अहो मुनींद्र लेहु मुक्ताई ॥
मधुकर वचन सबन मिलि माना। मुक्ति जान लीन्हों परवाना ॥
कह मधुकर बिनती सुन लीजै। लोक निवास सबन कहँ दीजै ॥

दीन्हों ताहि पान परवाना। पुरुस डोर सोप्यों सहिदाना॥
गद गद भई पाय घर डोरी। मिलि रंकहि जिमि द्रव्य करोरी॥
रानी टेकेउ चरन हमारा। ता पीछे महलन पगधारा॥
तब में रावन पहँ चलि आयो। द्वारपाल सों वचन सुनायो॥
दासों एक बात समुझाई। राजा कहँ तुम आवलिवाई॥
तब पौरिया विनय यह लाई। महा प्रचन्ड है रावन राई॥
सिवचल हृदय संक नहिं आने। काहू केर बचन नहिं माने॥
महा गर्व अरु क्रोध अपारा। कहौं जाय मोहिं पल में मारा॥
मानहु वचन जाव यहि वारा। रोम बंक नहिं होय तुम्हारा॥
सत्य वचन तुम हमरो मानो। रावन जाय तुरत तुम आनो॥
ततछन गा प्रतिहार जनायी। द्वै कर जोरे ठाढ़ रहायी॥
सिद्ध एक तो हम पहँ आई। ते कह राजहि लाव बुलाई॥
सुनु नृपक्रोध कीन्ह तेहि वारा। मैं मतिहीन आहि प्रतिहारा॥
यह मति ज्ञान हरो किन तोरा। जोतें मोहि बुलावन दौरा॥
दर्स मोर सिवसुत नहिं पावत। मो कहँ भिछुक कहा बुलावत॥
हे प्रतिहार सुनहु मम वानी। सिद्ध रूप कहो मोहि बखानी॥
वर्नहु कौन कौन तिहि भेसा। मो सन कहो दृस्टि जस देखा॥
अहो रावन तेहि स्वेत स्वरूपा। स्वेतहि माला तिलक अनूपा॥
ससि समान है रूप विराजा। स्वेत वसन सब स्वेतहि साजा॥
कहे मंदोदरि रोमन राजा। ऐसो रुप पुरुस को छाजा॥
वेगे जाय गहो तुम पाई। तो तुव राज अटल होय जाई॥
छोड़हु राजा मान वड़ाई। चरन टेकि जो सीस नवाई॥
रावन सुनत क्रोध अति कीन्हा। जरतहु तासन मनु घृत दीन्हा॥
रावन चला सस्त्र लै हाथा। तुरत जाय काटों तिहि माथा॥
मारों ताहि सीस खसि परई। देखों भिछुक मोर का करई॥
जहँ मुनिन्द्र तहँ रावन राई। सत्रह वार अस्त्र कर लाई॥
लीन्ह मुनिन्द्र तृन कर ओटा। अतिवल रावन मारै चोटा॥

छन्द—तृन ओठ यहि कारने है गर्व धारी राय हो॥
तेहि कारन यह युक्ति कीन्ही लाजु रावन आय हो॥
कहे मंदोदरि सुनहु राजा गर्व छोड़ो लाज हो॥
पांव टेकहु पुरुस के गहि अटल होवे राज हो॥५१॥

जो ललना धरि प्रकटै आई। तब सब जीव करन गहे आई॥
ज्ञान अज्ञान चीन्ह नहिं जाई। जाय प्रगट ह्वै जीवन चिताई॥
सहज भाव जग प्रगटहु जाई। देखहु भाव जीवन को भाई॥
तोहि गह सोजिव मुहि पैहै। तव प्रतीत विरले यम खैहै॥
जा कहँ तुक करिहौ कड़िहारा। तापर है परताप हमारा॥
हम सों तुम सों अंतर नाहीं। जिमि तरंग जल मांहि समाहीं॥
हमहिं तुमहिं जो दुइकर जाना। ता घट यम सब करिहै थाना॥
जाहु वेगि तुम वा संसारा। जीवन खेह उतारहु पारा॥
चले ज्ञानी तब माथ नवाई। पुरुस आज्ञा जग माँहि सिधाई॥
पुरुस अवाज चल्यो संसारा। चरन टेक मम धर्म लबारा॥

॥ छन्द ॥

तब धर्मराय अधीन ह्वै बहु भाँति विनती कीन्हऊ॥
किहि कारने अब जग सिधारेहु मोहिसा मति दीन्हेऊ॥
अस करहु जनि सब जग चितावहु इहै विनती मैं करौं॥
तुम बंधु जेठे छोट हम कर जोर तुम पांयन परौं॥५४॥

सोरठा—कह्यो धर्म सुन बात, विरल जीव मोहिं चीन्हि हैं॥
सब्द न को पतियात, तुम अस के जीवन ठगे॥५४॥

॥ चौपाई ॥

अस कह मृत्यु लोक पग धारा। पुनि परमारथ सब्द पुकारा॥
छोड़यो लोक लोक की काया। नरकी देह धरी तब आया॥
मृत्यु लोक में पग धरा जबही। जीवन सो सब्द पुकारा तबही॥
कोइ न बूझै हेला मेरी। बाँधे काल विसम भ्रम बेरी॥

॥ रानी इन्दुमती की कथा ॥

गढ़ गिरनार तबहीं चलि आये। चंद्र विजय नृप तहाँ रहाये॥
तेहि नृप ग्रह रह नारि सयानी। पूजे साधु महातम जानी॥
चढ़ी अटारी बाट निहारे। संत दरस कहँ काया गारे॥
रानी प्रीति बहुत हम जाना। तेहि मारग कहँ कीन्ह पयाना॥
मोहि पहँ दृस्टि परी जब रानी। तब वृसली सों बोली बानी॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

मारग वेगि जाहु तुम धाई। देखहु साधु आनु गहि पाई॥

॥ दासी वचन ॥

वृसली आय चरन लपटाई। नृप वनिता दरसन चितलाई॥

यह यम देस वहुत दुख होई। जीव अम्बु बूझै नहिं कोई॥
मोहि सव जीवन लै चलु स्वामी। कृपा करहु प्रभु अंतरयामी॥

॥ छन्द ॥

यहि देस है यम महा परबल जीव सकल सतावई॥
कस्ट नाना भाँति व्यापे मरन जीवन लावई॥
काम क्रोध कठोर तृसना लोभ माया अति वली॥
देव मुनिगन सबहिं व्यापे कोट जीवन दलमली॥५३॥

सोरठा—तिहु पुर यमको देस, जीवन कहँ सुख छनक नहिं॥
मेटहु काल कलेस, लेइ चलहु निजदेस कहँ॥५३॥

॥ चौपाई ॥

वहुत अधीन ताहि हम जाना। कर चौका तव दीन्ह परवाना॥
खोड़स जिव परवाना पाये। तिन कहँ लै सतलोक पठाये॥
यम के दूत देख सव ठाढ़े। चितवहिं जे जन ऊर्द्ध अखाड़े॥
पहुँचे जाय पुरुस दरवारा। अंसन हंसन हर्स अपारा॥
परसे चरन पुरुस के हंसा। जन्म मरन को मेटेउ संसा॥
सकल हंस पूछा कुसलाई। कहु द्विज कुसल भये अब आई॥
धर्मदास यह अचरज वानी। गुप्त प्रगट चीन्हें सोइ ज्ञानी॥
हंसन अमर चीर पहिराये। देह हिरम्मर लखि सुख पाये॥
खोड़स भानु हंस उजियारा। अमृत भोजन के आहारा॥
अगर वासना तृप्त सरीरा। पुरुस दरस गदगद मति धीरा॥
यहि विधि त्रेतायुग को भावा। हंस मुक्त भये नाक प्रभावा॥

॥ द्वापर युग में कबीर साहब के प्राकट्य की कथा॥

त्रेता गत द्वापर युग आवा। तव पुनि भयो काल प्रभावा॥
द्वापर युग प्रवेस भा जवही। पुरुस अवाज कीन्ह पुनि तवही॥

॥ पुरुस वचन॥

ज्ञानी वेगि आहु संसारा। यम सों जीवन करहु उवारा॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा। काटो जायति नहिं को फाँसा॥
कालहि मेटि जाव लै आवो। वारवार का जगहि सिधावो॥
तव हम कहा पुरुस सों वानी। आज्ञा करहु सब्द परवानी॥
कहा पुरुस सुन योग सँतायन। सब्द चिताय जीव मुक्तायन॥
जो अव काल कीन्ह अन्याई। तो हे सुत मम वचन नसाई॥
अवतो परे जीव यम फन्दा। जुगुतहि आनहु परम अनंदा॥

सोरठा—तुम प्रभु अगम अपार, वरनो मोते कित भये ॥
मेटहु तृसा हमार, अपनो परिचय मोहि कह ॥५५॥

॥ चौपाई ॥

हे प्रभु अस अचरज मोहि होई। अस सुभाव दूजा नहिं कोई ॥
कौन आहु कहँवा ते आये। तन अचिंत प्रभु कहँवा पाये ॥
कौन नाम तुम्हरो गुरु देवा। यह सब वरन कहो मोहि भेवा ॥
हम का जानहिं भेद तुम्हारा। ताते पूछौं यह व्यवहारा ॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

इन्दुमती सुनु कथा सुहावन। तोहि समुझाय कहों गुन पावन ॥
देस हमार न्यार तिहुँ पुरते। अहिपुर नरपुर अरु सुरपुर ते ॥
तहां नहीं यम कर परवेसा। आदि पुरुस की जहँवा देसा ॥
सत्य लोक तेहि देस सुहेला। सत्य नाम गहि कीजे मेला ॥
अद्भुत ज्योति पुरुस की काया। हंसन सोभा अधिक सुहाया ॥
द्वीप करी सोभा उजियारी। पटतर देहुँ काहि संसारी ॥
यह तीनों पुर अस नहिं कोई। जाकर पटतर दीजे सोई ॥
चन्द्र सूर्य यहि देस मँझारा। इन सम और नहीं उजियारा
सत्य लोक की ऐसी बाता। कोटिक ससि इक रोम लजाता
एक रोम की सोभा ऐसी। और वदन की बरनों कैसी
ऐसे पुरुस कान्ति उजियारा। हंसन सोभा कहों विचारा
एक हंस जस खोड़स भाना। अग्र वासना हंस अघाना
तहँ कबहूँ यामिनि नहिं होई। सदा अजोर पुरुस तन सोई
कहा कहों कछु कहत न आवे। धन्य भाग जे हंस सिधावे
ताहि देस ते हम चलि आये। करुना मय निज नाम धराये
सतयुग में सतनाम कहाये। त्रेता नाम मुनीन्द्र धराये
युगन युगन हम नाम धरावा। जो चीन्हा तिहि लोक पठावा
धर्मदास जेहि कथा बुझायी। सतयुग त्रेता कथा सुनाय
सासुनि अधिक चाह तिन कीन्हा। औरों बातन पूछन लीन्ह
उत्पति प्रलय और बहु भाऊ। यम चरित्र सब बरनि सुना
जेहि विधि खोड़स सुत प्रकटाना। सो सब भास सुनायो ज्ञा
कूर्मविदार देवी उत्पानी। सो सब ताहि कहा सहिदा
ग्रास अस्टंगी और निकासा। जेहि विधि भये मही आका
सिन्धु मथन त्रय सुत उत्पानी। सबही कहेउ पाछिल सहिद

कह वृसली रानी अस भासा । तुव दरसन कहँ बहु अभिलासा ॥
देहु दरस तेहि दीन दयाला । तुव दरसन बिन बहुत बिहाला ॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

तब वृसली कहँ बचन सुनाई । राजा रावन हम नहिं जाई ॥
राज काज है मान बड़ाई । हम साधू नृप ग्रह नहिं जाई ॥
चलि बृसली रानी पहँ आई । द्वै कर जोरे विनय सुनाई ॥
साधु न आवे मोर बुलाई । राजा रावन हम नहिं जाई ॥
यह सुन इन्दुमती उठ धाई । कीन्ह दंडवत टेके पाँई ॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

हे साहिब मोपर करु दाया । मोरे गृह अब धारिये पाया ॥
प्रीति देख हम भवन सिधारे । राजा गृह तबहीं पग धारे ॥
दीन्ह सिंहासन चरन पखारी । चरन पर छालन अँगोछा धारी ॥
चरन धोय चाखेसि तब रानी । पट पद पौछ जन्म शुभ जानी ॥
पुनि प्रसाद को आज्ञा माँगी । हे प्रभु मो कहँ करहु सुभागी ॥
जूठन परै मोर गृह माहीं । सीत प्रसाद लै हमहूँ खाहीं ॥
सुन रानी मोहि छुधा न होई । पंच तत्व पावे जेहि सोई ॥
अमृत नाम अहार है मोरा । सुनु रानी यह भाख्यों थोरा ॥
देह हमारि तत्त्व गुन न्यारी । तत्त्व प्रकृतिहि काल रचि वारी ॥
असी पंच किछु काल समीरा । पच तत्व की देह खमीरा ॥
तो मह आदि पवन इक आही । जीव सोहग बोलिये ताही ॥
यह जिव अहै पुरुष को अंसा । रोकसि काल ताहि दै संसा ॥
नानाफन्द रचि जीव गरासै । देयी लोभ सब जीवहि फांसै ॥
जिवतारन हम यहि जग आये । जो जिव चीन्ह ताहि मुक्ताये ॥
धर्मराय अस बाजी कीन्हा । धोक अनेक जीव कहँ दीन्हा ॥
नीर पवन कृत्रिम किछु काला । विनसि जाय बहु करै बिहाला ॥
तन हमार यहि साज ते न्यारा । मन तन नहिं सिरज्यो करतारा ॥
सब्द अमान देह है मोरा । परखि गहहु भास्यो कछु थोरा ॥

॥ रानी इन्दुमती वचन ॥

पुनि वचन अचल भौ भारी । तब रानी अस वचन उचारी ॥

छंद—इन्दुमती आधीन ह्वै कह, कृपा करहु दयानिधी ॥
एक एक विलोय वरनहु, मोंहि ते सकलहु विधी ॥
विस्नु सम दूजा नहीं कोइ, रुद्र चतुरानन मुनी ॥
पंच तत्त्व खमीर तन तिहि, तत्त्व के वस गुन गुनी ॥५५॥

उठि रानी तब माथ नवाई । ले आज्ञा परवाना पाई ॥
पुनि रानी राजहि समुझावा । हे प्रभु बहुरि न ऐसो दावा ॥
गहो सरन जो कारज चाहो । इतना वचन मोर निरवाहो ॥

॥ रामचन्द्र विजय वचन ॥

तुम रानी अरधंगी सोई । हम तुम भक्त होंय नहिं दोई ॥
तोरि भक्ति करे देखों भाऊ । केहि विधि मोहि लेहु मुक्ताऊ ॥
देखों तोरि भक्ति परतापा । पहुचो लोक मिटे संतापा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

रानी बहुरि मोहि पहँ आई । हमतिहिं काल चरित्र लखाई ॥
रानी आयी हमरे पासा । तासो कियो वचन परकासा ॥
सुनु रानी एक वचन हमारा । काल कला करे छल धारा ॥
काल व्याल ह्वै तोपहँ आयी । डसे तोहि सों देउं बतायी ॥
दीन्हों सब्द विरहुलि ताही । काल गरल तेहि व्यापे नाही ॥
पुनि यम दूसर छल तोहि ठानी । सो चरित्र मैं कहौं बखानी ॥
छल कर यम आहै तुम पासा । सो तुहि भेद कहों परगासा ॥
हंस वरन वह रूप बनायी । हम सम ज्ञान तोहि समझायी ॥
तुम सन कहे चीन्ह मुहि रानी । मरदन काल नाम मम ज्ञानी ॥
तो कहँ सिस्य कीन्ह मैं जानी । डसे काल तक्षक ह्वै आनी ॥
तब हम तो कह मंत्र लखायी । काल गरल तब दूर परायी ॥
यहि विधि काल ठगें तोहि आयी । काल रेख सब देउ बतायी ॥
मस्तक ओट काल कर जानू । चछु गुंजन को रंग बखानू ॥
काल लछ मैं तोहि बतायी । और अंग सब सेत रहायी ॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

रानी चरन गहे तब धायी । हे प्रभु मोहि लोक लेजायी ॥
यह तो देस आहि यम केरा । लै चलु लोक मिटै यम जेरा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

तब रानी सों कहेउ बुझायी । वचन हमार सुनो चित लायी ॥

॥ छंद ॥

सुमरु नाम हमार निसि दिन काल तोकहँ जब छले ॥
जौलो टीका पुर नारिं तौलो जीव सु ना चले ॥
काल कला प्रचंड देखो गज रूप धर जग आवई ॥
देखि के हरि गज त्रास माने घोर बहुरि, न लावई ॥५७॥

सुनत ज्ञान पाछिल भ्रम भागा। हरखि सो चरन गहे अनुरागा॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

जोरि पानि बोली बिलखायी। हे प्रभु यमते लेहु छुड़ाई॥
राज पाट सब तुम पै वारों। धन सम्पति यह सब तजि डारों॥
देहु सरन मुहिं दीन दयाला। बंदि छोरि मुहिं कहहु निहाला॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

इन्दुमती सुनु बचन हमारा। छोरौं निस्चय वन्दि तुम्हारा॥
करहु आरती लेवहु परवाना। भागे यम तब दूर पयाना॥
चीन्ही मोहि करौ परतीती। लेहु पान चलु भौजल जीती॥
आनहु जो कछु आरति साजा। राजकाज कर मोहि न काजा॥
धन सम्पति कछु मोहि न भावा। जीव चितावन यहि जग आवा॥
धन सम्पति तुम यहँवा लायी। करहु संत सम्मान बनायी॥
सकल जीव हैं साहिब केरा। मोहि बिवस जिव परे अँधेरा॥
सब घट पुरुस अंस कियो वासा। कहीं प्रगट कहिं गुप्त निवासा॥

छंद—सब जीव है सतपुरुस को बस मोह भर्म बिगान हो॥
यमराज को यह चरित सब भ्रमजाल जस परधान हो॥
जिव काल बस वहै लरत मोसे भ्रम वस मोहि न चीन्हही॥
तजि सुधा कीन्हो नेह बिस से छोड़ि घृत अँचवैं मही॥
सोरठा—कोइ एक विरला जीव, परखि सब्द मोहि चीन्हई॥
धाय मिल निज पीव, तजे जार को आसरो॥ ५६॥

॥ इन्दुमती वचन-चौपाई ॥

इन्दुमती सुनि वचन अमानी। बोली मधुर ज्ञान गुन बानी॥
मोहि अधम को तुम सुख दीन्हा। तुव प्रसाद आगम गम चीन्हा॥
हे प्रभु चीन्ह तोहि अब पाहू। निस्चय सत्य पुरुस तुम आहू॥
सत्य पुरुस जिन लोक सवाँरा। करेहु कृपा सो मोहिं उदारा॥
आपन हृदय अस हम जाना। तुम ते अधिक और नहिं आना॥
अब भासाहु प्रभु आरति भाऊ। जो चाहिय सो मोहिं बताऊ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

हे धर्मनि सो ताहि सुनावा। जस खेमसरि सो भासेउ भावा॥
चौका कर लेवहु परवाना। पाछे कहौं अपन सहिदाना॥
आनेउ सकल साज तब रानी। चौका बैठि सब्द ध्वनि ठानी॥
आरति कर दीन्हा परवाना। पुरुस ध्यान सुमिरन सहिदाना॥

॥ दूत वचन चौपाई ॥

चल्यो दूत तब उहँवा जाई। ब्रह्मा विस्नु महेस रहाई॥
कहे दूत विस तेज न लागा। नाम प्रताप वन्ध सो भागा॥

॥ विस्णु वचन ॥

कहे विस्नु सुनहो यम दूता। संतहिं अङ्ग करो तुम पूता॥
छल करि जाइ लिवाइय रानी। वचन हमार लेहु तुम मानी॥
कीन्हों दूत सेत सब अंङ्गा। चलेउ नारि पहँ बहुत उमंगा॥

॥ दूत वचन ॥

रानी सो अस वचन प्रकासा। तुम कस रानी भई उदासा॥
जानि बूझिकस भई अचीन्हा। दीक्षा मन्त्र तोहिं हम दीन्हा॥
ज्ञानी नाम हमारो रानी। मरदों काल करौं विसमानी॥
तक्षक काल होय तोहि खाई। तब हम राख लीन्ह तोहि आई॥
छोड़हु पलँग गहो तुम पाई। तजहु आपनी माम बड़ाई॥
अब हम लेन तोहि कहँ आवा। प्रभु के दरसन तोहि करावा॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

इन्दुमती तब चीन्हेउ रेखा। जस कछु साहिब कहेउ विसेखा॥
तीनों रेख देख चखु माहीं। जर्द सेत अरु राता आहीं॥
मस्तक ओंठ देख पुनि ताको। भयो प्रतीत वचन को साको॥
जाहु दूत तुम अपने देसा। अब हम चीन्हेउ तुम्हरो भेसा॥
काग रूप जो बहुत बनाई। हंस रूप सोभा किमि पाई॥
तस हम तोरा रूप निहारा। वे समर्थ बड़ गुरू हमारा॥

॥ दूत वचन ॥

यह सुनि दूत रोस बड़ कीन्हा। इन्दुमती सों बोले लीन्हा॥
बार बार तो कहँ समुझावा। नारि न समुझत मती हिरावा॥
बोला वचन निकट चलि आवा। इन्दुमती पर घाव चलावा॥
घाव चलाय सो मुख पर मारा। रानी खसि परि भूमि मँझारा॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

इन्दुमती अस सुमिरन लाई। हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई॥
हम कहँ काल बहुत विधि ग्रासा। तुम साहिब काटो यम फांसा॥
अब मैं साहिब भई उदासा। मो कहँ लै चलु पुरुस के पासा॥

॥ सतगुरु वचन ॥

आवत ज्ञानी काल पराया। रानी ले सतलोक सिधाया॥
ले पहुचायो मानसरोवर। जहवां कामिनि करहिं कुतूहर॥
अमी सरोवर ताहि चखायो। कबीर सागर पांव परायो॥

सोरठा—गज रूपी है काल, के हरि पुरुस प्रताप है ॥
रोप रहो तुम ढाल, काल खड्ग व्यापे नहीं ॥५७॥

॥ इन्दुमती बचन--चौपाई ॥

हे साहिब मैं तुम कहँ जानी । वचन तुम्हार लीन्ह सिरमानी ॥
विनती एक करौं तुहि स्वामी । तुम तो साहिब अंतरयामी ॥
काल व्याल व्है मोहि सतायी । अरु पुनि हंस रूप भरमायी ॥
तव पुनि साहिब मो पहँ आऊ । हंस हमारे लोक ले जाऊ ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

कह ज्ञानी सुन रानी वाता । तुम सों एक कहों विख्याता ॥
काल कला धरती पहँ आयी । नाना रंग चरित्र बनायी ॥
तोरो ताहि मान अपमाना । मोहि देख तब काल पराना ॥
तेहि पीछे हम तुम लग आवैं । हँस तुम्हार लोक पहुँचावैं ॥
सब्द तोहि हम दीन्ह लखाया । निसि दिन सुमरो चित्त लगाया ॥
इतना कह हम गुप्त छिपाया । तच्छक रूप काल हो आया ॥
चित्रसार पर तच्छक आया । रानी कर तहँ पलँग रहाया ॥
जब निसि रात बीत गई आधी । रानि उठि चलि सेवा साधी ॥
रानी सब कहँ सीस नवायी । चली तबै महलन कहँ आयी ॥
सेज आय रानी पौढ़ायी । डसेउ व्याल मस्तक महँ जायी ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती अस वचन सुनायी । तच्छक डसेउ मोहि कहँ आयी ॥

॥ चन्द्रविजय बचन ॥

सुन राजा व्याकुल ह्वै धावा । गुनी गारुड़ी वेगि बुलावा ॥
राय कहे मम प्रान पियारी । लेहु चिताय जो अबकी वारी ॥
तच्छक गरल दूर हो जायी । देहुँ परगना तोहि दिवायी ॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

॥ छन्द ॥

सब्द विरहुली जपेउ रानी सुरति साहिब राखि हो ॥
वैद गारुड़ि दूर भाग्यो दूर नरपति नाहिं हो ॥
मन्त्र मोहि लखाय सतगुरु गरल मोहि न लागई ॥
होत सूर्य प्रकास जहि छन अंध घोर नसावई ॥५८ ॥

सोरठा—ऐसे गुरु हमार, वार वार विनती करौं ॥
ठाढ़ भई उठि नार, राजा लखि हरसित भयो ॥ ५८ ॥

मोरे चित यह निस्चय आई। तुमहि पुरुस दूजा नहिं भाई ॥
सो मैं आय देख यहि ठांई। धन समरथ मुहिं लिया जगाई ॥

॥ छन्द ॥

तुम धन्य हो दया निधान सुजान नाम अचिन्तयं ॥
अकथ अविचल अमर अस्थित अनघ अजसु अनादियं ॥
असंसय निः काम थाम अनाम अटल अखंडितं ॥
आदि सबके तुमहिं प्रभु हो सर्व भूत समीपतं ॥

सोरठा—मोपर भये दयाल, लियहु जगाइ जानि निज ॥
काटेहु यम को जाल, दीन्हो सुख सागर करी ॥६०॥

॥ चौपाई ॥

संपुट कमल लगो तेहि बारा। चले हंस दीपन मंझारा ॥
ज्ञानी बूझे रानी बाता। कहाँ हंस तुम्हरो विख्याता ॥
अब दुख द्वन्द तोर मिटि गयऊ। खोड़स भानु रुप पुनि भयऊ ॥
ऐसे पुरुस दया तोहि कीन्हा। संसय सोग मेटि तुव दीन्हा ॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

इन्दुमती कह दोउ कर जोरी। हे साहिब इक बिनती मोरी ॥
तुम्हरे चरन भागते पायी। पुरुस दरस कीन्हा हम आयी ॥
अंग हमार रुप अति सोही। इक संसय व्यापे चित मोही ॥
मो कहँ भयो मोह अधिकारा। राजा तो पति आहि हमारा ॥
आनहु ताहि हंस पति नायी। राजा मोर काल मुख जायी ॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

कहे ज्ञानी सुन हंस सुजाना। राजा नहिं पाये परवाना ॥
तुम तो हंस रूप अब पायी। कौन काज कह राव बुलायी ॥
राज भाव भक्ति नहिं पाया। सत्व हीन भव भटका खाया ॥

॥ इन्दुमती वचन ॥

हे साहिब हम जग महँ रहेऊ। भक्ति तुम्हार बहुत विधि करेऊ ॥
राजा भक्ति हमारी जाना। हम कहँ बरजेउ नहीं सुजाना ॥
कठिन भाव संसार सुभाऊ। पुरुस छाड़ि कहुँ नारि रहाऊ ॥
सब संसार देहि तिहि गारी। सुनतहि पुरुस डारतेहि मारी ॥
राज काज अति मान बड़ाई। पाखंड क्रोध और चतुराई ॥
साधु संत की सेवा करऊं। राजा केर त्रास ना डरऊं ॥
सेवा करौं संत की जबही। राजा सुनि हरसित हो तबही ॥
जो मोहि ताजन देतो राजा। तो प्रभु मोर होत किमि काजा ॥

जब कबीर सागर कहँ परसेउ। सुरतिसागर तब रानी पहुँचेउ॥

॥ हंस बचन॥

हंस धाय अकम भर लीन्हा। गावहिं मङ्गल आरति कीन्हा॥
सकल हंस कीन्हा सनमाना। धन्य हंस सतगुरु पहिचाना॥
भल तुम छोड़ेहु काल के फंदा। तुम्हरो कस्ट मिट्यो दुख द्वन्दा॥

॥ ज्ञानी बचन॥

चलो हंस तुम हमरे साथा। पुरुस दरस कर नावहु माथा॥
इन्दुमती आवहु संग मोरे। पुरुस दरस होवे अब तोरे॥
इन्दुमती अरु सकल हंस मिल। गावहिं मंगल करहिं कुतूहल॥
चले हंस सब अस्तुति लाई। कैसे दरस पुरुस के पाई॥
ज्ञानी तब अस विनती लाई। काल जाल ते हंसा आई॥
देहु दरस तिन्ह दीन दयाला। बंदी छोर सु होहु कृपाला॥

॥ पुरुस बचन॥

विकस्यो पहुप उठी अस बानी। सुनहु योग संतायन ज्ञानी॥
हंसन कहँ अब आव लिवायी। दरस कराय लेय तुम जायी॥

॥ छन्द॥

ज्ञानी आयेउ हंस लग तब हंस सकलो ले गये॥
पुरुस दरसन पाय हंसा रूप सोभा तब भये॥
करहिं दंडवत हंस सबही पुरुस पहँ चित लाइया॥
अमी फल तब चार दीन्हो हंस सब मिलि पाइया॥

सोरठा—जस रवि के परकास, दरस पाय पंकज खुले॥
तैसे हंस विलास, जन्म जन्म दुख मिटि गयो॥५६॥

॥ चौपाइ॥

पुरुस कान्ति जब देखऊ रानी। अद्भुत अमी सुधा की खानी॥
गद गद होय चरन लपटानी। हंस सुबुद्धि सुजन गुन ज्ञानी॥
दीनों सीस हाथ जिव मूला। रविप्रकास जिमि पंकज फूला॥
कह रानी तुम धनि करुनामय। जिन भ्रम मेटि आनियहि ठामय॥
कहा पुरुष रानी समभायी। करुनामय कहँ आनु बुलायी॥
नारि धाय आई मो पासा। महिमा देखि चकित भये दासा॥
कहरानी यह अचरज आही। भिन्न भाव कछु देखों नाहीं॥
जे कोई करुनामय कहँ देखा। करुनामय तन एक विसेखा॥
धाय चरन गह हंस सुजाना। हे प्रभु तव चरित्र सब जाना॥
तुम सतपुरुस दास कहलाये। यह सोभा कस वहां छिपाये॥

पुरुस दरस नरपति चितलाई। हँस रूप सोभा अति पाई ॥
खोड़स भानु रूप नृप पावा। जानु भयङ्कर द्वार वनावा ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

छन्द—धर्मदास विनती करे युग लेख जीव सुनायऊ ॥
धन्य नाम तुम्हार साहिब राय लोक समायऊ ॥
तत्व भावना गहेउ राजा भक्ति तुव निज ठानिया ॥
नारि भक्ति प्रताप ते यमराज से नृप वाचिया ॥६२॥
सोरठा—धन्य नारि को ज्ञान, लीन्ह बुलायस्वनृपति कहँ ॥
आवागमन नसान, जगमें बहुरि न आवई ॥६२॥

कलियुग में कबीर साहेब के प्रगट होने की कथा।

॥ चौपाई ॥

तीनहु युग का सुना प्रभाऊ। अब कहिये कलियुग कर दाऊ।
कैसे फिर आये भवसागर। सो कहिये हंसन पति आगर ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

पुरुस अवाज उठी जिहि वारा। ज्ञानी वेगि जाहु संसारा ॥
चला तब मैं मस्तक नाई। ततछन भवसागर नियराई ॥
कासी नगर दीन्ह मैं पांई। प्रथमहि पुरुस नाम गुहराई ॥

॥ सुपच सुदरसन की कथा ॥

नाम सुदरसन सुपच रहाई। ताकह हम सत सब्द दृढ़ाई ॥
सब्द विवेकी संत सुहेली। चीन्हा मोहि सब्द के मेली ॥
निस्चय वचन मान तिन्हमोरा। लखि परतीत बंदि तिहि छोरा ॥
नाम पान अरु मुक्ति संदेसा। दियो सुमिटियो काल कलेसा ॥
सतगुरु भक्ति करे चितलाई। छोड़ी सकल कपट चतुराई ॥
सब्द पाय प्रथम जागा सोई। करै भक्ति सब विघ्नहि खोई ॥
तात मातु तेहि हरस अपारा। महा प्रेम अतिदिन चितधारा ॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा। बिनु परिचय जिव यमका चेरा ॥
भक्ति देख हरसित हो जाई। नाम पान हमरो नहिं पाई ॥
प्रगट देख चिन्हे नहिं मूढ़ा। परे काल के फन्द अगूढ़ा ॥
जैसे स्वान अपावन राचेउ। निमिजग अमि छोड़ि विष चाखेउ ॥
नृपति युधिस्ठिर द्वापर राजा। तिन पुन कीन्ह यज्ञ को साजा ॥
बन्धु मार अपकीरति कीन्हा। तातें यज्ञ रचन मन दीन्हा ॥
सन्यासी बैरागी भारी। आये ब्राह्मन औ ब्रह्माचारी ॥

छंद—राय की हम हती प्यारी मोहि कबहुं न बरजेऊ ॥
साधु सेवा कीन्ह नित हम सब्द मारग चीन्हेऊ ॥
चरन मो कहँ मिलत कैसे मोहिं बरजत राय जो ॥
नाम पान न मिलत मोकहँ कैसे सुधरत काज जो ॥६१॥

सोरठा—धन्य राय दृढ़ ज्ञान, आनहु ताहि हंसनपति ॥
तुम गुरु दया निधान, भूपति बन्द छुड़ाइये ॥६१॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

सुन ज्ञानी बहुतै विहँसाये । चले तुरन्त वार नहिं लाये ॥
गढ़ गिरनार वेग चलि आया । नृपति केरि अवधि नियराया ॥
घेरयो ताहि लेन यमराई । राजहि देत कस्ट बहुताई ॥
राजा परे गाढ़ महँ आया । सतगुरु कहे तहाँ गुहराया ॥
छोड़े नृप नाहीं यमराई । ऐसे भक्ति चूक है भाई ॥
भक्ति चूक कर ऐसे ख्याला । अवधि. पूर यम करै विहाला ॥
चन्द्र विजय काकर गहि लीन्हा । तत्छन लोक पयाना दीन्हा ॥
रानी देख नृपति ढिग आई । राजा केर गह्यो तब पाई ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती कहे सुनहू भुवारा । मोहि चीन्हों मैं नारि तुम्हारा ॥

॥ राजा चन्द्रविजय वचन ॥

राय कहे सुनु हंस सुजाना । वरन तोर खोड़स ससि भाना ॥
अंग अंग तोरे चमकारी । कैसे कहौं तोहिं मैं नारी ॥
तुम तो भक्ति कीन्ह भल नारी । हमहूँ कहँ तुम लीन्ह उवारी ॥
धन्य गुरु अस भक्ति दृढ़ाई । तोरि भक्ति हम निज घर पाई ॥
कोटिन जन्म कीन्ह हम धर्मा । तव पाई अस नारि सुकर्मा ॥
हम तो राज काज मन लाई । सतगुरु भक्ति चीन्ह नहिं पाई ॥
जो तुम मोरि होत न रानी । तो हम जात नर्क की खानी ॥
तुव गुन मोहि वरनि न जाई । धन गुरु धन्य नारि हम पाई ॥
जस हम तो कहँ पायउ नारी । तैसे मिले सकल संसारी ॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

सुनत वचन ज्ञानी विहँसायी । चंद्रविजय कहँ वचन सुनायी ॥
सुनो राय तुम नृपति सुजाना । जोसिव सब्द हमारा माना ॥
ते पुनि आय पुरुस दरवारा । बहुरि न देखे यह संसारा ॥
हँस रूप होवे नर नारी । जो निज माने वात हमारी ॥

पुरुस दरस नरपति चितलाई। हँस रूप सोभा अति पाई॥
खोड़स भानु रूप नृप पावा। जानु भयकंर द्वार वनावा॥

॥ धर्मदास वचन॥

छन्द—धर्मदास विनती करे युग लेख जीव सुनायऊ॥
धन्य नाम तुम्हार साहिब राय लोक समायऊ॥
तत्व भावना गहेउ राजा भक्ति तुव निज ठानिया॥
नारि भक्ति प्रताप ते यमराज से नृप वाचिया॥६२॥

सोरठा—धन्य नारि को ज्ञान, लीन्ह बुलायस्वनृपति कहँ॥
आवागमन नसान, जगमें वहुरि न आवई॥६२॥

कलियुग में कबीर साहेब के प्रगट होने की कथा।

॥ चौपाई॥

तीनहु युग का सुना प्रभाऊ। अब कहिये कलियुग कर दाऊ।
कैसे फिर आये भवसागर। सो कहिये हंसन पति आगर॥

॥ सतगुरु वचन॥

पुरुस अवाज उठी जिहि वारा। ज्ञानी वेगि जाहु संसारा॥
चला तब मैं मस्तक नाई। ततछन भवसागर नियराई॥
कासी नगर दीन्ह मैं पांई। प्रथमहि पुरुस नाम गुहराई॥

॥ सुपच सुदरसन की कथा॥

नाम सुदरसन सुपच रहाई। ताकह हम सत सब्द दृढ़ाई॥
सब्द विवेकी संत सुहेली। चीन्हा मोहि सब्द के मेली॥
निस्चय वचन मान तिन्हमोरा। लखि परतीत वंदि तिहि छोरा॥
नाम पान अरु मुक्ति संदेसा। दियो सुमिटियो काल कलेसा॥
सतगुरु भक्ति करे चितलाई। छोड़ी सकल कपट चतुराई॥
सब्द पाय प्रथम जागा सोई। करैं भक्ति सब विघ्नहि खोई॥
तात मातु तेहि हरस अपारा। महा प्रेम अतिहित चितधारा॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा। बिनु परिचय जिव यमका चेरा॥
भक्ति देख हरसित हो जाई। नाम पान हमरो नहिं पाई॥
प्रगट देख चिन्हे नहिं मूढ़ा। परे काल के फन्द अगूढा॥
जैसे स्वान अपावन राचेउ। तिमिजग अमि छोड़ि विष चाखेउ॥
नृपति युधिस्टिर द्वापर राजा। तिन पुन कीन्ह यज्ञ को साजा॥
बन्धु मार अपकीरति कीन्हा। तातें यज्ञ रचन मन दीन्हा॥
सन्यासी वैरागी भारी। आये ब्राम्हन औ ब्रम्हाचरी॥

इच्छा भोजन सब मिलि पावा। घंट न बाजा राय लजावा ॥
जबही घंट बजे अकासा। चकित भयो राय बुधि नासा ॥
कृस्न सारथी नृप के रहिया। काहेन घन्ट बाज दुख सहिया ॥
सुपच भक्त जब ग्रास उठावा। बज्यो घन्ट नाम परभावा ॥
तबहु न चीन्हें सतगुरु बानी। बुद्धि नासयम हाट बिकानी ॥
भक्त जीव कहँ काल सताये। भक्त अभक्त सबन कहँ खाये ॥
कृस्न बुद्धि पाडव कह दीन्हा। बन्धु घात पान्डव तब कीन्हा ॥
पुनि पाण्डव कहँ दोस लगावा। दोस लगायी तेहि यज्ञ करावा ॥
ताहूपर पुनि अधिक दुखावा। भेजि हिमालय तिन्हैं गलावा ॥
चार बन्धु सह द्रौपदि गलेऊ। उबरे सत्य युधिस्ठिर रहेऊ ॥
अर्जुन सममिय और न आना। ताकर अस कीन्हा अपमाना ॥
बलिहरिचन्द करन बड़ दानी। काल कीन्ह पुनितिन्ह की हानी ॥
जिव अचेत आसा तेहि लावें। खसम बिसार जार को धावें ॥
कला अनेक दिखावे काला। पीछे जीवन करे बिहाला ॥
मुक्ति जान जिव आसा लावे। आसा बांधि कालमुख जावे ॥
सब कह काल नचावे नाचा। भक्त अभक्त कोई नहिं बाचा ॥
जो रछक तेहि खोजें नाहीं। अन चीन्हे यम के मुख जाहीं ॥
बार बार जीवन समुझावा। परमारथ कहँ जीव चितावा ॥
अस यम बुद्धि हेरी सब केरी। फद लगाय जीव सब घेरी ॥
सत्य सब्द कोई परखे नाहीं। यम दिस हाय लरै हम पाहीं ॥
जब लगि पुरुस नाम नहिं भेटे। तब लगि जन्म मरन नहिं मेटे ॥
पुरुस प्रभाव पुरुस पहँ जायी। कृतिम नागते यम धरिखायी ॥
पुरुस नाम परवाना पावे। कालहि जीत अमर घर जावे ॥

॥ छद ॥

सत पुरुस नाम प्रताप धर्मनि हंस लोक सिधावई ॥
जन्म मरन को कस्ट मेटै न बहुरि भव जल आवई ॥
पुरुस की छवि हंस निरखहिं लहैं अति आनन्द घना ॥
अंस हंस मिल करे कुतूहल चंद्र कुमुदिनि सँग बना ॥

सोरठा—जैसे कुमुदिन भाव, चन्द्र देखि निसि हरसई ॥
तैसई हंस सुख पाव, पुरुस दरस के पावते ॥६३॥

सोरठा—नहीं मलीन मुख भाव, एक प्रभाव सदा उदित ॥
हंस सदा सुख पाव, सोक मोह दुःख छनक नहिं ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

संत सुदरसन टीका पुराई। ता कहँ ले सतलोक पठाई ॥
भयउ रूप सोभा अधिकारा। हंसन संग कुतूहल सारा ॥
खोड़स भानु रूप तब पावा। पुरुस दरस सो हंस जुड़ावा ॥

॥ जगन्नाथ स्थापन की कथा ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

हे साहिब इक विनती मोरा। खसम कबीर कहु बंदी छोरा ॥
भक्त सुदरसन लोक पठायी। पीछे साहिब कहां सिधायी ॥
सो सतगुरु मुहिं कहो संदेसा। सुधा वचन सुनि मिटे अंदेसा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास तुम पुरुस के अंसा। तुम्हरे चितको मेटों संसा ॥
तुम सो कहों न रखों छिपायी। तब हम सायर तीर सिधायी ॥
हम सन काल कहा अन्याई। बाचा बांध तहां हम जाई ॥
आसन उदधि तीर हम कीन्हा। काहू जीव सब्द ना चीन्हा ॥
राजा इन्द्रदमन तहँ रहई। मंडप काज युगति सो कहई ॥
कृस्न देह छांड़ी पुनि जबही। इन्द्रदमन सपना भा तबही ॥
मोंकहँ स्थापन कर राजा। तो पहँ मैं आयेउ यहिकाजा ॥
राजा यहि विधि सपना पायो। ततछन मंडप काम लगायो ॥
मंडप उठा पूर्ण भा कामा। उदधि आय बोरा तेहि ठामा ॥
मंडप सो सट वार बनायी। उदधि तीर तिहि लेत डुबायी ॥
पीछे उदधि तीर हम आई। चौरा तहां बनायउ जाई ॥
इन्द्रदमन तब सपना पावा। अहो राय तुम काम लगावा ॥
मंडप संक न राखे राजा। इहँवा हम आये यहि काजा ॥
जाहु वेगि जनि लावहु वारा। निस्चय मानहु वचन हमारा ॥
राजा मंडप काह लगायो। मंडप दीखे उदधि चल आयो ॥
सायर लहर उठी तिहि वारा। आवत लहर क्रोध चित धारा ॥
उदधि उमंग क्रोध अति आवे। पुरुसोत्तम पुर रहन न पावे ॥
उमगें लहर अकासे जायी। उदधि आये चौरा नियरायी ॥
दरस कबीर उदधि जब पाई। अति भय मान रहो ठहराई ॥
छंद—रूप धारयो विप्र को तब उदधि हम पहँ आइया ॥
चरन गहि के माथ नायो मर्म हम नहिं पाइया ॥

॥ उदधि बचन ॥

जगन्नाथ हम थोर स्वामी ताहि ते प्रभु तुम आयऊ ॥
अपराध मेरो छमा कीजे भेद अब हम पायऊ ॥
सोरठा—तुम प्रभु दीन दयाल, रघुपति वोईल दिवाइये ॥
वचन करो प्रति पाल, करजोरे विनती करों ॥६५॥

॥ चौपाई ॥

कीन्हेउ गवन लंक रघुवीरा । उदधि बांध उतरे रनधीरा ॥
जो कोइ करै जोराबरि आई । अलख रूप तेहि वोइल दिवाई ॥
मो पर दया करहु तुम स्वामी । लेउँ ओइल सुन अंतरयामी ॥

॥ कबीर बचन ॥

वोइल तुह्मार उदधि हम चीन्हा । वोरहु नगर द्वारका दीन्हा ॥
यह सुनि उदधि धरे तब पाई । चरन टेक के चल हरसाई ॥
उदधि उमंग लहर तब धायी । वोरयो नगर द्वारका जायी ॥
मंडप काम पूरन तब भयऊ । हरि को थापन तहँवा कियऊ ॥
तब हरि पंडन स्वप्न जनावा । दास कबीर मोहि पहँ आवा ॥
आसन सायर तीर बनायी । उदधि उमंग नीर तहँ आयी ॥
दरस कबीर उदधि हट जाई । यहि विधि मंडप मोर बचाई ॥

॥ पंडा बचन ॥

पंडाउदधि तीर चलि आए । करि अस्नान मँडप चल जाए ॥
पडन अस पाखड लगायी । प्रथम दरस मलिच्छ दिखायी ॥
हरि के दरसन मैं नहिं पावा । प्रथमहि हम चौरा लग आवा ॥
तब हम कौतुक एक बनाये । कहों वचन ना रखौं छिपाये ॥
पूजन मंडप पडा जायी । तहँवा एक चरित्र रहायी ॥
जहँ लग मूरति मंडप माहीं । भये कबीर रूप धर ताहीं ॥
हर मूरति कहँ पंडा देखा । भये कबीर रूप धर भेखा ॥
अक्षत पुहुप ले विप्र भुलाई । नहिं ठाकुर कहँ पूजेहु भाई ॥
देखि चरित्र विप्र सिर नाया । हे स्वामी तुम मर्म न पाया ॥
हम तुम काहि नहीं मन लायी । ताते मोहि चरित्र दिखायी ॥
छमा अपराध करो प्रभु मोरा । विनती करौं दोइ कर जोरा ॥
छन्द—वचन एक मैं कहौं तोसों विप्र सुन तैं कान दे ॥
पूज ठाकुर दीन्ह आयसु भाव दुविधा छांड़ दे ॥
भ्रम भोजन करे जो जिव अंग हीन हो ताहि को ॥

करे भोजन छूत राखे सीस उलटेस ताहि को ॥ ६५ ॥

॥ चन्दवारे मे प्रगट होने की कथा ॥

सोरठा—चौरा अस व्योहार, तहवां तें पग धारेऊ ॥
चल आयउ चंदवार, धर्मदास सुन कान दे ॥ ६६ ॥

॥ धर्मदास वचन – चौपाई ॥

धर्मदास कहे सतगुरु पूरा । तुम प्रसाद भयेउ दुख दूरा ॥
जेहि विधि हरि कहँथापेउ जाई । सो साहिब सब मोहि सुनाई ॥
ता पीछे चँदवारे आई । कौन जीव कहँवा मुक्ताई ॥
सो मोहि बरन कहो गुरु देवा । कौन जीव कीन्ही तुव सेवा ॥
धर्मदास तुव बूझहु भेदा । सो सब तुम सों कीन्ह निसेदा ॥
इच्छा कर जो पूछो मोही । अब मैं गोइ न राखों तोही ॥
संत सुदरसन द्वापर भयऊ । तासु कथा तोहि प्रथम सुनयऊ ॥
ताहि लै दरसन पुरुस करावा । बिनती बहुत कीन्ह गहि पावा ॥

॥ स्वपच वचन ॥

कहे स्वपच सतगुरु सुन लीजै । हमरे मात पिता सुख दीजै ॥
बंदी छोड़ करो प्रभु जाई । यम के देस बहुत दुख पाई ॥
मैं बहु भाँति पिता समझावा । मातु पिता परतीत न आवा ॥
बालक बद नहिं मान सिखावा । भक्ति करत नहिं मोहि डरावा ॥
भक्ति तुम्हार करन जब लागे । कबहु न द्रोह कीन्ह ममआगे ॥
अधिक हर्ष ताही चित होई । ताते बिन्ती करौं प्रभु सोई ॥
आनहु तेहि सत सब्द दृढ़ाई । बंदी छोर जीव मुक्ताई ॥
बिनती बहुत संत जब कीन्हा । तारक वचन मान हम लीन्हा ॥
ताकर विनय बहुरी जग आवा । कलियुग नाम कबीर कहावा ॥
हम इक वचन निरंजन हारा । वाचा बंध उदधि पगु धारा ॥
जगन्नाथ कहँ दीन्ह थपाई । तब हम चल चँदवारे आई ॥
संत सुदरसन के पितु माता । लक्ष्मी नरहर नाम सुजाता ॥
सुपचदेह छोड़ी तिन भाई । मानुस जनम धरे तिन आई ॥
संत सुदरसन कर परतापा । मानुस देह विप्र के आपा ॥
दोनों जन्म ठांव दोय लीन्हा । पुनि विधि मिलै ताहि कहँ दीन्हा ॥
कुल पति नाम विप्र कर कहिया । नारी नाम महेसर रहिया ॥
बहुत अधीन पुत्र हित नारी । करि अस्नान सूर्य्य ब्रत धारी ॥
अंचल ले विनवै कर जोरी । रुदन करै चित सुत कर दौरी ॥

तत्छन हम अंचल पर आवा। हम कहँ देखि नारि हरसावा॥
बाल रूप धरि भेंट्यो वोही। विप्रनारि गृह लै गइ मोही॥
बहुत दिवसलग तहां रहायी। नारि पुरुस मिल सेवा लायी॥
जब हम पलना झटक झकोरा। मिलत सुवरन ताहि इक तोरा॥
ता हृदये नहिं सब्द समायी। बालक जान प्रतीत न आयी॥
ताहि देह चीन्हसि नहिं मोहीं। भयो गुप्त तहँ तन तजि वोही॥
नारी द्विज दोई तन त्यागा। दरस प्रभाव मनुज तनु जागा॥
तब दोनों भए अस मिराऊ। रहहिं नगर चँदवारे नाऊ॥
ऊदा नाम नारि कहँ भयऊ। पुरुस नाम चन्दन धरि गयऊ॥
परसोतम ते हम चलि आये। तब चन्दवारा जाइ प्रगटाये॥
बालक रूप कीन्ह तेहि ठामा। कीन्हेउ ताल माहिं विसरामा॥
कमल पत्र पर आसन लाई। आठ पहर हम तहां रहाई॥
पीछे ऊदा अस्नानहिं आयी। सुन्दर बालक देखि लुभायी॥
ले बालक गृह अपने आई। चंदन साहु अस कहा सुनाई॥
कहु नारी बालक कहँ पायी। कौने विधि ते इहँवा लायी॥
कह ऊदा जल बालक पावा। सुन्दर देखि मोर मन भावा॥
कह चंदन तैं मूरख नारी। वेगि जाहु लै बालक डारी॥
जाति कुटुम हँसि हैं सब लोगा। हँसत लोग उपजेउ तन सोगा॥
ऊदा त्रास पुरुस कर माना। चंदन साहु जबै रिसियाना॥
बालक चेरा लेहु उठाई। ले बालक जल देहु खसाई॥
चल चेरी बालक कहँ लीन्हा। जल महँ डोर ताहि ने दीन्हा॥
जीवन काज बहुत दुख पायी। पुरुस दरस छोड़ेउ जग आई॥
जीवन चीन्ह परे यम फंदा। छोड़ेउ लोक सहे दुख द्वंदा॥

कबीर साहेब का कासी में प्रगट होना
॥ नीरू के मिलने की कथा ॥

यहि विधि कछुक दिवस गयऊ। तजि तन जन्म बहुरि तिन पयऊ॥
मानुस तन जुलहा कुल दीन्हा। दोउ संयोग बहुरि विधि कीन्हा॥
कासी नगर रहे पुनि सोई। नीरू नाम जुलाहा होई॥
नारी गवन लाव मग सोई। जेठ मास बरसाइत होई॥
नीरू नाम जुलाहा होई। नारि गवन लै आवै सोई॥
जल अचवन वनिता तेहि गयऊ। ताल माहि पुरइन इक रहेऊ॥
जस बालक रहे पौढ़ाई। करौं कुतूहल बाल स्वभाई॥

नीमा दृस्टि परी तिहि ठांऊ। देखत दरस भयो अति चाऊ॥
जिमि रवि दरस पदम विगसाना। धाये गहे जिमि रंग समाना॥
तब बालक कहँ लीन्ह उठायी। बालक लै नीरू पहं आयी॥
जुलहा रोष कीन्ह तेहि वारी। वेगि देहु तुम बालक डारी॥
हर्ष गुनावन नारी लाई। तब हम तासों बचन सुनाई॥

छंद—सुनहु वचन हमार नीमा तोहि कहुं समभाय के॥
प्रीतपिछली कारने तुहि दरस दीन्हों आय के॥
आपने गृह मोहि लै चलु चीन्ही कै जो गुरु करो॥
देहुँ नाम दृढ़ाय तोकह फंद यम के ना परो॥६६॥

सोरठा—सुनत वचन अस नारि, नीरू त्रास न राखेऊ॥
लै गइ गेह मंझार, कासि नगर तब पहुँचेऊ॥६७॥

॥ चौपाई ॥

बहुत दिवस तेहि भवन रहावा। बालक जान सबद समावा॥
,लहा की तब अवधि सिरानी। मथुरा देह धरी तिन आनी॥
म तिहि जाय दर्श तब दीन्हा। सब्द हमार मान सो लीन्हा॥
रतना भक्ति करे चित लाई। नारि पुरुस परवाना पाई॥
ता कहं दीन्हेउ लोक निवासा। अंकूरी पठये निज दासा॥
पुरुस चरन भेटे उर लाई। सोभा देह हंस कर पाई॥

कबीर साहब का धर्मदास जी को चिताने के लिये लोक से पृथ्वी पर आना।

॥ पुरुस वचन ॥

पुरुस अवाज उठी तिहि वारा। ज्ञानी वेग जाहु संसारा॥
जीवन काज अंस पठावयी। सत सुकृत जग प्रगटे आयी॥
लावहु जीवन नाम अधारा। जीवन खेय उतारो पारा॥
सुकृत भव सागर चलि गयऊ। काल जाल ते सुधि विसरयऊ॥
तिन कहँ जाय चितावहु ज्ञानी। तेहि ते पंथ चले निरवानी॥
बंस व्यालिस अस हमारा। सुकृत गृह लैहैं औतारा॥
ज्ञानि वेगि जाहु तुम अंसा। धर्मदास के मेटहु संसा॥

॥ ज्ञानी वचन ॥

चले ज्ञानी तब सीस नवायी। धर्मदास हम तुम लग आयी॥
पुरुस अवाज कहेउ तुम पासा। चीन्हहु सब्द, गहो विस्वासा॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धन सतगुरु तुम मोहि चितावा। काल फाँस ते मोहि बचावा ॥
मैं किंकर तुव दास के दासा। लीन्ह उबार काट यम फांसा ॥
मोरे चित अति हर्ष समाना। तुव गुन मोह न जात बखाना ॥
भागी जीव सब्द तुव मानैं। पुन्य भाव ते तुव ब्रत ठानैं ॥
मैं अघ करमी कुटिल कठोरा। रहेउ अचेत भर्म बस भोरा ॥
मोहि आय तुम लीन्ह जगायी। धन्य भाग हम दरसन पायी ॥
कहिये मोहि जीव के मूला। रविके उदय कमल जिमि फूला ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास तुम सुकृत अंसा। लेहु मान युग मेटहु संसा ॥
जो तुव सब्द न माने अंसा। तो सब जीव जाँय यम फंसा ॥
सालिग्राम की छांड़हु आसा। गहि सत सब्द होहु तुम दासा ॥
दस औतार ईस्वरी माया। यह सब देख काल की छाया ॥
तुम जग जीव चितावन आया। काल फाँस तुम माहि समाया ॥
अबहूँ चेत करो धर्मदासा। पुरुस सब्द करो परकासा ॥

छन्द—चत्र भुज बंकेजी सहतेजी और चौथे तुम सही ॥
चारही कड़िहार जग में वचन यह निस्चय कही ॥
चार गुरु संसार में है जीव काज प्रगटाइया ॥
काल के सिर पांव दे सब जीव बंदि छुड़ाइया ॥६७॥

सोरठा—जाम्बु दीप के जीव, तुम्हारी बांह हमको मिले ॥
गहे वचन दृढ़ पीव, ताहि काल पावे नहीं ॥६८॥

॥ चौपाई ॥

ताते दरसन तुम कहँ दीन्हा। धर्मदास तुम अब मोहिं चीन्हा ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धाय परे चरनन धर्मदासा। नैनवारि भर प्रगट प्रगासा ॥
धरहि न धीर बहुर संतोखा। तुम साहिब मेटहु जिब धोखा ॥
युग पग गहेसीस भुंइ लाई। निपट अधीर न उठत उठाई ॥
बिलखत बदन बचन नहिं बोले। सुरति चरन ते नेक न डोले ॥
धरि धीरज तब बोल सम्हारी। मो कहँ प्रभु तारन पगधारी ॥
अब प्रभु दया करहु यहि मोही। एकौ पल ना बिसरौं तोही ॥
निस दिन रहौं चरन तुम साथा। यह बर दीजे करहु सनाथा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास निह संसय रहहू। प्रेम प्रतीति नाम दृढ़ गहहू॥
चीन्हेउ मोहि तोर भ्रम भागा। रहहू सदा तुम दृढ़ अनुरागा॥
मन वच कर्म जाहि जो गहई। सो तेहि तज अंते कस रहई॥
आपन चाल विना दुख पावे। मिथ्या दोस गुरु कहं लावे॥
पंथ सुपंथ गुरू समभावे। सिस्य अचेत न हृदय समावे॥
तुम तो अंस हमारे आहू। वहुतक जीव लोक ले जाहू॥
चार माहिं तुम अधिक पियारे। किहि कारन तुम सोच विचारे॥
हम तुम सों कछु अंतर नाहीं। परख सब्द देखो हिय माहीं॥
मन वच कर्म मोहि लौ लावे। हृदय दुतिया भाव न आवे॥
तुम्हरे घट हम वासा कीन्हा। निस्वय हम आपन कर लीन्हा॥
छन्द—आपनो कर लीन्ह धर्मनि रहि निःसंसय हिये॥
करहु जीव उवार दृढ़ ह्वै नाम अविचल तोहि दिये॥
मुक्ति कारन सब्द धारन पुरुस सुमिरन सार हो॥
सुरति वीरा अंक धीरा जीव का निस्तार हो॥६८॥
सोरठा—तुम वहियां धर्मदास, जंबु दीप कड़िहार जिव॥
पावे लोक निवास, तुहि समेत सुमरे मुझे॥६९॥

॥ चौपाई ॥

धर्मदास आपन कर लेऊँ। चौका कर परवाना देऊँ॥
तिनका तोड़ि लेहु परवाना। काल दसा छोड़ो अभिमाना॥

॥ आरती विधि वर्णन ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

चौका साज कहो मोहि ज्ञानी। मैं चीन्हा समरथ सहिदानी॥
जस कछु आहि आरती भाऊ। सो साहिब मुहि वरन सुनाऊ॥

॥ सद्गुरु वचन ॥

धर्मदास सुनु आरती साजा। जाते भागि चले यमराजा॥
सात हाथ को वस्तर लाओ। स्वेत चंदेवा छत्र तनाओ॥
स्वेत सिंहासन तहाँ बिछाओ। चंदन चौका प्रथम बनाओ॥
तापर आटा पूरहु भाई। सवा सेर तदुल लै आई॥
स्वेत मिठाई स्वेतहि पाना। पुंगी फल सेतहि परवाना॥
लौंग लायची कपूर विचारा। मेवा अस्ट करो पनवारा॥
नाना रूप सुगंध मँगायी। सो चौका पर आन

जिव पीछे नरियर लै आवे। सो साहिब कह आन चढ़ावे॥
जस कछु साहिब वचन सुनाई। धर्मदास सब साज मँगाई॥
लै साहिब के आगे कीन्हा। समरथ देहु मुक्ति कर चीन्हा॥

॥ सतगुरु बचन ॥

छन्द—चौका विधिते योतिया तब ज्ञानि बैठे जाय के॥
लघु दीरघ जीव धर्मनि सबहि लेव बुलाय के॥
पुरुस नाम प्रताप धर्मनि सबहि होय सुमता सिधकरो॥
नारि नर परिवारा सबमिल काल डर तबना डरो॥६९॥

सोरठा—तुम घर जेतिक जीव, सब कहँ वेगि लियावहू॥
सुरति करों दृढ़ पीव, बहुर काल पावे नहीं॥७०॥

॥ नारायन दासजीका कबीर साहबकी अवज्ञा करना ॥

॥ धर्मदास वचन—चौपाई ॥

धर्मदास तब सबहि बुलावा। आय खसम के चरन टिकावा॥
चरन गहो समरथ के आई। बहुरिन भव जल जन्मो भाई॥
दास नराइन पुत्र हमारा। कहाँ गयो बालक पग धारा॥
ता कहँ ढूँढ़ लाहु कोइ जायी। दास नराइन गुरू पहँ आयी॥
रूपदास गुरु कीन्ह प्रतीता। देखहु जाय पढ़त जहँ गीता॥
वेगि जाइ कहु तुम्हे बुलायी। धर्मदास समरथ गुरु पायी॥
सुनत सँदेसी तुरतहि जायी। दास नराइन जहाँ रहायी॥
चलहु वेगि जिन वार लगाओ। धर्मदास तुम कहँ हँकराओ॥

॥ नारायन दास वचन ॥

हम नहिं जाय पिता के पासा। वृद्ध भये सकलौ बुधिनासा॥
हरि सम कर्ता और न आही। जो कहँ छोड़ जपें हम काही॥
वृद्ध भये जुलहा मन भावा। हम मन गुरु विठलेस्वर पावा॥

॥ सदेसी वचन ॥

चल संदेसी आये जहँवा। धर्मदास बैठे रह जहँवा॥
कह संदेसी रह अरगाये। दास नराइन नाहीं आये॥

॥ धर्मदास वचन ॥

यह सुन धर्मदास पगु धारा। गये तहाँ जहँ बैठे वारा॥

छन्द—चलहु पुत्र भवन सिधारहु पुरुस साहिब आइया॥
करहु विनती चरन टेकहु न कर्म सकल कटाइया॥
सतगुरु करो तिहि जाय कहु चल वेगि तजि अभिमान रे॥
बहुरि ऐसो दाव बने नहिं छोड़ि दे हठ बावरे॥७०॥

सोरठा—भल सतगुरु हम पाव, यम के फंद कटाइया ॥
बहुरिन जग महँ आव, उठहु पुत्रतुम वेगहीं ॥७१॥

॥ नारायणदास वचन चौपाई ॥

तुम तो पिता गये बौराई। तीजे पन जिन्दा गुरु पाई ॥
राम नाम सम और न देवा। जाकी ऋषि मुनि लावहिं सेवा ॥
गुरु विठलेस्वर छांड़ेउ हीता। वृद्ध भये जिंदा गुरु कीता ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

बांह पकर तव लीन्ह उठाई। फिर सतगुरु के सम्मुख लाई ॥
सतगुरु चरन गहोरे वारा। यम के फन्द छुड़ावन हारा ॥
बहुरि न योनी संकट आवे। जो जिव नाम सरन गत पावे ॥
तज संसार लोक कहँ जाई। नाम पान गुरु होय सहाई ॥

॥ नारायणदास वचन ॥

तम मुख फेरे नरायन दासा। कीन्ह मलेछ भवन परगासा ॥
कहवा तें जिंदा ठग आया। हमरे पिता डारि बौराया ॥
वेद सास्त्र कहँ दीन्ह उठायी। आपनि महिमा कहत बनायी ॥
जिंदा रहे तुम्हारे पासा। तौलग हम घरकी छोड़ी आसा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

तब सतगुरु बोले मुसकायी। धर्मदास तुहि भाख सुनायी ॥
पुरुस अवाज उठो तिहिवारा। ज्ञानी वेगि जाहु संसारा ॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा। वेगि जाहु काटहु यम फाँसा ॥
ज्ञानी तत्छन मस्तक नाई। पहुँचे जहाँ धर्म अन्याई ॥
धर्म राय ज्ञानी कहँ देखा। विपरीत रूप कीन्हा तब भेखा ॥
सेवा वस दीप हम पाया। तुम भवसागर किसे जाया ॥
करौं संहार सहित तोहि ज्ञानी। तुम तो मर्म हमार न जानी ॥
तब हम कहा सुनो अन्याई। तुम्हरे डर हम नाहिं डराई ॥
जो तुम बोलउ वचन हँकारा। तत्छन तो कह डारों मारा ॥
तब निरंजन विनती लाई। तुम जग जाय जीव मुक्ताई ॥
सकलो जीव लोक तुव जावे। कैसे छुधासु मोरि बुझावे ॥
लछ जीव हम निस दिन खाया। सवा लछ नित प्रति उपजाया ॥
पुरुस मोहि दीन्ही रजधानी। तैसे तुम हू दीजे ज्ञानी ॥
जग में जाय हंस तुम लावहु। काल जाल तें तिन्ह छुड़ावहू ॥
तीनों जुग जीव थोरा गयऊ। कलियुग में तुम माड़ मडेऊ ॥

तब तुम आपन पंथ चलाऊ। जीवन लै सतलोक पठाऊ॥
इतना कही निरंजन बोला। तुम ते नहीं मोर बस डोला॥
और बन्धु जो आवत कोई। छिन मंहता कहँ खात बिगोई॥
मैं कहौं तो मनिहो नाहीं। तुमतो जात हौ जगत के माँहीं॥
अब जनि जाहु फेर जग माहीं। सब्द तुम्हार माने कोइ नाहीं॥
कर्म भ्रम मैं अस करु ठाढ़ा। जाते कोई न पावै बाढ़ा॥
घर घर भूत भ्रम उपजायब। धोखा देइ देइ जीव भुलायब॥
मद्य मांस भक्षं नर लोई। सर्व मांस मद नर प्रिय होई॥
तुम्हरी कठिन भक्ति है भाई। कोई न माने कहौ बुझाई॥
तेहि क्षण काल सनहम भाखा। छल बल तुम्हरो जानि हम राखा॥
छन्द—देव सत्य सब्द दिढ़ाय हंसहि भ्रम तेरो टारेऊं॥
लक्ष बल तुम्हार सब चिन्हाय डारू नामबलजिव तारेऊं॥
मन कर्म बानी मोहि सुमिरे एक तत्व लौ लाय हैं॥
सोस तुम्हरे पांव दे जीव अमर लोक सिधाय हैं॥७१॥
सोरठा—मरदे तुम्हरो मान, सूरा हंस सुजान कोइ॥
सत्य सब्द परमान, चीन्हे हंसहि हरख अति॥७२॥
॥ चौपाई॥
कहै धरमसुनु अंस सुखदायी। बात एक मुहि कहौं बुझायी॥
यहि युग कौन नाम तुम्ह होई। तौन नाम मुहि राखो गोई॥
नाम कबीर हमार कलि माहीं। कबीर कहत जम निकट न आही॥
इतना सुनत बोल अन्याई। सुनौ कबीर मैं कहौ बुझायी॥
तुम्हरे नाम लै पंथ चलायब। यहि विधि जीवन धोख लगायब॥
द्वादश पंथ करब हम साजा। नाम तुम्हार करब आवाजा॥
मृत्यु अन्धा है हमरो अंशा। सुकृत के घर होवे बंसा॥
मृत्यु अन्धा तुम्हरे ग्रह जैहैं। नाम नरायन नाम धरैहैं॥
पिरथम अंस हमारा जाई। पीछे अंस तुम्हारा भाई॥
इतनी विनती मानो मोरी। बार बार मैं करौं निहोरी॥
तब हम कहा सुनो धर्मराया। जीवन काज फंद तुम लाया॥
ता कहँ वचनहार हमदीन्हा। पीछे जगहि पयाना कीन्हा॥
सो मृत अन्धा तुम यह आवा। भयेउ नरायन नाम धरावा॥
काल अंस तो आहि नरायन। जीवन फंदा काल लगायन॥
छन्द—हम नाम पंथ प्रकास करिहैं जीव धोखा लावई॥

दूत भेद न जीव पावे जीव नरकहि नावई ॥
जिमि नाद गावत पारधी वस नाद मृग कस कीन्हेऊ ॥
नाद सुनि ढिग मृग आयो चोट तापर दीन्हेऊ ॥७२॥
सोरठा--तस यम फंद लगाय, चेतन द्दारा चेति है
वचन वंस जिन पाय , ते पहुँचे सतलोक कहँ ॥७२॥

॥ धर्मदास वचन—चौपाई ॥

द्वादश पंथ काल सों हारा । सो साहिब मोहि कहो विचारा ॥
कौन पंथ की कैसी रीती । कहिये सतगुरु होय परतीती ॥
हम अजान कछु मर्म न जाना । तुम साहिब सत पुरुस समाना ॥
मो किंकर पर काया दाया । उठि धर्मदास गहे दोइ पाया ॥

॥ द्वादश पंथ का नाम ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मनि बूझहु भगट सँदेसा । मेटहु तोर सकल भ्रम भेसा ॥
द्वादस पंथ नाम समझाऊँ । चाल भेद सब तोहि लखाऊँ ॥
जस कछु होय चाल व्यवहारा । धर्मदास मैं कहौं पुकारा ॥
तोरे जी का धोख मिटाऊँ । चित संसय सब दूर बहाऊँ ॥
प्रथम पंथ का भाखों लेखा । धर्मदास चित करो विवेका ॥
मृत्यु अन्धा इक दूत अपारा । तुम्हरे ग्रह सो लिये अवतारा ॥
जीवन काज भयेउ दुखदाई । बार बार मैं कहौं चिताई ॥
दूजा तिमिर दूत चल आवै । जात अहीरा नफर कहावै ॥
बहुतक ग्रन्थ तुम्हार चुरैहैं । आपन पंथ निहार चलैहैं ॥
पंथ तीसरे तोहि बताऊं । अंध अचेत दूत चल आऊं ॥
होय खवास आय तुम पासा । सुरत गुपाल नाम परकासा ॥
अपन पंथ चलावे न्यारा । अक्षर जोगजीव भ्रम डारा ॥
चौथा पंथ सुनो धर्मदासा । मन भंग दूत करै परकासा ॥
कथा मूल ले पंथ चलावे । मूल पंथ कहि जग महि आवे ॥
लूदी गाम जीव समुझाई । यही नाम पारस ठहराई ॥
भंग सब्द सुमिरन मुख भाखे । सकल जीव वाका गहि राखे ॥
छन्द—पंथ पांचे सुनो धर्मनि ज्ञान भंगी दूत जो ॥
पंथ जेहि टकसार है सुर साधु आगम भाख जो ॥
जीभ नेत्र ललाट के सब रेख जीव के परखावही ॥
तिलमसा परिचय देखि के तब जीव धोख लगावही ॥७३॥

सोरठा—जस जिहि कर्म लगाय, तस तिहि पान खवाइहैं ॥
नारी नर गाड बंधाय, चहुँ दिस आपन फेरिहैं ॥७४॥

॥ चौपाई ॥

छठे पंथ कमाली नाऊ। मन मकरंद दूत जग आऊ ॥
मुरदा माहिं कीन्ह तिहिं वासा। हम सुत होय कीन्ह परकासा ॥
तिवहि झिलमिल ज्योनि दृढ़ाई। यहि विधि बहुत जीव भरमाई ॥
जौ लगि दृष्टि जीव कर होई। तौ लगि झिलमिल देखे सोई ॥
दोनों दृष्टि नाहिं जिन देखा। कैसे झिलमिल रूप परेखा ॥
झिलमिल रूप कालकर मानो। हिरदे सत्य ताहि जनि जानो ॥
तासो दूत आहि चिंत भगा। नाना रूप बोल मन रंगा ॥
दोंन नाम कह पंथ चलावे। बोलनहार पुरुस ठहरावे ॥
पांच तत्व गुनतीन बतावे। यहि विधि ऐसा पंथ चलावे ॥
बोलत बचन ब्रह्म है आपा। गुरु वसिष्ठ राम किमि थापा ॥
कृस्न कीन्ह गुरु की सिवकाई। ऋषि मुनि और गने को भाई ॥
नारद गुरु कहँ दोस लगावा। ताते नर्क वास भुगतावा ॥
बीजक ज्ञान दूत जो थापे। जस गूलर कीड़ा घट ब्यापे ॥
आपा थापी भला न होई। आपा थापि गये जिव रोई ॥
अब मैं आठों पंथ बताऊ। अकिल भंग दूत समझाऊं ॥
परमधाम कहि पंथ चलावे। कछु कुरान कछु बेद चुरावे ॥
कछुकछु निरगुण हमरो लीन्हा। तारतव पोथी इक कीन्हा ॥
राह चलावे ब्रह्म ग्याना। करमी जीव बहुत लपटाना ॥
नवयें पंथ सुनो धर्म दासा। दूत विसम्भर करे तमासा ॥
राम कबीर पंथ कर नाऊ। निरगुन सरगुन एक मिलाऊ ॥
पाप पुन्य कहँ जाने एका। ऐसे दूत बतावे टेका ॥
सतनामी कह पथ चलावें। चार वरन जिव एक मिलावें ॥
ब्राह्मन औ छत्रि परभाउ। वैश्य सूद्र सब एक मिलाऊ ॥
सतगुरु सब्द न चीहें भाई। बाँधे टेक नरक जिव जाई ॥
काया कथनी कहि समुझावे। सत्य पुरुस की राह न पावे ॥

छन्द—सुनहु धर्मनि काल बाजी करहि बड़ फन्दावली ॥
अनेक जीवन लेइ गरासे काल कर्म कमावली ॥
जो जीव परखे सब्द मम सो निसतरे जम जालते ॥

गहे नाम प्रताप अविचल जाय लोक अमानते ॥
सोरठा—पुरुस सब्द है सार, सुमिरन अमी अमोल गुन ॥
हंसा होय भौः पार, मन वचकर जो दृढ़ गहे ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

पंथ एकादस कहो विचारा । दुरगदानि जो दूत अपारा ॥
जीव पंथ कहि नाम चलावे । काया थाप राह समुझावे ॥
काया कथनी जीव बतायी । भरमें जीव पार नहिं पायी ॥
जो जिव होय बहुत अभिमानी । सुनके ज्ञान प्रेम अति ठानी ॥
अब कहुँ कादस पंथ प्रकासा । दूत हंस मुनि करे तमासा ॥
फिरिफिरि आवे फिरिफिरि जाई । बार बार जग में प्रगटाई ॥
जहां जहां प्रगटे यम दूता । जीवन से कह ज्ञान बहूता ॥
नाम कबीर धरावे आपा । कथे ज्ञान काया कहँ थापा ॥
जब जब जनम धरे संसारा । प्रगट होय के पंथ पसारा ॥
करामात जीवन बतलावे । जिव भरमाय नरक महँ नावे ॥

छन्द—अस काल परबल सुनहु धर्मनि करे छल मति आय के ॥
मम वचन दीपक दृढ़ गहे मैं लेहु ताहि बचाय के ॥
अंस हंसन तुम चितावो सत्य शब्दहि दान दे ॥
सब्द परखे यमहि चीन्हे हृदय दृढ़ गुरु ज्ञान ते ॥७६॥
सोरठा—चित चेतो धर्मदास, यमराजा अस छल करे ॥
गहे नाम विस्वास, ताकहं यम नहिं पावई ॥७६॥

॥ चौपाई ॥

हे प्रभु ? तुम जीवन के मूला । मेटहु मोर सकल दुःख मूला ॥
आहि नरायन पुत्र हमारा । अब हमतो कह दीन्ह निहारा ॥
काल अंस ग्रह जन्मो आई । जीवन काज भयो सुखदाई ॥
धन सतगुरु तुम मोहि लखावा । काल अंस को भाव चिन्हावा ॥
पान प्रवाना मो कहँ दीजे । हम घर जीव अपन कर लीजे ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

मान्यो धर्मनि वचन हमारा । दास नरायन दीन्ह निकारा ॥
धर्मनि वेग लेहु परवाना । पीछे कहो अपन सहिदाना ॥
चौकी कीन्ह सब्द धुनि गाजा । ताल मृदंग झालरी बाजा ॥
सकल जीव का तिनका तोरा । जाते काल न पकरे छोरा ॥
सत्य अंक साहब लिखि दीन्हा । तत्छन धर्मदास गहि लीन्हा ॥

धर्मदास परवाना लीन्हा। सात दंडवत तबही कीन्हा॥
सकल जीव परवाना पाया। चौका साज उठाये भावा॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास विनवै सिरनाई। साहिब कहो जीत सुखदाई॥
किहि विधि जीव तरै भौसागर। कहिये मोहि हंस पति आगर॥
कैसे पंथ कहौं परकासा। कैसे हंसहि लोक निवासा॥
दास नरायन सुत जो रहिया। काल जानता कह परिहरिया॥
अब साहिब सो राह बतायी। कैसे हंसा लोक समायी॥

॥ वचन चूणामनि की उत्पत्ति—सतगुरु बचन ॥

नौतम सुरति पुरुस के अंसा। तुम ग्रह प्रगट होइ है वंसा॥
वचन वंस जग प्रगटे आपी। नाम चुरामनि आप कहाई॥
पुरुस अस के नौतम वंसा। काल फन्द काटे जिव संसा॥

छन्द—काल यहि नाम प्रताप धर्मनि हंस छूटे काल सो॥
सच नाम मन विच दृढ़ गहे सो निस्तरे यम जाल सो॥
यम तासु निकट न आवई जेहि वंस की परतीति हो॥
कलि काल के सिर पांव दै चले जीव भवजल जीति हो॥७५॥

सोरठा—तुससो कहौं पुकार, धर्मदास चित परखहु॥
तेहि जिव लेहु उबार, बचन वस जो दृढ़ गहे॥७७॥

॥ धर्मदास वचन ॥

हे प्रभु विनय करों कर जोरी। कहत वचन जिव त्रासै मोरी॥
वचन वंस पुरुस के अंसा। पावउँ दर्स मिटे जिव अंसा॥
इतनो विनय मान प्रभु लीजे। हे साहिब ! यह दाया कीजे॥
तब हम जानिहि सतकी रीती। वचन तुम्हार होय परतीती॥

॥ सतगुरु वचन ॥

सुन साहिब अस वचन उचारा। मुक्तामनि तुम अंस हमारा॥
अतिअधीन सुकृत हठ लायी। तिन कहँ दर्स देहु तुम आयी॥
तब मुक्तामनि छन इक आये। धर्मदास तब दर्सन पाये॥

॥ धर्मदास वचन ॥

गहि के चरन परे धर्मदासा। अब हमरे चित पूजी आसा॥
बारम्बार चरन चित लाया। भले पुरुसतुम दस दिखलाया॥
पाय चित भयो अनंदा। जिमि चकोर पाये निसि चंदा॥
प्रभु दया करो तुम ज्ञानी। वचन वंस प्रगटे जग आनी॥

॥ सतगुरु वचन ॥

तब साहिब अस वचन सुनाई। दसैं मास प्रगटैं जग आई ॥
तुम ग्रह आय लेहि अवतारा। हंसन काज देह जग धारा ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

हे प्रभु ! हम इन्द्री वह कीन्हा। कैसे अंस जन्म जग लीन्हा ॥
धर्मदास अस विनती लायी। हे प्रभु ! मो कह कहु समझाई ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

पुरुष नाम धर्मनि लिखि देहू। जाते अंस जन्म सो लेहू ॥
लखहु सैन में देउँ लखाई। धर्मदास सुनिये चित लाई ॥
लिखो पान पुरुष सहिदाना। आमिन देहु पान परवाना ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धर्मदास आमिन हँकरावा। लाय खसम कै चरन परावा ॥
धरमदास परवाना दीन्हा। आमिन आय दंडवत कीन्हा ॥
दसों मास जब पूजी आसा। प्रगटे अंस चुरामन दासा ॥
कहिये अगहन मास बखानो। शुक्लपक्ष उत्तम दिन जानी ॥
मुक्तामनि प्रगटे तब आए। द्रव्य दान औ भवन लुटाए ॥
धन्य भाग मोरे ग्रह आए। धर्मदास गहि टेके पाए ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

मुक्ता के अक्षर मुक्तायन। जीवन काज देह धर आयन ॥
अत्र छाप अब प्रगटे आए। यमसों जीव लेहिं मुक्ताए ॥
जीवन केर भयी निस्तारा। मुक्तामनि आये संसारा ॥

॥ ब्यालीस वंसके राज्य की स्थापना ॥

बहुत दिवस तब गए बितायी। तब साहिब इक वचन सुनायी ॥
धर्मदास लो साज मँगाई। चोका जुगत करब हम भाई ॥
यादव वंस बयालिस राजू। जाते होय जीव को काजू ॥
धर्मदास सब लाज मँगाई। ज्ञानी आगे आन धराई ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

और साज चाहो जो ज्ञानी। सो साहिब मोहि कहो बखानी ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

साहिब चौका जुगत मड़ावा। जो चहिये सो तुरत मँगावा ॥
बहुत भाँति सों चौक पुरायी। चूरामनि कहँ लै बैठायी ॥
वंस बयालिस दीन्हा राजू। तुमतें होय जीव का काजू ॥

पुरुस वचन तुम जगमहँ आये। तेहि विधि जीव लेहु मुक्ताये॥
वंस तुम्हारे बयालिस होई। सकल जीव कहँ तोरें सोई॥
दस सहस्र साखा तुव ह्वै हैं। तुम्हरे हाथ सबै निरवहि हैं॥
नाद पुत्र तो अंस हमारा। तिनते होय पंथ उजियारा॥
विंद तुम्हार न मानो ताही। आपा वसी न सब्द समाही॥
सब्द की चाल नाद कहँ होयी। विंद तुम्हारा जाय बिगोयी॥
विंद ते होय न नाद उजागर। परख के देखहु धर्मनि नागर॥
चारहु युग देखहु संवादा। पंथ उजागर कीन्हो नादा॥
कह निरगुन कह सर्गुन भायी। नाद विना नहिं चले पँथायी॥
बिंद पुत्र आ संग न छाड़े। नातो जान देह गुन मांडे॥
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा। ताते दीन्ह मुक्ति का डोरा॥

॥ वंस में विघ्न का भविष्य ॥

नाद विंद जो पंथ चलैहै। चूरामनि हंसन मुकतैहै॥
धर्मदास तुव वंस अज्ञाना। चीन्हे नहीं अंस सहिदाना॥
जस कछु आगे होवे भायी। सो चरित्र तोहि कहीं बुझायी॥
छठये पीढ़ि विंद तुम होयी। भूलो बिंद बंस तुम सोयी॥
टकसारी के लैहै पाना। अस तुम विंद होय अज्ञाना॥
चाल हमार वंस तुम छाड़ें। टकसारी के मत सब माड़ें।
चौका तैसे करे बनायी। बहुत जीव चौरासी जायी॥
आपा हंग अधिक होय ताही। नाद पुत्र सों झगर कराही॥
होवे दुरमति वंस तुम्हारा। वचन वंस रोके बटवारा॥
होवे दुरमति वंस तुम्हारा। ताते होवे बिन्द छैकारा॥
अंस हमारे पंथ चलाई। ताहि देख सो रार बढ़ाई॥
वंस तुम्हार ग्रन्थ कथि राखैं। वचन सवंस की निंदा भाखैं॥
जा कहँ पढ़े विंद कड़िहारा। ता कह होय बहुत हँकारा॥
ताते विन्द वंस होय नासा। तुमसे सत्य कहों धर्मदासा॥
अपना स्वारथ चीन्ह न पैहैं। जीवन लै चौरासी नैहैं॥
यहि विधि दूतसगावें बाजी। देखे जीव होय बहु राजी॥
ते जिव जाय काल मुख परिहैं। नाम नरायन हित चित धरिहैं॥
दास नरायन बाँधे आसा। तिन कहँ होय नर्क का वासा॥
ताते तोहि कहीं समुझाई। जीवन कहँ तुम कहो चिताई॥

बहुत जीव धोखा दे मारी। मो जिव जाय काल दरबारी ॥
बचन बंस को जो जिव जाना। सत्य सब्द चीन्हे सहिदाना ॥
ा कहँ यम नहिं रोके आई। वचन बंस जिन चीन्हा भाई ॥
छन्द—मम ज्ञान दीपक जाहि कर सों चीन्हही जमजाल हो ॥
तजि काग विसम जँजाल हंसा धावही निज काज हो ॥
रहनि गहनि विवेक बानी परखि हैं कोइ जोहरी ॥
गहै सार असार परि हरि गिरा जे मम हित करी ॥७६॥
सोरठा—धर्मदास लेहु जान, धर्मराय के छल मते ॥
हंसहि कहोसहि दान, जाते जम रोके नहीं ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास मैं कहौं बुझायी। वचन हमार गहो चित लायी ॥
—वन को तुम कहो बुझायी। वचन वंस जग तारन आयी ॥
न हमार न कर विस्वासा। सो जिव करे नरक में वासा ॥
चन वंस को जोजिव जाना। चीन्हें सत्य सब्द सहिदाना ॥
ता कह जमनहिं रोके आयी। नाद बंस जिन चीन्हा भायी ॥
विन्दवन्स कह समझावहु भाऊ। ताकह तुम अस भेद बताऊ ॥
नाद पुत्र जो परगट होयी। ताकह विन्द मिलै तुवसोयी ॥
प्रेम भक्ति हिरदय मों राखे। सब्द हमार सत्यमत भाखै ॥
तव तुव बुन्द तरे भौसागर। कहौं भेद सुनु धर्मनि नागर ॥
हम हैं प्रेम भक्ति के साथी। चाहों न तोर तुरंग औ सायी ॥
अहंकार ते जो होतेउँ राजी। तो हम थापत पंडित काजी ॥
नाता जान करे अधिकाई। ताकहँ लोक वदो नहिं भाई।
—ा तुम्हार हुइ है कढ़िहारा। तैसे जानो साख तुम्हारा ॥
छन्द—पुरुस वंस नहिं दूसरे तुम सुनहु धर्मनि नागरा ॥
अंस नौ तम पुरुस के सो प्रगट भै भौसागरा ॥
देख जीवन कहँ विकल तव देह धरि जग आयऊ ॥
वंस दूजो जो कहे तेहि जीव यम लै खायऊ ॥७७॥
सोरठा—वंस पुरुस के रूप, ज्ञान जोंहरी परखि है ॥
होवे हंस सरूप, वंस छाप जो पाइ है ॥७९॥

॥ वंसका महातम चौपाई ॥

वंश हाथ परवाना पावे। सो जिव निरभय लोके जा—
—ँ यम नहिँ रोके बाटा। छोड़ अठासी हैं है घा—

कोट ज्ञान भाखे सुख दाता। नाम कबीर जपे दिन राता॥
बहुतक ज्ञान कथे असरारा। वंस बिना सब झूठ पसारा॥
जो ज्ञानी करि है बकवादा। तासो बूझहु ब्यंजन स्वादा॥
कोट यतन सो विंजन करई। साम्हर बिन फीकी सब रहई॥
जिनिवि जनमिति ज्ञान बखाना। वंस छाप सबरस सम जाना॥
चौदा कोटि है ज्ञान हमारा। इन ते सार सब्द है न्यारा॥
नो लख उडगन उगें अकासा। ताहि देख सब होत हुलासा॥
होवे दिवस भानु उगि आवे। तब उड़गन की ज्योति छिपावे॥
नौलख तारा कोटि गियाना। सार सब्द देखहु जस भाना॥
कोटि ज्ञान जोवन समुझावे। वंस छाप हंसा घर जावे॥
उदधि माझ जस चलै जहाजा। ताकर और सुनो सब साजा॥
जस मोहित तस सब्द हमारा। जस करिया तस वंस तुम्हारा॥

छन्द—बहु भाँति धर्मनि कहौं तुमसो पुरुस मूल बखान हो॥
वंस सो दूजो करे सो जाय यमपुर थान हो॥
वंस छाप न पावई जिव सब्द निसि दिन गावहो॥
काज फंदा ते फँदै तेहि मोहि दोस न लावहो॥७८॥

सोरठा—तजे काग की चाल, परखि सब्द सो हंस हो॥
ताहि न पावे काल, सार सब्द जो दृढ़ गहे॥८०॥

॥ विन्द वंस के उद्धार का मार्ग॥

॥ धर्मदास वचन—चौपाई॥

धर्मदास विनती अनुसारी। हे प्रभु! मैं तुम्हरी बलिहारी॥
जीवन काज वंस जग आवा। सो साहिब सब मोहि पुनावा॥
वचन वंस चीन्हे जो ज्ञानी। ता कहँ नहिं रोके दुर्गदानी॥
पुरुस रूप हम वंसहि जाना। दूजा भाव न हृदये आना॥
साहिब विनती सुनो हमारी। तुम्हरी दया जीव निस्तारी॥
सकल जीव तुव लोकहि जायी। दास नरायन राह लखायी॥
हम घर पुत्र कहावा आयी। ताते मोहि भई दुचितायी॥
भौसागर तारे जित वंसा। दान नरायन काल के अंसा॥
ताकी मुक्ति करो तुम स्वामी। विनती मानो अंतरयामी॥

॥ सतगुरु वचन॥

बार बार धर्मनि समुझावो। तुम्हारे हृदय प्रतीति न आवो॥
चौदह यम तो लोक सियावे। जीवन फंद कहो किन लावे॥

अब हम चीन्हो तुम्हरी ज्ञाना। जान बूझि तुम होहु अजाना ॥
पुरुस आज्ञा मेटन लागा। बिसर्यो मोह ज्ञान मदजागा ॥
मोहि तिमिर जब हिरदय छावे। बिसर ज्ञान तब काज नसावे ॥
अस हमारा जब प्रगटायी। धर्म तोरि जग भक्ति दृढ़ायी

सोरठा—पुरुस बंस नहिं आन, जीव बस्य सब कालके ॥
दृढ़ परतीत न मान, कृतिम चित्त दे पूजहीं ॥ ८१ ॥

छन्द—अस के प्रतीत दृढ़ाय गुरुपद नेह अस्थिर लाइये ॥
गुरु ज्ञान दीपक बार निज उर मोर तिमिर नसाइये ॥
गुरु पद पराग प्रताप ते अघ पुंज तमहि नसाइया ॥
उर मध्य युक्ति न तरन की विस्वास सब्द समाइया ॥७९॥

सोरठा—यह भव अगम अथाह, नाम प्रेम दृढ़ के गहे ॥
लहे कृपा गुरु थाह, सतगुरु सो जब मिल रहे ॥८२॥

छन्द—मन कर्म नाना भावना यह जगत सब लपटान हो ॥
जीव यम भ्रम जाल डारेउ निज नहिं जान हो ॥
गुरु बहुत है संसार में सब फँदे किरतिम जाल हो ॥
सतगुरु बिना नहिं भ्रम मिटे बड़ा प्रबल काल कराल हो ॥८०॥

सोरठा—सतगुरु को बलिहार, अजर सँदेसा जो कहे ॥
ताहि मिले होयन्यार, पुरुस बचन जब मेटई ॥८१॥

छन्द—सतनाम अमी अमोल अमिचल अंक बीरा पावई ॥
तेहि काग चाल मराल मति गहि गुरु चरन लौ लावई ॥
और पंथ कुमारग सकल बहु सो नाहिं मन लावई ॥
गुरु चरन प्रीति सुपंथ धर्मनि हंस लोक सिधावई ॥८३॥

सोरठा—गुरु पद कीजे नेह, कर्म भर्म जंजाल तजि ॥
निज तन जाने खेह, गुरु मुख सब्द प्रतीत कर ॥८४॥

॥ धर्मदास वचन-चौपाई ॥

साहिब विनती सुनो हमारी। जीवन निरनय कहो विचारी ॥
कौन जीव कहँ देहो पाना। समरथ कहो वचन सहिदाना ॥

॥ जीवों का अधिकार वर्णन ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

देखहु जाहि दीन लौ लीना। भक्ति मुक्ति कह बहुत अधीना ॥
दया सील छमा चित जाही। धर्मनि नाम पान दो ताही ॥
तासन पुरुस सँदेसा कहि दो। निसदिन नाम ध्यान दृढ़ गहि हो ॥

दया हीन सब्द नहिं माने। काल दसा हो वाद बखाने॥
चंचल दृस्टि होय पुनि जाही। सत्य सब्द ताहि न समाही॥
चिबुक बाहर दसन दिखाव। जानहु दूत भेष धरि आय॥
मध्य नेत्र जिहि तिल अनुमाना। निसच्य काल रूप तिहि जाना॥
ओछा सीस दीर्घ जिहि काया। ताके हृदय कपट रह छाया॥
तेहि जनि देहु पुरुस सहिदानी। यह जिव करे पंथ की हानी॥

॥ काया बिचार ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे प्रभु जन्म सुफल गम कीन्हा। यम सों छोर अपन कर लीन्हा॥
जो सहस्र रसना मुख होई। तो तुव गुन बरने नहिं कोई॥
हे प्रभु हम वड़ भागी आहीं। निज सम भाग कहीं मैं काहीं॥
सोई जीव वड़ भागी होई। जासु हृदय तम नाम समोई॥
अव यक विनती सुनौ हमारी। यहि तन निर्नय कहो विचारी॥
कौन देव कह कहवां रहई। कहवाँ रहि कारक सो करई॥
जाहि ठाम है जासु अस्थाना। साहव दरहि कहो सहिदाना॥
कौन कमल केताजप परगासा। रात दिवस लग केतिक स्वासा॥
कहवाँ से सब्द उठि आवे। कहो कहवाँ वह जाइ समावै॥
कोई जीव झिलमिल कह देखा। सो साहिव मोहि कहो विवेका॥
कौन देव के दरसन पाई। तिहि अस्थान कहो समुझाई॥
तुम घट प्रेम भक्ति हम चीन्हा। ताते धर्मदास तोहि दीन्हा॥
यहिविधि सीस मिले जो आई। पुरुस संधि नहिं जाहि दुराई॥

छन्द—जस भुवंगम मनि जुगावे अस सीस गुरु आज्ञा गहे।
सुत नारि सव विसराय विसया हंस होय सत पदलहे॥
गुरु वचन अटल अमान धर्मनि सहै विरला सूर हो।
हंस हो सतपुर चले तेहि जीवन मुक्ती दूर हो॥८२॥

सोरठा—गुरुपद कीजै नेह, कर्म भर्म जंजाल तज॥
निज तन जाने खेह, गुरुमुख सब्द विश्वास दृढ़॥८४॥

॥ धर्मदास वचन ॥

॥ चौपाई ॥

चूक हमारी वकसहु स्वामी। विनती मानहु अंतरजामी॥
हम अज्ञान सब्द तुम टारा। विनय कीन्ह हम वारम्वारा॥
[illegible] तुम्हारे गहऊँ। जो संतति की विनती करऊँ॥

पिता जानि बालक हटलावे। गुन औगुन चित ताहि न आवे॥
कोटिक औगुन बालक करई। मात पिता हृदये नहिं धरई॥
पतित उधारन नाम तुम्हारा। औगुन मोर न करहु बिचारा॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास तुम पुरुस के अंसा। तजहु दास नारायन बंसा॥
हम तुम धर्मनि दूजा नाहीं। परखहु सब्द देखि हिय माहीं॥
तुम तो जीव काज जग आऊ। भौसागर महँ पंथ चलाऊ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

हे प्रभु तुम सुख सागर दाता। अब हम सुनहिं न लाउब नाना॥
जब लग हम तुमहीं नहिं चीन्हा। तब लग मता काल हर लीन्हा॥
जब ते तुम आपन कर जाना। तब ते मोहि भयो दृढ़ ज्ञाना॥
अब नहिं दुतिया मोहि समाई। निस्चय गहौं चरन सुखदाई॥
तुमतजि मोहि आन की आसा। तो मुहि होय नरक महँ बासा॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास तुम मो कहँ चीन्हो। बचन हमारपुत्र तजि दीन्हो॥
तब सिस हृदय मैल कुछ नाहीं। गुरु स्वरूप तबही दरसाहीं॥
इक मत सिस्य गुरु पद लागे। छूटे मोह ज्ञान तब जागे॥
दीपक ज्ञान हृदय जब आवे। मोह भर्म तब सबै नसावे॥
उलटि आय सतगुरु कहँ हेरा। बुन्द सिंधु का भयो निबेरा॥
सिन्धुहि बुन्द समाना जाई। कहँ कबीर मिटी दुचिताई॥
धर्मनि यह गुरु पद परतापा। गुरु पद गहे तजे भ्रम दापा॥
यहै गहे सब दुःख नसाई। बिनगुरु सिस्य निरासे जाई॥
सगुन भाव पेख धर्मदासा। कस दृढ़ गह प्रतीन बिस्वासा॥
कर्मी जीवन देख बिचारी। कस दृढ़ गहे प्रतीत सम्हारी॥
आपहि ले आवे नर माटी। करता कहँ मूरत गढ़ ठाटी॥
तापर अक्षत पुहुप चढ़ावे। प्रेम प्रतीति ध्यान मन लावे॥
करता कर थापे पुनि ताही। भंग प्रतीत होय नहिं जाही॥
जस धोखा महँ प्रेम समावे। सोई प्रेम सजीव मन लावे॥
सो जिव होय अमोल अपारा। साहिब को है हंस पियारा॥
बिन बिस्वास जीव नहिं तरई। गुरु प्रतीत बिन नर्कहि परई॥

छन्द—दानी और न दूसरा जग गुरु मुक्ति दानी जानिया॥
अधम चाल छुड़ाय के गुरु ज्ञान अंग लखाइया॥

हंस भक्ति दृढ़ावही दे अंक बीरा नाम हो ॥
दुष्ट मित्र चिन्हाय के पहुँचावहीं निज ठाम हो ॥८३॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदिन सुनु सरीर बिचारा । पुरुस नाम काया ते न्यारा ॥
प्रथमहि मूल कमल दलचारी । तहँ रहु देव गनेस खरारी ॥
विद्या गुनदायक तेहि कहिये । खटसत अजपाध्यान सो लहिये ॥
मूल कमलके उर्द्ध अखारा । खट पखुरी को कमल विचारा ॥
ब्रह्मा सावित्री तहँ सुर राजे । खट सहस्र अजपा तहँ गाजे ॥
पदुम अष्टदल नाभिअस्थाना । हरिलक्ष्मी तहँ बसहिं प्रधाना ॥
जाय जहाँ खट सहस परमाना । गुरु गमते लखि परइ ठिकाना ॥
ताऊ पर पंकज लखु दल द्वादसु । रुद्र पारबती ताहि कमल बसु ॥
खट सहस्र अजपा तहँ होई । गुरु गम ज्ञान ते देखु बिलोई ॥
खोडस पत्र कमल जिव रहई । सहस एक अजपा तहँ चहई ॥
भँवर गुफा दल दोहु परमाना । तहँवा मन राजा को थाना ॥
सहस एक अजपा तेहि ठाई । धरम दास परखो चित लाई ॥
सुरति कमल सतगुरु के बासा । तहँवा एतिक अजपा परकासा ॥
एक सहस खट सत औ बीसा । परखहु धर्मनि हंसन ईसा ॥
दोइ दल उर्ध्व सुन्य अस्थाना । झिलमिल ज्योति निरजन जाना ॥

मनका व्यवहार

धर्मनि यह मनको व्यवहारा । गुरु राम ते परखो मतसारा ॥
मनुआं शून्य ज्योति दिखलावे । नाना भर्म मनहि उपजावे ॥
निराकार मन उपजा भाई । मन की माड तिहूँ पूर छाई ॥
अनेक ठांव जिव माथ न मावे । आप न चीन्हे धोखा धावे ॥
यह सब देखु निरजन आसा । सत्य नाम बिन मिटे न फासा ॥
जैसे नट मर्कट दुख देयी । नाना नाच नचावन लेयी ॥
यह विधि यह मन जीव नचावे । कर्म भर्म भव फंद दृढ़ावे ॥
सत्य सब्द मन देई उछेदी । मन चीन्हें कोइ बिरले भेदी ॥
पुरुस सँदस सुनत मन दहई । आपनि दिसा जीव लै बहई ॥
सुन धर्मनि मग के व्यवहारा । मनको चीन्ह गहे पद सारा ॥
वा तन भीतर और न कोई । मन अरु जीव रहे घर दोई ॥
पाँच पचीस तीन मन झेला । ये सब आहि निरंजन चेला ॥
पुरुस थंस जिव आन समाना । सुधि भूला निज घर सहिदाना ॥

इन सब मिलिके जीवहि घेरा। बिनु परिचय जिव यमको चेरा ॥
भर्म बसी जिव आप न जाना। जैसे सुअना नलनि फंदाना ॥
जिमि के हरि छाया जल देखे। निज छाया दुतिया वह लेखे ॥
धाय परे जल प्रान गँवावे। अस जिव धोखा चीन्ह न पावे ॥
काँच महल जिमि भूंके स्वाना। निज अकार दुतिया कर जाना ॥
दुतिया अवाज उठे तहँ भाई। भूंकत स्वान देहु लखि धाई ॥
ऐसे यम जिव धोख लगाई। ग्रासे काल तबे पछताई ॥
सतगुरु सब्द प्रीति नहिं करई। ताते जीव नष्ट सब परई ॥
किरतम नाम निरंजन साखा। आदि नाम सतगुरु अभिलाखा ॥
सतगुरु चरनप्रीति नहिं करई। सतगुरु मिलि निज घर संचरई ॥
धर्मदास जिव भये बिगाना। धोखे सुधा गरल लपटाना ॥
असके फन्द रच्यो धर्मराई। धोखावसि जिव परे भुलाई ॥
और सुनो मन कर्म पसारा। चीन्हि दुस्ट जिव होय नियारा ॥

छन्द—चीन्ह व्है रहे भिन्न धर्मनि सब्द मम दीपक लहे ॥
यह भिन्न भाव दिखाय तो कहँ देख जिव यम ना गहे ॥
जौलों गहपति जागे नाहीं संधि पावत तस्करा ॥
रहत गाफिल भर्म के वासी तहाँ तस्कर संचरा ॥८४॥

सोरठा—जाग्रत काल अनूप, ताहि काल पावे नहीं ॥
भर्म तिमिर अंध कूप, छल यमरा जीवन ग्रसे ॥८५॥

॥ चौपाई ॥

मनको अंग सुनो जन सूरा। चोर साहु परखो गुरु पूरा ॥
मनही आही काल कराला। जीव नचावे करे बिहाला ॥
सुन्दर नारि दृष्टि जब आवे। मन उमङ्ग तन काम सतावे ॥
भये जोर मन ले तेहि धावे। ज्ञान हीन जिव भटका खावे ॥
नारि भोग इन्द्री रस लीन्हा। ताकर पाप जीव सिर दीन्हा ॥
द्रव्य पराइ देख मन हरखा। कहे लेव अस व्यापेउ तिरखा ॥
द्रव्य पराइ आन सो आने। ताके पाप जीव ले साने ॥
कर्म कमावे या मन भोगा। सासत सहे जीव गति भोरा ।
पर निंदा पर द्रव्य गिरासी। सो सब देखहु मन कर फांसी ॥
संत द्रोह अरु गुरु की निंदा। यह मन कर्म काल मतिफंदा ॥
ग्रही होय पर नारिन जोवे। यह मन अंध कर्म बिस बोवे ॥
जीव घात मन उमङ्ग करावे। तासु पाप जिव नर्क भुगावे ॥

तीरथ ब्रत अरु देवी देवा। यह मन धोख लगावे सेवा ॥
दाग द्वारका मनहिं दिवावे। दाग दिवाय मनहि बिगरावे ॥
एक जनम राजा को होई। बहुरि नर्क में भुगते सोई ॥
बहुरि होय सढिकर औतारा। बहु गाइन को होय भरतारा ॥
कर्म योग है मनको फंदा। होय निहकर्म मिटै दुख द्वन्दा ॥
छन्द—सुनो धर्मनि मन भावना कहँ लो कहों निरवार के ॥
त्रय देव तेत्तिस कोट फंदे सेस सुर रहे हारके ॥
सतगुरु बिना कोइ लखु न पावे बड़े कृत्रिम जाल हो ॥
बिरल संत बिवेक कर तिन चीन्हि छोड्यो काल हो ॥८५॥
सोरठा—सतगुरु के विश्वास, जन्म मरन भय नासई ॥
धर्मनि सो निज दास, सत्य नाम जो दृढ़ गहै ॥८६॥

॥ काल चरित्र ॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

मनका अग जान हम पावा। धन सतगुरु तुम आन जगावा ॥
हे प्रभु काल चरित्र सुनाई। कृस्न छले सब जीवन आई ॥
अर्जुन, गीता कथा सुनावा। कहि निवृति प्रवृति दृढ़ावा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

काल चरित्त सुनो धर्मदासा। छल बुद्धि कर जीवन तिन फाँसा ॥
धरि औतार कथा जिन गीता। अन्य जीव कोई गम्यन कीता ॥
अर्जुन सेवक अति लौ लीना। तासों ज्ञान कह्यो सब भीना ॥
ज्ञान प्रवृत्ति निवृत्ति सुनावा। तज निवृत्ति परवृत्ति दृढावा ॥
दया छमा प्रथमै तिन भाखा। ज्ञान विज्ञान कर्म अभिलाखा ॥
अर्जुन सत्य भक्ति लवलीना। कृष्न देव सौ बहुत अधीना ॥
प्रथम कृश्न दीन्हीं तेहि आसा। पीछे दीन्ह नर्क में वासा ॥
ज्ञान योग तजि कर्म दृढ़ावा। कर्म बसि अर्जुन दुख पावा ॥
मीठ दिखाय दियो विष पाछे। जिव बटपार संत छवि काछे ॥
छन्द—कहँ लों कहों छल बुद्धि यम के सत कोइ कोइ परखिहैं ॥
ज्ञान मारग दृढ़ गहे तब सत्य मारग सूझि है ॥
चीन्हि है यम छल मता तब चीन्हि न्यारा हो रहे ॥
सतगुरु सरन यम त्रास नासे अटल सुख आनँद लहे ॥८६॥
सोरठा—हंसराज धर्मदास, तुम सतगुरु महिमा लहो ॥
करहु पंथ परकास, अब सँदेसा तोहि दियौ ॥८७॥

|| पंथभाव वर्णन ||

|| धर्मदास वचन चौपाई ||

हे प्रभु तुम सतपुरुस दयाला । वचन तुम्हार अमित रसाला ॥
अब भाखो प्रभु आपन डोरी । केहि रहनी यम तिनका तोरी ॥
पंथ भाव भाखो मोहि पासा । वैरागी ग्रेही परगासा ॥
कौन रहन वैराग कमावे । कौन रहन ग्रेही गुन गावे ॥

|| सतगुरु वचन ||

धर्मदास सुनु पुरुष परभाऊ । पुरुखे डोरतोहि अबहि चिन्हाऊ ॥
पुरुस सत्य जब आय समाई । तब नहिं रोके काल कसाई ॥
बिना मंत नहिं पंथ चलायी । सत्य हीन जीव भौ अरुझायी ॥
ज्ञानी विवेक सत्य संतोखा । प्रेम भाव धीरज निःसोखा ॥
इन मिली लहे लोक विश्रामा । चले पंथ निरखि जेहि धामा ॥
गुरु सेवा गुरु पद परतीती । जेहि उर बसे चले जम जीती ॥
आतम पूजा संत समागम । महिमा संत कहइ निज आगम ॥
गुरु सम संत भक्ति औराधे । महिमा मोह क्रोध गुन साधे ॥
अमृत वृक्ष पुरुस सतनामा । पुरुस सखा सत अविचल धामा ॥
सत्य नाम गहिसत्य पुजायी । यह सब डोरी पुरुस को आयी ॥
चक्षु हीन घरजाय न मानो । यह सब कहेउ पंथ सहिदानी ॥
पुरुस नाम चक्षु तरवाना । लेहि जीव तब जायँ ठिकाना ॥
दृढ़ परतीत गहे गुरु चरना । मिटे तासु जनम औ मरना ॥
धर्मदास सुनु सब्द सँदेसा । घट परचेका कहुँ उपदेसा ॥
अब तुम सुनहु सरीर विचारा । एक नाम गहि धरहु करारा ॥
सेवा कूर्म तन रुधिर संचारा । कोट रोम तन पृथ्वी सुधारा ॥
नाड़ी बहत्तर है परधाना । नौ महँ तीन प्रधान सुजाना ॥
त्रय नाड़ी महँ एक अनूपा । सो ले रहे गहे सतरूपा ॥
बतीस पत्र पदुम जो आही । बैठ्यो सब्द प्रकट गुन ताही ॥
तहँ वाते पुनि सब्द उठायी । शून्य माहिं गये सब्द समायी ॥
आंत इकईस हाथ परमाना । सवा हाथ झोरी अनुमाना ॥
सवा हाथ नभ फेरी कहिये । खिरकी सात गुफा मों लहिये ॥

छंद—पित्त अंगुली तीन जानो पाँच अंगुल दिल कही ॥
सात अंगुल फेफसा है मिन्नु सात तहा रही ॥
पवन धर निवार तन सो साधु योगी गम लहे ॥
यही कर्म योग क्रियेरहित नाहीं भगतिबिनु जोइन बहे ॥८७॥

सोरठा—ज्ञान योग सुखरासि, नाम लहे निज घर चले ॥
और परबल को नासि, जीवन मुक्ता होय रहै ॥८८॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास सुन सब्द सँदेसा । जीवन कह मुक्ति उपदेसा ॥
वैरागी वैराग दिढ़ेहो । गेही भाव भक्ति समझैहो ॥

॥ वैरागीलक्षण ॥

वैरागी अस चाल बताऊ । तजै अखज तब हंस कहाऊ ॥
प्रेम भक्ति आने दिल माहीं । द्रोह घात दृग चितवे नाहीं ॥
लेवे पान मुक्ति की छापा । जाते मिटे कर्म भ्रम आपा ॥
इस दसा धरि पथ चलावे । श्रवनी कंठी तिलक लगावे ॥
रूखा फीका करे अहारा । निस दिन सुमिरे नाम हमारा ॥
औ पुनि लेइ तुम्हारो नामा । पठवों ताहि अमर पुर धामा ॥
कर्म भर्म सब देव बहायी । सार सब्द में रहे समायी ॥
नारि न परसे बिंद न खोवै । क्रोध कपट सब दिल से धोवै ॥
नरक खान नारी कहँ त्यागे । इक चित होय सब्द गुरु लागे ॥
क्रोध कपट सब देह बहाई । क्षमा गंग में पैठि नहाई ॥
बिहँसत वदन भजन को आगर । सीतल दसा प्रेम सुख सागर ॥
गुरु चरनन में रहे समाई । तजि भ्रम और कपट चतुराई ॥
गुरु आज्ञा जो निरखत रहई । ताकर खूट काल नहिं गहई ॥
गुरु प्रतीत दृढ़कै चित राखे । मोहि समान गुरु कहँ भाखे ॥
गुरु सेवा में सब फल आवे । गुरु विमुख नर पार न पावे ॥
जैसे चंद्र कमोदनि रीती । गहे सिस्य अस गुरु परतीती ॥
ऐसी रहनि रहे वैरागी । जेहिगुरु प्रीति सोई अनुरागी ॥

॥ गृही लक्षण ॥

गेही भक्ति सुनहु धर्मदासा । जोहि लै ग्रेही परै न फांसा ॥
काग दसा सब देइ बहाई । जीव दया दिल रखे समाई ॥
मीन मांस मद निकट न जाई । अंकुर भक्ष सों सदा कराई ॥
प्रेम भाव संतन सो राखे । सेवा सत्य भक्ति चित भाखे ॥
गुरु सेवा पर सर्वस वारे । सेवा भक्ति गुरु की धारे ॥
सुमिरन जो गुरु देय दृढ़ाई । मन वच करम सो सुमरे भाई ॥
लेवे पान मुक्ति सहिदानी । जाते काल न रोकै आनी ॥

छन्द—पुरुस डोरी सुनहु धर्मनि जाहि ते ग्रही तरे ॥
चक्षु विन घर जाय नाहीं कौन विधि ताकर करे ॥
वंस अंस चक्षु धर्मनि जीव सब चेतावहू ॥
विश्वास कर ममवचन को तब जरा मरण नसावहू ॥८८॥
सोरठा—सद गहे परतीती, पुरुस नाम अहनिसि जपें ॥
चले सो भव जल जीति, अंक नाम जिन पाइया ॥८९॥

॥ आरती महातम ॥

॥ चौपाई ॥

ग्रेही भक्त आरती आने । प्रति अमावस आरति ठाने ॥
अमावस आरति नहीं होई । ताहि भवन रह काल समाई ॥
पाख दिवस नहिं होवे साजू । प्रति पूनो कर आरति काजू ॥
पूनो पान लेइ धर्मदासा । पावे सिस्य होय सुख वासा ॥
चंद्र कला खोड़स पुर आवे । ताहि समय परवाना पावे ॥
यथा सक्ति सेवा सहिदाना । हंसा पहुँचे लोक ठिकाना ॥

॥ धर्मदास वचन ॥

धर्मदास विनती अनुसारा । असभाखो जिवहोय उवारा ॥
कलिऊ जीव रंक वहु होई । ताकर निर्नय भाखो सोई ॥
सकलो जीव तुम्हारे देवा । कैसे कहों करें सब सेवा ॥
सब जिव आहिं पुरुष के अंसा । भाखहु वचन मिटे जिव संसा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मनि सुनो रंक परभाऊ । छठये मास आरति लौलाऊ ॥
छठेमास नहीं आरति भेवा । वर्ष माहिं गुरु चौका सेवा ॥
सम्वत मांहि चूक जो जायी । तबै संत साकट ठहरायी ॥
सम्वत मांहि आरती करई । ताकर जीव धोख ना परई ॥
नाम कबीर जपे लौ लाई । तुम्हरो नाम कहे गुहराई ॥
मन अखंडित गुरु पद गहई । गुरु पद प्रीति होई निस्तरिई ॥
ऐसी रहनि ग्रहि जो धरि है । गुरु प्रताप होई निस्तरई है ॥
ऐसे धारन गेही जो करई । गुरु प्रताप लोक सचरई ॥

छन्द—वैरागि ग्रेहि दोइ धर्मनि रहनि गहनि निनायेहू ॥
रहें रहनी दोइ तरि हैं सब्द अंग सुनायेहू ॥
निपट असि विकराल अगम अथाह भवसागर अहै ॥
नाम नौका गहे दृढ़ करि छोर भव निधि तब लहै ॥८९॥

सोरठा—केवट ते कर प्रीति, जो भव पार उतारई ॥
चले सो भव जल जीति, जब सतगुरु केवट मिले ॥९०॥

॥ हंस लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

जब लग तन में हंस रहाई। निरखे सब्द चले पथ भाई ॥
जैसे सूर खेत रह मांही। जो भागे तो होवे भाड़ी ॥
संत खेत गुरु सब्द अमोला। यम तेहि गहे जीव जो डोला ॥
गुरुबिमुख जिव कतहु न बाचै। अगिन कुण्ड महँ जरि बरि नाचै ॥
सासति होय अनेकन भाई। जनम जनम सो नर्कहि जाई ॥
कोटि जन्म बिसधर सो पावे। विस ज्वाला सहि जन्म गमावे ॥
विष्टा माहीं क्रिमितनु धरयी। कोटि जन्म लों नर्कहि परयी ॥
कहा कहों सासति जिव केरा। गुरुमुख सब्द गहो दृढ़बेरा ॥
गुरु दयाल तो पुरुस दयाला। जेहि गुरु ब्रत छुए नहि काला ॥
जीव कहों परमारथ जानी। जो गुरु भक्त ताहि नहिं हानी ॥
कोटिक योग अराधे प्रानी। सतगुरु बिना जीव की हानी ॥
सतगुरु अगमगम्य बतलावे। जाकी गम्य बेद नहिं पावे ॥
बेद जाति ते ताहिं बखाने। सत्य पुरुस का मर्म न जाने ॥
कोइ इक हंस विवेकी होवे। सत्य सब्द जो गहे बिलोवे ॥
कोटि माहिं कोइ सत विवेकी। जो मम बानी गहे परेखी ॥
फंदे सबै निरञ्जन फंदा। उलटि न निज घर चीन्हे मंदा ॥

॥कोयल का दृष्टान्त ॥

सुनो सुभाव कुइल सुत केरा। समुझिवासु गुन करो निबेरा ॥
कोइल चित चातुर मृदुबानी। बैरी तासु काग अघखानी ॥
ताके ग्रह तिन अंडा धरिया। दुष्ट मित्र इक समचित करिया ॥
सखा जानि काग तेहि पाला। जोगवे अंड काग बुधि काला ॥
सुनत सब्द कोइल सुत जागा। निजकुल बचन ताहि प्रियलागा ॥
काग जाय पुनि जबहि चरावै। तब कोइल तिहि सब्द सुनावै ॥
निज अंकुर कोइल सुत जहिया। वायस दिसा हिये नहि रहिया ॥
एक दिवस वायस दिखलाई। कोइल सुत उड़ चला पराई ॥

छन्द—निज वचन बोलत सुत चले तब धाय मिला परिवारही ॥
धाय वायस बिकल ह्वै भयो थकित जब नहिं पावही ॥

काग मुर्छित भवन आयो मनहिं मन पछतायके ॥
कोइल सुत मिलि तात अपने काग रह्यो भख मारिके ॥९०॥

सोरठा—जस कोयल सुतहोय, यहि विधि मो कहँ जिव मिले ॥
निज घर पहुँचे सोय, वंस इकोतर तारऊ ॥९१॥

॥ चौपाई ॥

काग गवन बुधि छाड़हु भाई। हंस दसा धरि लोकहि जाई ॥
बोले काग न काहू भावे। कोइल वचन सबै सुख पावे ॥
अस हंसा बोले बिलछानी। प्रेम सुधा सम गहु गुरु बानी ॥
काहू कुटिल वचन नहिं कहिये। सीतल दसा आप गहिरहिये ॥
जो कोइ क्रोध अनल सम आवे। आप अंबु है तपन बुझावे ॥
ज्ञान अज्ञान की यहि सहिदानी। कुटिल कठोर कुमति अज्ञानी ॥
प्रेम भाव सीतल गुरुज्ञानी। सत्य विवेक संतोस समानी ॥
ज्ञानी सोइ जो कुबुद्धि नसावे। मनका अंग चीन्ह बिसरावे ॥
ज्ञानी होय कहै कटुबानी। सो ज्ञानी अज्ञान बखानी ॥
सूर काछ काछे जो मानी। सन्मुख मेरे सुयस तब जानी ॥
तेहि बिधि ज्ञानी विचार मन आनी। ता कहँ कहु ज्ञान सहिदानी ॥
दृगन अछत पग परै कुठांई। ता कहँ दोस देइ नर आई ॥
धर्मदास अस ज्ञान अज्ञाना। परख सत्य सब्द गुरु ध्याना ॥
सर्व मई है आप निवासा। कहीं गुप्त कहिं प्रगट प्रगासा ॥
सबसे नवन अंस निज जानी। गही रहे गुरु भक्ति निसानी ॥

छन्द—रंग काचा कारने प्रहलाद कस दृढ़ ह्वै रह्यो ॥
ताते तेहि बहु कष्ट दीन्हों अडिग हो हरि गुन गह्यो ॥
अस धारनि धरि सतगुरु गहे तब हंस होय अमोल हो ॥
अमर लोक निवास पावे अटल होय अडोल हो ॥९१॥

॥ परमार्थ वर्णन ॥

सोरठा—भर्म तजे यम जाल सत्तनाम लौ लावई ॥
चले संत का चाल, परमारथ चित दे गहे ॥९२॥

॥ चौपाई ॥

गऊ वृक्ष परमारथ खानी। गऊ चाल गुन परखहु ज्ञानी ॥
आन चरे तृन उद्याना। अँचवे जलदे छीर निदाना ॥
तासु छीर घृत देव अघाहीं। गौ सुत परके पोसक आहीं ॥
विष्टा तासु काज नर आवे। नर अघ कर्मी जन्म गँवावे ॥

ठीका पुरे तब गौ तन नासा। नर राछस तन ले तेहि ग्रासा ॥
चाम तासु तन अति सुखदाई। एतिक गुन इक गौ तन भाई ॥
गौ सम संत गहे यह बानी। तो नहिं काल करे जिव हानी ॥
नर तन लहि अस बुद्धी होई। सतगुरु मिले अमर ह्वै सोई ॥
सुनु धर्मनि परमारथ बानी। परमारथ ते होय न हानी ॥
पद परमारथ संत अधारा। गुरु गम लेइ सो उतरे पारा ॥
सत्य सब्द को परिचय पावे। परमारथ पद लोक सिधावे ॥
सेवा करे बिसारे आपा। आपा थाप अधिक संतापा ॥
यह नर असचातुर बुधिमाना। गुन सुभ कर्म कहे हम ठाना ॥
ऊंच क्रिया आपन सिर लीन्हा। औगुन करे कहे हरि कीन्हा ॥
ताते होय सुभ कर्म बिनासा। धर्मदास पद गहो निरासा ॥
आसा एक नामकी राखे। निज सुभ कर्म प्रगट नहिं भाखे ॥
गुरु पद रहे सदा लौ लीना। जैसे जलहि न बिहरत मीना ॥
गुरु के सब्द सदा लौ लावे। सत्य नाम निस दिन गुन गावे ॥
जैसे जलहि न बिसरे मीना। ऐसे सब्द गहे परबीना ॥
पुरुस नामको अस परभाऊ। हंसा बहुरि न जगमहँ आऊ ॥
निस्चय जाय पुरुस के पासा। कूर्म कला परखहु धर्मदासा ॥

छन्द—जिमि कमठ बाल स्वभावतिमि मम हंस निजघर आवयी ॥
यमदूत हो बलहीन देखत हंस निकट न आवयी ॥
हंस निर्भय निडर गाजहि सत्य नाम उचारई ॥
हंस मिलि परिवार निज यमदूत सब झख मारई ॥९२॥

सोरठा—आनंद धाम अमोल, हंस तहां सुख विलसहीं ॥
हंसहि हंस कलोल, पुरुस कान्ति छबि निरखहीं ॥९३॥

छन्द—अनुराग सागर ग्रंथ कथि तोहि अगम गम्य लखाइया ॥
पुरुस लीला काल को छल सबै बरकि सुनाइया ॥
रहनि गहनि विवेक बानी जौहरी जन बूझिहैं ॥
परखि बानी जो गहे तेहि अगम मारग सूझिहैं ॥

सोरठा—सतगुरु पद परतीति, निसचय नाम सुभक्ति दृढ़ ॥
संत सती की रीति, पिय कारन निज तन दहे ॥९३॥

सतगुरु पीय अमान, अजर अमर विनसे नहीं ॥
कहौ सब्द परमान, गहे अमर सो अमर हो ॥९४॥

संत धरे तिहि आस, जीव अमरहि तहां ॥
चित चेतो धर्मदास, सतगुरु चरनन लीन रहु ॥९५॥
मन अलि कमल बसाव, सतगुरु पद पंकज रुचिर ॥
गुरु चरनन चित लाव, अस्थिर घर तबहीं मिले ॥९६॥
सब्द सुरति करु मेल, सब्द मिले सतगुरु चले ॥
बुन्द सिन्धु का खेल, मिले दूजा कोइ कहे ॥९७॥
सब्द सुरति का खेल, सतगुरु मिले लखावई ॥
सिन्धु बुन्द को मेल, मिलै न दूजा कोइ कहै ॥९८॥
मन को दसा बिहाय, गुरु मारग निरखत चले ॥
हंस लोक कहँ जाय, सुख सागर सुख सो लहे ॥९९॥
बुन्द जीव अनुमान, सिन्धु नाम सतगुरु सही ॥
कहैं कबीर प्रधान, धर्मदास तुम बूझहू ॥१००॥

इति श्री अनुराग सागर विवेक ज्ञान का देसते अपर अलख
नाम सारांसकथन वाणी श्री कबीर साहेब की

॥ समाप्त ॥

हिन्दी पुस्तक माला का सूचीपत्र

संतबानी पुस्तकमाला का सूचीपत्र पीछे देखिये

काव्य-निर्णय	१॥)
रामचरित मानस	२५)
अयोध्या काण्ड	२)
आरण्य काण्ड	१)
सुन्दर काण्ड	१)
उत्तर काण्ड	१)
गुटका रामायण	१॥)
तुलसी ग्रन्थावली	६)
श्रीमद् भागवत	॥।)
सचित्र हिन्दी महाभारत	५)
विनय पत्रिका	६)
विनय कोश	४)
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास	।=)
कवित्त रामायण	।=)
हनूमान बाहुक	–)॥
सुमनोञ्जलि तीनों खण्ड (सुनहरी जिल्द सहित)	२)
सिद्धि	॥)
प्रेम परिणाम	।।)
सावित्री और गायत्री	।॥)
कर्मफल	॥।)
महाराणी शशिप्रभा देवी	१।)
द्रौपदी	।॥)
नल-दमयन्ती	॥।)
भारत के वीर पुरुष	२)
प्रेम-तपस्या	॥)
करुणादेवी	॥।)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (सचित्र)	।।)
सदेह (सजिल्द)	१।)
नरेन्द्र भूषण	१)
युद्ध की कहानियां	।=)
गल्प पुष्पाञ्जलि	।॥)
दुख का मीठा फल	१)
नव कुसुम (प्रथम भाग)	॥।)
,, (द्वितीय ,,)	।॥)

नाट्य पुस्तक माला—

पृथ्वीराज चौहान
समाज चित्र
भक्त प्रह्लाद

बाल पुस्तक माला—

सचित्र बाल शिक्षा (प्र० भा०)
,, ,, (द्वि० ,,)
,, ,, (तृ० ,,)
दो वीर बालक
घोंघा गुरू की कथा
बाल विहार (सचित्र)
हिन्दी कवितावली
,, साहित्य प्रदीप
सती सीता
स्वदेश गान (प्र० भा०
,, (द्वि० ,,
,, (तृ० ,,

संस्कृत पुस्तक माला—

पुरुष परीक्षा (शुद्ध सशोधित)
भोज प्रबन्ध (,, ,,)
ब्राह्मण संग्रह
दश कुमार चरित्र (अष्ट-सर्ग, आलोचना
गुप्त वंशीय राजाओं के शिलालेख
हितोपदेश, नलोपाख्यान तथा महाभारत

भक्ति पुस्तक माला—

ज्ञान रत्न माला

चित्र माला—(Albur

प्रथम भाग
द्वितीय ,,
तृतीय ,,
चतुर्थ ,,
चारों भाग एक साथ लेने से

'मनोरमा' सीरीज़

उलझी लड़ियाँ (कहानी संग्रह)
प्रवाह (उपन्यास)
चक्षु-दान ,,

पुस्तकें मँगाने का पता—मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं—

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते, झूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर विलास
पलटू साहिब भाग १ कुंडलियाँ। भाग २ रेख़ते, झूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ
जगजीवन साहब—२ भागों मे
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों में
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेजी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ मे नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इस कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या खर्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।